छियानत

छियानत

(कथा संग्रह)

तारानन्द वियोगी

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-88799-00-0
छियानत

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2020

मूल्य : 280.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन : 0120-2648212, 0-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : विनय अंबर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

CHHIYANAT (A Collection of Maithili short stories) by Taranand Viyogi
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 280.00

भूमिका

हमर पहिल कथा-संग्रह 'अतिक्रमण' 1997 मे छपल छल। ठीक ओहि दौर के बीचोबीच, जखन हम कथा-लेखन मे सक्रिय रही। ई दौर 1999 धरि चलल। तकर बाद हम आन-आन काज मे लागि गेलहुँ। 2000 वा तकर बाद जतय कतहु हमर कथा छपबो कएल, ओ 2000 सँ पहिनेक लिखल छल।

हम आभारी छी मैथिलीक आलोचक लोकनिक, खास क' डॉ ? भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज, अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवासक प्रति, जे कथा-लेखन सँ हमर विरतिक अछैतो ई लोकनि ओहि वस्तु आ कहन के लेल हमर कथा सब केँ ने केवल मोन रखलनि, बेस मानि देलनि, अपितु ओहि कालावधिक रेखांकनीय कथा-लेखन मे किछु गनल-गुथल नाम सब मे सँ एक अनिवार्य नाम हमरो बतौलनि। हम ओहि संचयन-संपादक लोकनिक प्रति सेहो आभारी छी जे बिना कोनो संग्रहोक ओ लोकनि एहि कथा सब केँ एते काजक बुझलनि जे अपन संकलनि सब मे एकरा शामिल करैत रहला। ई संग्रह जे आब प्रकाशित भ' रहल अछि, अहाँ केँ आश्चर्य लागत एहि महक अधिकांश कथा कोनो-ने-कोनो सामूहिक संकलन मे पहिनहि सँ शामिल छैक। आ एतबे नहि, अधिकांश कथाक भाषेतर मे अनुवाद सेहो प्रकाशित छैक, आ ताहि अनुवादक पहल सुभाष चन्द्र यादव, हरे कृष्ण झा, देवशंकर नवीन, अविनाश, अजित आजाद, भैरवेश्वर झा—सन गणमान्य लोक सब कयने छथि। हम हिनका सभक प्रति आभारी छी।

कथा लिखब किएक बंद भेल, तकर दूटा कारण छै। पहिल तँ हमर अपने लेखन-स्वभाव। चालीस वर्ष सँ मैथिली लेखन मे सक्रिय छी आ एहि बीच जानि नहि कतेको फेज केँ पार क' आएल छी। एक समय छल जखन खाली गजल लिखी। तहिना लघुकथाक एक समय रहल। तहिना कथाक। एक समय एहन रहल जखन मिथिलाक क्षेत्रीय इतिहास-लेखन मे लागल रहलहुँ। तखन आलोचना। आदि-आदि। आगू हमर लेखन कोन मोड़ लेत, हम अपनहु नहि जनैत छी। हमर सोचब अछि जे सामाजिक सरोकारक बिना कएल गेल लेखनक कोनो मूल्य नहि अछि।

लेखन अनिवार्यत: अपन सामाजिक दायित्वक-पूर्तिक साधन थिक। आन-आन लोक आन-आन तरहें अपन दायित्व निम्हबैत छथि, हम जें कि लेखने क' सकै छी, तें लिखैत छी। रुचि आ योग्यता तँ अवश्य हमरे रहैछ, मुदा तें हम ई कहि दी जे अपन लेखनक जाबन्तो कारण हम अपनहि छी, से कहब ने तँ उचित थिक ने संभव।

दोसर कारण भेल आलोचनाक क्षेत्र मे हमर उत्तरोत्तर सक्रियता। हम कोनो पेशेवर आलोचक ने कहियो रही, ने छी। तखन आलोचना दिस ढुकलहुँ किएक? हम अपन शब्द मे अपन बात कही ताहि सँ कतहु नीक एकटा प्रसंग हमरा मोन पड़ि रहल अछि। हिन्दीक एक आलोचक रहथि किशोरीदास वाजपेयी। एक बेर एहने प्रश्न उपस्थित भेला पर ओ एक कवित्त सुनौने रहथिन। ओहि कवित्तक मैथिली अनुवाद हम अहाँ के सुनबैत छी—'सोचलहुँ हम जे उष:काल मे माँ के भवन सजाबी/अभिनव अर्थ उपार्जित क' क' हमहूँ भेंट चढ़ाबी/किन्तु, भक्त-पद-प्रक्षेपण सँ धूलि बहुत भरि आयल/छी बहारि रहलहुँ तहिये सँ एहिना उमर गमाओल।' तँ, से सैह। संपादको लोकनि केहन जे सब दिन हमर अलोचनेक खगता हुनका सब कें बनल रहलनि।

बीस वर्षक नमहर अवधि एहि बीच बीति चुकल अछि। हमर कथा-संग्रह किएक नहि आबि सकल? पाँच बरस सँ तँ रघुनाथ (मुखिया) एकरा सब कें टाइप क' क' अपना सिस्टम मे रखने छलाह। आबो जँ प्रकाशित भ' पाबि रहल अछि तँ तकर एकमात्र श्रेय हमर अभिन्न केदार (कानन) कें छनि जे एक तरहें बलजुमरी एकरा प्रेसक मुँह मे ढकेलि रहला अछि।

एहि कथा सभक पृष्ठभूमि पर थोड़े गप करब सेहो जरूरी बुझाइत अछि। जेना कि हम पहिनहु कहलहुँ, ई कथा सब 1997 सँ 1999क बीचक लिखल थिक। मने कि ओहि समयक, जखन बीसम शताब्दी अपन आखिरी साँस ल' रहल छल।

जे लोकनि एकैसम सदीक एहि बदलल-बदलल जबाना मे जुआन भेला अछि, हुनका एहि बातक अनुमानो धरि नहि हेतनि जे ओ सहस्राब्दी जे बीतल छल से कोना बीतल छल, आ एक नव सहस्राब्दी मे प्रवेश करबाक जे हूलिमालि सौंसे संसार मे पसरल छल, आ ताहि मे भारतो ककरो सँ कम नहि छल, से कोना पसरल छल। जे लोकनि एकैसम शताब्दिए मे आबि क' जन्म लेलनि, तिनकर तँ कोनो बाते नहि हो। मोन पड़ैए जे वर्ष 1986ये सँ एहि विश्वव्यापी महोत्सवक तैयारी शुरू भ' गेल छल। भारत-सन देश, जकर काल-मान के अपन फराक विकसित शास्त्र रहलैक अछि, आ तहियो एहन लोक कम नहि छला जे भारत कें दबल कंठ सँ 'विश्वगुरु' दावा करथि, इसाई-काल-मान के एहि विश्वव्यापी वर्चस्व पर आपत्ति भ' सकैत छलैक। मुदा, देखल गेल जे कदाचित पहिले बेर एहन भेलैक जे बौद्धिक नियंत्रण वैज्ञानिक, राजनेता, धर्मगुरु आदिक हाथ सँ बहरा क' बनियाँ-बैकाल धनपशुक हाथ मे चलि गेल। मोन पड़ैत अछि जे ग्लोबल आ कारपोरेट आदि जातिक शब्द एही दौरक उत्पादन थिक। एखन जे हमरा लोकनि महान महान करेजगर राष्ट्राध्यक्ष लोकनि कें बनियाँ लोकनिक जेबीक शोभा बढ़बैत देखैत छिऐक, तकर एक प्रसंग मोन पड़ैत अछि। यूरोपीय चर्च सभक सर्वोच्च धर्मगुरु लोकनिक बीच प्राय: एक दशक सँ ई धमर्थनक विषय बनल छल जे तेसर सहस्राब्दीक पहिल दिन कहिया मनाओल जेबाक चाही—1 जनवरी 2000 कें आ कि 1 जनवरी 2001 कें? बहुमत 2001 के पक्ष मे छलैक। एतय धरि जे कैम्ब्रिज के रायल ग्रीनविच आब्जर्वेटरी सेहो अपन निर्णय 2001 के पक्ष मे देलकैक। मुदा? क्यो नहि मानलक। ने धर्मक चललैक, ने विज्ञानेक। किएक नहि चललैक? संसारक जतेक महग-महग होटल, शराबखाना, सैरगाह छल सभक सब बरसो बरस पहिनहि सँ एक जनवरी 2000क लेल बुक छल। अरबो खरब डालर के शराब आ कि एहने सन ऐश-मौजक उत्पाद दिनराति कारखाना चालू राखि क' बरसो बरस सँ तैयार भ' रहल छल। ठीक बारह बजे राति मे धरती सँ ऊपर अंतरिक्ष मे एहि जश्न कें मनाओल जाय ताहि लेल संसारक समस्त एयरलाइन के सबटा सीट बहुत पहिनहि सँ बुक क' लेल गेल छल। सब सँ आक्रामक तँ ई छल जे दुनियाँक लाखो स्त्री, मानू काल कें जीति लेबाक लेल, तेसर सहस्राब्दीक प्रथम क्षण मे अपन प्रसव प्रायोजित कयने छलि, जानि नहि कते समय देरी सँ कि कते समय पहिनहि ओहि शिशु कें एहि पृथ्वी परहक पहिल श्वास महग-महग दाम मे कीनल गेल छल। चिन्तक-विचारक लोकनि हतवाक भ' क' ओहि उत्सव कें देखि रहल छलाह। एहन कड़गर चुनौती प्रकृति कें एहि सँ पहिने कहियो नहि देल छलैक। मुदा, एहि सभक बीच मिथिला कतय छल? 1999 मे हम अपन कविता 'बाभनक गाम' लिखने रही, जकर समापन एहि पाँती सँ होइत छल—'पधरि रहल अछि/गरदम गोल मचैने/एकैसम शताब्दी/आ, कानैए बाभनक गाम।' मुदा, देखल गेल जे हमरो लोकनिक कानब बहुत जल्दिये बंद भ' गेल छल आ हमहूँ सब एहि जगतव्यापी पूँजीसाधक भोगोत्सव मे शामिल भ' गेल रही। आइ के विश्वास करत जे बस बीसे बरस पहिने एहि धरती पर ओ समय बितैत रहैक? ठीके, लगैए जेना ओ बहुत पछिला कोनो शताब्दीक बात रहैक। इट्टाक जवाब पाथर सँ दैत ई विश्वव्यापी कोरोना यदि आएल नहि रहतै तँ कहब मश्किल अछि जे प्रकृति पर बनियाँ-बैकालक सर्वसत्ता-प्रभुत्व पर ठमकि क' सोचबो लेल क्यो तैयार होइत। सुयोग कही कि दुर्योग, प्रकृति कें देल गेल ओहि चुनौतीक जवाब आएल अछि, आ हमरा लोकनि-सोचबा लेल तैयार भेल छी, आ हमर ई बिसरल-बिसराएल कथा-संग्रहो प्रकाशित

भ' रहल अछि।

कहबे केलहुँ जे एहि संग्रहक कथा सब 1997-99 के लिखल थिक, तें आइ जे युग हमरा सभक आँखिक सोझा अछि, एहि सँ ठीक पहिनेक मिथिलाक खिस्सा सब एहि ठाम अहाँ केँ देखार पड़त। मुक्तबजार कोना घर-घर ढुकि रहल छले, कोना लोकल नहुँ-नहुँ ग्लोबल दिस बढ़ल चलि जाइत छल, कोना मूल्यक स्थान पर मात्र देखाँउस आ भाभट के मान बढ़ल जाइत रहै, कोना देखावटी रूप नग्न भ' क' सामने आबय लागल छल, आधुनिको युगक बचल-खुचल मर्यादा मटियामेट होयबा पर छल, युग-युग सँ सुषुप्त सामंतवाद के निन्न टुटय लागल रहैक, आदि-आदि। अपन जे ई भारत आजाद छल, जननिहार जनैत छथि जे कते भीषण संघर्ष आ कते उच्च आदर्शक संग दशको-दशक धरि लड़ल गेल संग्रामक बदौलत से भेल छल, बलिदानी लोकनि अपन सोचल-समझल आदर्श लेल बलिदान देने छलाह, ने कि अविकसित बालक सब जकाँ ककरो हुलौला पर। ओ आदर्श आइ जकाँ साफ मृत ताधरि नहि भेल रहै। राजनीति तँ भटकि चुकल छल पूरा, लेकिन एहि ठामक समाज केँ नेता सब तहिया धरि पूरापूरी बरबाद नहि क' सकल छल। तें प्रतिरोध बचल रहैक। मुदा नेतो सब एकरा साफ बरबाद क' देबा लेल दिन-राति एक कयने छल। धर्म अपना धार्मिकता सँ आ अध्यात्म अपन आध्यात्मिकता सँ दूर तँ तहियो भ' गेल रहय, मुदा आइ जकाँ घुरि लौटबाक संभावना सँ साफ शून्य नहि भेल छल। समाज दलदल मे धँसल जा रहल छल मुदा एते नायकविहीन नहि भेल छल जे पैरुख हारि दियय। ई सब बात एहि संग्रहक कथा सब मे आएल अछि जे अहाँ केँ देखार पड़त।

कथा अपना समयक इतिहास होइत अछि आ कि नहि, अथवा कथाक अध्ययन इतिहास जकाँ कयल जा सकैत अछि कि नहि, एहि बात पर विवाद भ' सकैत अछि। जखन कि एहू बातक माननिहार कहियो कम नहि रहला अछि जे कोनहु समयक सही-सही इतिहास ओहि कालक कथा-साहित्ये (उपन्यास-समेत) बता सकैत अछि। कथा मे दूटा बातक विशेष महत्व होइछ...कथा-देश आ कथा-समय। तेसर चीज जे महत्वक होइछ से थिक कथा-भाषा। एहि सभक बदौलत हम सब बूझि सकैत छी जे आन सब इलाका जकाँ मिथिलो मे समय कहियो एकायामी नहि रहल अछि, आ ने मिथिले कहियो ओतबी टा रहल अछि जतबा आचार्य लोकनि मानैत रहला। एकर बादो, मैथिली मे ढेरो कथा लिखल गेल जाहि मे 'देश' आ 'समय' अनुपस्थित रहलैक। सुरुहे सँ हमर कथाक स्वभाव रहल जे स्पष्ट देश, समय आ भाषाक विना एकर लिखल जायब कहियो संभवे नहि भेल। एकरा हमर सीमा मानल जा सकैत अछि। से मानलो गेल अछि। हमर कोनो कथा केँ पढ़ि एक बेर जीवकान्त लिखने छला—'तारानन्द वियोगीक कथा मे एसीडक नदी बहैत अछि। ओकर जल ल' क' छिज्जा मारू तँ चेहराक चाम गलि-गलि क' खसत। हमर कथा सब पर घमर्थन आ विवाद बहुत भेल अछि, तकर स्मरण ओहि मित्र लोकनि केँ हेतनि जे कथा-गोष्ठी सब मे एकर पाठ आ ओहि पर भेल चर्चा सुनलनि अछि। तकर कारण हम बुझैत छी, ई रहल जे हम अधिकतर निर्माणाधीन सामाजिक यथार्थ केँ अपन विषय बनाओल। एहि बारे मे हम कतहु-कतहु लिखनहु छी।

कथालेखन मे इतिहासक परवाह कयल जाइ कि नहि, एहि पर मतान्तर भ' सकैए, मुदा एहि बात पर मतान्तरक कोनो गुंजाइस नहि अछि जे आजुक समय, बीतल समयक नेओ पर ठाढ़ अछि। अपन समाज एहन समाज थिक जतय कैक कैक शताब्दी संग-संग चलैत रहैत अछि। ई ठीक भेल अछि कि गलत, प्रश्न एकर नहि छैक, प्रश्न छै जे एहि विक्षोभ केँ प्रकृति आ मनुष्यक स्मृति कोन रूपें ग्रहण करैत अछि। ई सब चीज एहि संग्रहक कथा सब मे कतेको ठाम देखार पड़त।

एहि भूमिकाक संग ई संग्रह हम अहाँ लोकनिक हाथ मे सौंपै छी। दुआ करू, फेर कथा-लेखन दिस प्रवृत्त भेलहुँ तँ एकैसम शताब्दीक निर्माणाधीन यथार्थ सँ अहाँक भेंट कराएब।

एहि संग्रहक प्रकाशन मे हमर मित्र आ यशस्वी कथाकार गौरीनाथ गँहीर दिलचस्पी लेलनि अछि। हुनके दृष्टिसंपन्नताक बदौलत ई एहि रूप मे अहाँक सोझाँ उपस्थित भ' सकल अछि। आभार हुनको प्रति।

तारानन्द वियोगी,
पटना,
25 सितम्बर 2020

अनुक्रम

उड़ान

मुरगा पाँच डेग दस डेग उड़ैत अछि। मोर आँगन भरि उड़ि सकैए। कौआ उड़ि सकैए गाम दू गाम। मुदा, लक्ष्मीपति केँ अपन कान्ह पर लदने गरुड़ एहि लोक सँ ओहि लोक उड़ि जाइछ। जकरा जते सामर्थ्य होइछ, से भरैए ततेक उड़ान।

—संस्कृत सुभाषित

—'हम तँ साफ देखै छी हरे भाइ, जे अइ दस गाम मे ओहन चंसगर आ फर्रीस कोनो दोसर लड़का नहि अछि। यौ, सरस्वतीक बास छै ओकरा जीह पर। खन्दान के नाम ई रोसन करत' —एक गोटे बजलाह।

दोसर गोटे कहलनि—'हम गेलहुँ एक बेर दिल्ली। ओकरा सँ भेंट करय गेलहुँ। हौ बाबू, देखै की छी जे ओ धुरझार अंग्रेजी छाँटने जा रहल अछि आ तीन-चारि गोटे बकर-बकर ओकर मुँह ताकि रहल अछि। बाद मे बुझलहुँ जे ओ सब पत्रकार रहय। ओकरा सँ कोनो विषय पर राय-विचार करय आयल रहय।'

तेसर गोटे कहलखिन—'आ, से एहन विद्वान जुबक शिष्ट केहन जे ककरो सँ रेका-तोकी करैत नहि सुनने हेबै। एक टूक सुपारी धरि नहि खाइए, आर तँ बाते छोड़ू।

आ, निष्कर्ष ई बहरेलैक जे हरे भाइ, चाहे जे भए जाय, ई कथा नहि छोड़ू। एहन लड़का हुअए नहि।

हरेकृष्ण तीन दिन पहिने गाम अयलाह आ जखन सँ अयलाह तखनहि सँ ओहि लड़काक मादे पुछाहेरी क' रहल छथि। सब गोटेक विचार पक्षे मे आबि रहल छैक। सभक कथन यैह जे अद्‌भुत छै लड़का। मुदा सभक आँखि मे अनिश्चय आ अविश्वास छैक। किऐक? हरेकृष्ण निर्णय नहि क' पबैत छथि।

लोक जौं-जौं आगू बढ़ैत अछि, अपन पाछू केँ बिसरल जाइए। भाँगक निशाँ मे जेना रसगुल्लाक चोभब मोन पड़ैत छैक, तहिना कहियो काल स्मृतिक निशाँ मे

अतीत मोन पड़ैत अछि। मुदा, से बरु पल-छिनक बात। अतीत चिकरैत रहैत छैक—घूरि ताक रे मुरहा, घूरि ताक। मुदा क्यो मुरहा घूरि नहि ताकैए।

हरेकृष्ण घूरि नहि ताकि सकैत छथि तें हुनका लेल ई निर्णय करब कठिन अछि जे गौआँक आँखि मे अनिश्चय आ अविश्वास किऐक छैक!

हरेकृष्ण आइ एक्जीक्यूटिभ इंजीनियर छथि। अफरजात पाइ छनि। सब तरहें सुखी सम्पन्न। सब तरहें समर्थ। दू टा छोट भाइ जे छथिन, से एक भाइ डाक्टर, एक भाइ डिप्टी कलक्टर। वाह जी वाह, लक्ष्मियो जेना विचारि क' परिवार चुनलनि।

बड़ अभाव मे नेनपन बितलनि। दुनू साँझ खोरिस जे जूमनि सेहो बड़ कठिन सँ। नित्तह गाय चराबए जाय पड़नि। आ से गाय अपन नहि, मालिकक। फाटल-पुरान पहिरथि, मुदा प्रसन्न रहथि। आइ एक्जीक्यूटिभ इंजीनियर छथि आ घूरि ताक' नहि चाहैत छथि।

ओ अपन विश्वासी दोस-महीम लग अपन मोनक बात राखने रहथि—'रौ भाइ, हम सिरी बाबूक बालक सँ अलकाक कथा करय चाहै छी। केहन रहतै?'

—आह दोस, कहैक बात? एक तँ सोना, ऊपर सँ रत्नजड़ित!' —एक गोटे कहलखिन।

दोसर गोटे कहलनि—'उत्तमो सँ उत्तमोत्तम दोस। एक तँ ओहेन पैघ खन्दान आ ताहि पर सँ ई भव्य लड़का।'

मुदा, हुनक एक मित्र, जे कि उचितवक्ताक नाम सँ परगन्ना मे विख्यात छथि, बजलाह—'विचार तँ बड़ बढ़िमा दोस। मुदा ई कथा भए सकत की नहि, सेहो सोचू! ओना तँ कहलकै जे लड़का-लड़कीक जोड़ ब्रह्मे लगा कए पठबै छथिन।'

बस, एही ठाम आबि क' हरेकृष्ण द्वन्द्व आ दुविधा मे पड़ि जाइत छथि। किऐ भाइ? किऐ ई कथा नहि हएत? कते पाइ लेताह श्री बाबू? दस लाख? पन्दरह लाख? की चाही हुनका? लड़की? हमर अलका-सन सुन्दरि छै क्यो ओकरा कॉलेज मे? लड़का बड़ तेज छै—सैह ने? अलके कहिया क्लास मे सेकेण्ड केलक अछि? की चाही हुनका? कथी लेताह श्री बाबू? किऐ ई कथा नहि हएत?

यैह गप ओ अपन पिता लग उठौने रहथिन। पिता गोपाल ठाकुर सत्तरि बरखक बूढ़। दुनिमाक सत्तरि हजार उठापटक ओ देखि चुकल छथि। पिता गुम्म भ' गेलखिन।

हरेकृष्ण बजलाह—'की कहै छी कका? अहाँक की विचार?'

सत्तरि बरखक भेलें रे मुरहा। घूरि ताक, घूरि ताक। आ, गोपाल ठाकुर घुरि-घुरि ताक' लगलाह। ओ एकटा खिस्सा सुरुह क' देलनि—'एक बेरुका गप कहै छियह हरे। सदर कचहरी मे एकटा मोहरिल रहथि—जटाधर। ओ ओहि पारक, सोइत रहथि। बड़ा नामी-गिरामी। बड़ा सरकार खूब मानथिन। से ओ जटाधर की केलथि

जे अपन बेटीक बियाह छोटबभना मे कए देलखिन—अंगरेजिया बाबूक लोभ मे। बड़ा सरकार ई सुनि कए आकुल भए गेलाह। आ बुझबहक, जटाधर कें नोकरी सँ निकालि देलखिन।'

हरेकृष्णोक मोन आकुल भ' गेलनि। किच्छु पुछियनु, वैह खिस्सा सब ल' क' बैसि जेताह।

बड़ा सरकार रहथिन—सिद्धेश्वरी शरण बाबू। महाराजाधिराजक मोकर्रम रहथि। सौंसे परगन्नाक जोत रहनि। एहि इलाका मे ताहि दिन हुनके नामें इजोत होइक, हुनके नामें अन्हार। सब अर्थें महान रहथि। हुनके टहलुआ रहथिन—गोपाल ठाकुर।

हरेकृष्ण कें सैकड़ो बेर ई खिस्सा सब सुनल छनि—जाहि साल बड़का हैजा मे गोपालक माय-बाप मुइलनि, ओ पाँच-छव बर्खक रहथि। बड़ा सरकार हुनका अपन ड्योढ़ी मे उठबा अनलखिन आ घोषणा कयलखिन जे एहि बच्चा के प्रतिपालक आइ सँ हम!! तहिये सँ गोपाल ठाकुर बड़ा सरकार के, महरानी के आ तखन तँ छोटा सरकार, मुन्ना सरकार के सेवा-टहल करैत रहलाह। वैह लोकनि डीह देलकनि, जाहि पर आइ बसल छथि। वैह करुणानिधान बड़ा सरकार हिनक बियाह करौने रहनि जकर प्रसादात आइ सोन-सन-सन तीन टा बेटा छथिन। तीनू एका पर एक!

हरेकृष्ण आर सब कथू बिसरि जाथि, ई कोना बिसरताह जे धन्न एहि बापक तपस्या जे आइ ओ एतए छथि। बिसरैयो के तँ हद्द होइ छै!

हरेकृष्ण बजलाह—'से नहि कका, हम पुछैत रही जे ई कथा भवितव्य की नै भवितव्य?'

गोपाल ठाकुर एकटा आर कथा ल' क' बैसि गेलाह—'छोटा सरकार एक बेर दार्जीलिंग सँ छुट्टी मे एलखिन। ओही समय मे एकटा बड़का भोज भेलैक। किंग सहैब के जन्म-दिन रहैक। तँ छोटा सरकार जे एलखिन तँ शिकार खेलय जाथिन। शिकारक हुनकर संगी रहए एकटा कैथ। पोखरि पाढ़ पर घर रहैक। की नाम रहै ओकर बापक? हँ हितनराएन! से, ओ जे भोज भेलै हरे, ओहि मे छोटा सरकार पाँत मे बैसि गेलखिन। ओ जे कैथ संगी रहनि हुनकर, तकरो अपने लग मे बैसेलखिन। हितारैए तेहने रहै! से बुझबहक, खाइते काल कोम्हरो सँ बड़ा सरकार एलखिन तँ देखै की छथि जे कैथा बैसल अछि। गरदनि मे गमछा धरा कए उठेलखिन बेंत आ लग्गे डंटा, लग्गे डंटा, अधमिरूत कए देलखिन। आ, ओहि हितनराएन कें तँ उपटाइए देलखिन गाम सँ।

'आ से छोटा सरकारक जखन कथा ठीक भेलै—ओहि पार, पंचग्राम मे—तैखन ओ पढ़ैत रहथिन कलकत्ता मे। ओ गाम एलाह। बड़ा सरकार सँ भरि मुँह बाजथिन नहि। मुदा, की चलनिमा घेरलकनि जे जिद पकड़ि लेलखिन—कलकत्तेबाली

सँ बियाह करब! ताहू पर सँ कहि की देलखिन जे कलकत्ताक ओ परिवार हमरो सब सँ पैघ ब्राह्मण कुलक अछि। बस, बड़ा सरकार केँ नेसि देलकनि। हुकुम भेलै जे आब छोटा सरकार कलकत्ता नहि जेताह। खबास हुनकर साज-असबाब आनै' लेल विदा भेल। मुदा, बुझबहक हरे, ओही राति छोटा सरकार पेट मे तलवार भोंकि कए मरि गेलाह।'

गोपाल ठाकुरक दुनू आँखि नोर सँ डबडब भ' गेलनि। ओ हकन्न कनैत बजलाह—'आ बुझबहक हरे, ओहि भोर खन छोटा सरकारक महायात्रा बहरेलनि तँ बड़ा सरकार एलान केलखिन—खबरदार! आइ सँ क्यो श्री बाबू केँ मुन्ना सरकार नहि कहि सकैए। आइ सँ ओ भेलाह—छोटा सरकार!!'

हरेकृष्ण आजिज भ' गेलाह। बड़ मोश्किल सँ अपन स्वर केँ सहज करैत बजलाह—'अहाँ की कहए चाहै छी कका? श्री बाबूक बेटा सँ हमर बेटीक बियाह नहि भए सकैए?'

बुढ़ा चुप भ' गेलाह आ शून्य दृष्टि सँ टुक-टुक अपन पुत्रक मुँह दिस तकैत रहलाह।

—मुदा किऐ कका? किऐ नहि भए सकैए?

—'ओ बड़ पैघ छथि। हुनकर छँटुआ-फेंटुआ सँ हमर देह पोसाएल अछि'—बुढ़ा बड़ मोश्किल सँ बजलाह।

—'अहाँ कतय छी कका!' —हरेकृष्णक स्वर मे आब क्रोध स्पष्ट अभरि उठलनि—'एहि सब बितलाहा बात केँ छोड़ू। आइ हमरा लग ततबा पैसा अछि जे हुनकर सारा राजपाट हम एक दम्म मे कीनि लेबनि।'

बुढ़ा चुपचाप शून्य दृष्टि सँ टुक-टुक बेटाक मुँह दिस तकैत रहलाह।

—'सुनू कका, जतबा कहै छी, ततबे करू। ओ सब अहाँ केँ बड़ मानै जाइ छथि। से, हमर विचार जे' —हरेकृष्णक स्वर कने मद्धिम आ कोमल भेलनि—'जे अहाँ श्री बाबू लग जाउ आ हुनका ई सब प्रसंग कहियनु। कहुना ई कथा तय करू। ओ जे माँगताह, से हम देबनि। ओ जे माँगथि...

शून्य दृष्टि सँ बेटाक मुँह दिस ताकैत बुढ़ा अकचकेलाह—'हऽम? हऽम जेबै?'

—'हँ, अहाँ जेबै।' —हरेकृष्ण फेर तरङि उठलाह—'आ नहि तँ कहू हमरा, हमहूँ छोटा सरकार जकाँ पेट मे छूरा भोंकि कए मरि जाइ छी।'

बुढ़ा चुप भ' गेलाह।

आ, भरि राति मोन केँ तैयार करैत-करैत, अपन अतीत सँ लड़ैत-लड़ैत बुढ़ा गोपाल ठाकुर दोसर दिन भोरे श्री बाबूक दलान पर पहुँचलाह। संग मे गेलखिन छोट

बालक बालकृष्ण, डिप्टी कलक्टर।

श्री बाबू दलाने पर बैसल छलाह। असगरे। हुलसल हिया सँ स्वागत केलखिन—'आउ आउ... आइ कोम्हर सुरुज उगलैए?'

बालकृष्ण प्रणाम केलखिन तँ बड़ बेस, मुदा गोपाल ठाकुर कल जोड़लखिन कि श्रीबाबू हाथ ध' लेलखिन—'ई अहाँ की करै छिऐ? अहाँ जेठ जन छियै। हम प्रणाम करबै कि अहाँ प्रणाम करबै?'

डिप्टी कलक्टरक मोन तृप्त-परितृप्त भ' गेलनि। ओ हरियर-कचोर भ' उठलाह। मुदा, गोपाल ठाकुरक आँखि मे नोर भरि अयलनि।

थोड़े काल खें-कुशल भेलै, थोड़े काल आहे-माहे। तखन, श्रीबाबू डिप्टी कलक्टरीक जिज्ञासा कयलनि। तखन, पुरान बीतल दिनक स्मृति मे गोपाल ठाकुरक संग चुभकलाह।

तखन, एलै असली बात।

श्रीबाबू एक क्षण सोच मे पड़लाह। फेर, हुलसित भेलाह—'बड़ बढ़िमा! बड़ उत्तम!! मुदा, एकटा बूझल की? मैमा महरानी एखन साक्षात छथि। एहन कोनो निर्णय हम हुनकहि पर सौंपै छियनि। सैह ने उचित?'

—'हँ, हँ। एकदम्म उचित!' —गोपाल ठाकुर बजलाह। मुदा, हुनकर बजबाक उल्लास भरल स्वर डिप्टी कलक्टर केँ अधलाह लगलनि।

—'अहाँ कने मैमा महरानी सँ गप क' लियनु। ओ गछि लेलनि तँ हम तैयारे छी।' —श्रीबाबू बजलाह।

सैह भेलै। डिप्टी कलक्टर दलान पर बैसलाह आ गोपाल ठाकुर खूब ऊँच खखास करैत आङन गेलाह।

मैमा महरानी केँ गोड़ लागलखिन। मैमा बड़ हुलसित भेलखिन। फेर वैह सब। कने काल खें-कुशल भेलै। कने काल आहे-माहे। तखन, बीतल-पुरान दिनक मोहक स्मृति मे मैमा गोपाल ठाकुरक संग पानि उपछैत रहलीह।

तखन, एलै असली बात।

मैमा अग्निश्च वायुश्च भ' गेलीह। उठि क' ठाढ़ भ' गेलीह। थर-थर काँप' लगलीह। पुतहु दौड़लखिन। सब क्यो सम्हार' लगलनि।

मैमा बेर-बेर चिकरथि—'ऐं रे गोपला! हमरा जिबिते-जी रे? हमरा मरैयो नै देलैं रे! तोरा धनक दाबी? तोरा बेटाक दाबी रे?'

गोपाल ठाकुर हबो ढकार कान' लगलाह आ मैमाक पयर पर खसि पड़लाह। मैमा लाते-लात हुनका मार' लगलखिन। मैमा बताहि भ' गेलीह।

गोपाल ठाकुर बजलाह—'हम बेकसूर छी महरानी। हम ओकरा कहैत रहियै।

मुदा ओ मानलक नहि।'

मैमाक हुकुम भेलनि—'जो भाग, जल्दी भाग।'

गोपाल ठाकुर हबेलीक गेट दिस पड़ेलाह। मुदा, संजोग देखियौ। एहन-एहन संजोग घटित होइ छै कि एकरा की कहबै?

ओम्हर सँ आबैत रहैक पोस्टमैन। पोस्टमैन बाजल—'यौ कका, कने खबरि करियनु, रजिष्ट्री आयल छनि।'

—'कतय सँ हौ?'

—'दिल्ली सँ।'

चिट्ठी हाथ केँ लेने आ विचित्र देखू जे हुलसित होइत गोपाल ठाकुर आङन घुरलाह। दलान पर सँ श्रीबाबू बजाओल गेलाह। दसखत कयलनि।

चिट्ठी फाड़ल गेल। दिल्ली सँ हुनक सुपुत्र विनय पठौने रहथिन।

लिफाफ सँ पाँच हजारक ड्राफ्ट बहरायल। तखन एकटा छोट-सन पत्र।

पत्र पढ़लनि श्रीबाबू आ गुम्म भ' गेलाह। पत्र मे दू दू टा सुखद सूचना देल गेल रहैक—(1) नीदरलैण्डक एम्बेसी मे पर्सनल अफसरक नोकरी भेलनि (2) स्विटजरलैण्डक एकटा कन्या सँ विवाह कयलनि, जकरा सँ बहुत पुरान प्रेम रहनि!

पत्र मे माता-पिता सँ प्रार्थना कयने रहथि जे पुतहु केँ आशीर्वाद देबए ओ लोकनि तुरन्त दिल्ली पहुँचथि। मैमाक प्रति विशेष प्रेम निछाबर करैत विनय इहो लिखने रहथि जे हुनका दिल्ली जरूर आनल जाइनि।

कनेकाल पहिने हुलसित छलाह गोपाल ठाकुर मुदा कहू तँ जे ओ आब हँसताह की कानताह?

त्याग

सभ्य आ अज्ञानी समाजक बीच मे की फरक छै? मात्र एतबे जे सभ्य समाज मे जे चीज नहूँ नहूँ चलैत रहै छै, सैह अज्ञानी समाज मे आबि क' फास्ट भ' जाइत छैक। जेना चालू वी ?सी ?पी ? केँ फोरवार्ड मोड मे क' देल गेल हो।

—जोगीलालक एक बानी

ओहि दिन सँ घूरन भांगो खेनाइ छोड़ि देलक। मुदा ताहि सँ हेतै की? रोग किछु रहत, इलाज किछु करबै, तँ रोग छुटबैया थोड़े अछि? कोनो फल नहि बहराएल।

ओहि रवि केँ छोटकाक बहु फोन कए क' आएल रहए। ओम्हर सँ घुरल तँ फाँड़ भरि बिस्कुटक डिब्बा लेने आएल। घूरन दरबज्जे पर पड़ल रहै। रातुक नव बजि गेल रहै। सौंसे टोल निस्सबद भ' गेल रहै। मुदा, जा पुतहु घुरि क' आबि नहि जाय, ताधरि सुतत कोना? पुतहु एलै तँ दरबज्जे पर सँ बेटा केँ चिकरैत आंगन ढुकल—'रौ उठ रौ, बिस्कुट ले। देखही कते बिस्कुट लेने एलियौहें। पापा कहलकौहें जे बेटा हमर बिस्कुटे खाएत। उठह बाबू, उठह।'

घूरन बूझि गेल। पुतोहु के उद्देश्य स्पष्ट रहै। बच्चा केँ बिस्कुट खुआएब मूल बात नहि रहै। मूल बात रहै घूरन केँ कबदाएब। घूरन स्पष्ट बूझि गेल। ओकरा मुँह सँ बहरेलै—'हौ महादेव! केना ई घर बचतै?'

बच्चा आनन्दक निन्न सूतल छल। ओकरा घीचि-तीड़ि क' उठाओल गेलै। ओकरा उठाएब जेना छोटकीक प्रतिष्ठा सँ जुड़ल रहै। छौंड़ा रोदना पसारनहि उठल। छोटकी ओकरा हाथ मे भरि डिब्बा बिस्कुट द' देलकै। छौंड़ा उनटा-पुनटा केँ देखलक। माए कहलकै—'बौआ, पापा कहलकहें जे हमर बाबू बिस्कुटे खेतै। लैह खाह आ देखहक, हम अपना लेल कते-कते चीज आनलिऐए।' — ततबा जोर सँ ओ बाजलि जे दरबज्जा पर पड़ल घूरन साफ-साफ सुनलक। मुदा, छौंड़ा लेल धनि सन। ओ तते ओंघाएल रहै जे बिस्कुट केँ हाथ मे ल' क' पड़ि रहल आ तुरत्ते निन्न

गाब' लागल।

दोसर दिन घूरन बचबा कैँ पुछलकै—'बाबू हौ, माँ तोरा बहुत बिस्कुट आनि देलकहहें? हमरा नै देखेबह? कोन बिस्कुट छियै हौ?'

गद्गद् होइत छौंड़ा अपन माए लग दौड़ल। कहए लागल—'बाबा बिचकुत देखतै, बिचकुत लाही। बाबा बिचकुट देखतै, बिचकुट लाही।'

छोटकी के मोन घोर भ' गेलै। किए ई बुढ़बा मुनसा बिस्कुट देखतै? किए देखतै बिस्कुट?

बारह-पन्द्रह टा जे डिब्बा रहै बिस्कुटक, छोटकी बिख सँ सबटा कैँ पेटी सँ निकाललक आ एकटा पुरना साड़ीक टुकड़ा मे बान्हि देलकै—'जो देखा दही गए।' सौंसे मोटरी बिस्कुट जेना-तेना सम्हारैत खसैत-पड़ैत बचबा दरबज्जा दिस पड़ाएल—'हे यैह बाबा, हे यैह बिचकुत। हे यैह बिचकुत।'

बिस्कुटक मोटरी देखि क' घूरन हँसए लागल। आगाँ बढ़ि क' ओ बच्चा के सम्हारलक। बिस्कुटक मोटरी खोलि क' देखलक। ओहि सब पर ब्रिटेनिया कम्पनीक 'गुड डे' बिस्कुटक नाम लिखल रहै। देखिते ओ बूझि गेल जे माल नकली छियै। ओ फेर हँस' लागल। बसात कैँ सम्बोधित करैत ओ बाजल—'जो रौ छिनरी भाइ बनिमा-बैकाल सब, ककरो लग मे ने तूँ पैसा रहए देबही ने समांग।'

छौंड़ा पुछलकै—'की कहलहक बाबा? की कहलहक?'

घूरन धर्मसंकट मे पड़ि गेल। एहि बच्चा कैँ ओ की कहतै?

कोना-कोना की सब बात भेल हएत—घूरन सबटाक अन्दाज पाबि गेल। बनीमा तिरथा छोटका कैँ फोन पर कहने हेतै—'भरत, बड़ी सुन्दर एकटा बिस्कुट निकललहहें। ब्रिटेनिया कम्पनी के गुड डे। दिल्लियो मे देखैत हेबहक बड़का लोकक धियापुता यैह खा कए रहैए। गाम मे तँ बुझहक, पहिले पहिल हमहीं आनलौहें। बच्चा सबहक लेल तँ बुझह अमरित छियै। आ, दामो नै बेसी। की कहै छह? तोरा बेटा ले' भेज दियह?'

तिरथा एहि गामक नामी बनिमा थिक। किराना आ सिंगार-पेटार सँ ल' क' कपड़ा-बस्तर धरि जे चाही, सब चीज ओ राखैए। दिल्लियेबला सभक कमाइ पर ओकर कारबार चलै छै। समान एखन पठा देलियह, पाइ गाम एला पर दिहह—ई हिसाब रहै छै। ओ महाजनो थिक। अपने दोकान पर ओ टेलीफोनो लगबौने अछि। बाहर सँ जँ ककरो फोन एतै तँ गप करा देत। चार्ज लेत मात्र पाँच रूपैया। लोक कैँ ई सुभीता पड़ै छै। मोबाइल कैँ एखन एतय धरि एबा मे बहुत देरी छै।

बचबा फेर पुछए लागलै—'की कहलहक बाबा?' घूरन धर्मसंकट मे पड़ि गेल—नै, किछु तँ कहैए पड़तै—ओ सोचलक। बच्चा कैँ अपना कोरा मे बैसा लेलक आ बिस्कुटक डिब्बा ओकरा देखा क' कहलकै—'बौआ, ई नकली बिस्कुट छियै। ई लोक खाइ छै ने तँ मोन खराब होइ छै। ई नकली बिस्कुट नहि खाइ।'

'नकली' के माने ओ छौंड़ा की बुझलक की नहि, बिस्कुटक एकटा डिब्बा हाथ मे नेने ओ आँगन पड़ाएल आ माए कैँ तंग करए लागलै—'नकली बिचकुत छियौ। हम नै खेबौ। नकली बिचकुत छियौ। हम ने खेबौ।'

छोटकीक देह मे आगि लागि गेलै। ओ देह-हाथ पटक' लागल। अपन करम कैँ गारि-सराप देब' लागल। ओकर छौंड़ा कैँ जे खराब करै छै, तै दुश्मन कैँ कब्बर तर मे गाड़' लागल। छौंड़ा ओकरा कबदा देलकै—'हम नहिमो खेबौ। बाबा कहलक नै खो।'

आब छोटकी सीधा आक्रमण क' देलकै—'हे दिनकर दिनानाथ! हे छबो पएरवाली! एहि बुढ़बा मुनसा कैँ कोढ़ि फुटौ। एकर देह गलि-गलि खसौ। हमरे अन-पानि पर ई ढेकरल घुरैए आ हमरे सुख एकरा देखल नै जाइ छै। ई आगिलगौना भांग-गाजा खाइ छै आ हमरा बच्चा कैँ बेरबाद केने जाइए हौ दिनकर दिनानाथ! तुहीं निसाफ करिहह। तुहीं रखबैया।'

घूरन के मोन विरक्त भ' गेलै। ओ चुपचाप दरबज्जा पर सँ बहरा गेल आ बाध दिस निकलि गेल।

अपना जीवन मे कहियो घूरन भांग-गाजाक सेवन नहि केलक। एम्हरे छव मास सँ भांग खाए लागल अछि। ओझरिये तेहन छै जे भांग खेने बिना कल नहि होइ छै। पहिने एक टैम खाइ छल। तखन दू टैम भेलै। आब होइत-होइत त्रिकाल हुअए लागलै अछि। ओहू काल मे ओ भांग खेनहि रहए। मोन बौआय लागलै। अंतरिक्ष मे निहारैत ओ बाजल—'हौ महादेव, तुहीं तसफिया करह।'

महादेव की तसफिया करितथि?

रोग किछु रहत, इलाज किछु करबै तँ रोग छुटबैया थोड़े अछि? एना हुअए तँ ई छोड़ि दियौ, ओना हुअए तँ ओ छोड़ि दियौ। बेसी झंझटि बुझाए तँ घर-दुआरि छोड़ि दियौ, ताहू सँ नै हुअए तँ दुनियाँ छोड़ि दियौ। छोड़नाइ कतहु समाधान हुअए? मुदा, एहि घूरन कैँ के समझाओत? पचास बरखक उमेर भेलै। सब दिन सँ समाजक कर्मठ आ जोग आदमी मे गनती रहलै। सब दिन आगू बढ़ैक नियार राखलक। मुदा, एखन यार कैँ रोगे ने पकड़ि होइ छै। एना होइ छै तँ ई छोड़ैए, ओना होइ छै तँ ओ छोड़ैए। एक बचपन सँ दिन मे चारि बेर अन्न खाइत आएल अछि, दू बेर जलखै दू बेर कलउ। मुदा, एक दिन एहन भेलै जे दुनू टैम जलखै त्यागि देलक। सब दिन सँ एहन होइत एलै जे समाजक पाँच-दस लोक सँझुकी पहर एकरा दरबज्जा पर आबि क' बैसै आ गपसप होइ। से तकरो छोड़लक। बालापन सँ भिनसरबे उठि क'

पराती गबै छल, एम्हर आबि क' तकरो छोड़लक। कथी-कथी केँ छोड़बह हौ बाबू घूरन दास?

तीन टा बेटा छै घूरन कें। तीनू एका पर एक। राक्षस-सन के देहदशा। कर्मठो तेहने, करमसाँढ़ो तेहने। तीनू मैट्रिक पास छै। तीनू दिल्ली कमाइ छै। पहिने जेठका रामदास दिल्ली गेल। किछु दिन चाकरी-चोकरी करैक बाद पानि के दोकान खोलि लेलक। आब सरबतो राखए लागल अछि। तखन दिल्ली गेलै मझिला—लक्ष्मण दास। जेठका के बनल बनाएल असरा भेटलै। फल के कारबार मे लागल। आब फलक दोकान खोलने अछि। छोटका भरत दास रहै थोड़े कोढ़ियाठ, मुदा करमसाँढ़ रहै। एकटा सेठ के किराना दोकान मे नोकरी भेटि गेलै। उपरियो थोड़े-बहुत झाड़िये लैत अछि।

तीनू बेटा बापक भक्त। तीनू बेटा बापक संस्कार केँ टेकनिहार—बापक अदब मे रहनिहार। दिल्ली सँ घूरय तँ बुझू जे घूरनक आगू टकाक बुर्ज लगा दियय। घूरन तँ गद्गद्, घूरन तँ महो-महो। से घूरन बेरा-बेरी तीनू बेटाक बियाह करेलक—नीक कुल-खन्दान ताकि क' नीक-नीक लड़की देखि क'। सब चीज घूरन के योजना के मोताबिके चलैत रहलै। एक बेर घूरन कहलकै—'हौ बाबू सब, टाका कमबै जाइ छह, से बड़ बढ़िमा। हमरा दै छह तँ तकर हिसाबो नहि लै जाइ छह। हम तँ सबटा पैसा खाइए-पीयै मे लगा दै छियहु। खरचा करए हमरा नै आबैए। पैसा दै छह हमरा से तँ ठीक मुदा अपनो-अपनो पलान राखह दिमाग मे। उनति करै जाह। हमर तँ विचार जे सब सँ पहिने एकटा मकान बनाबह।'

बेटा सब एहि बात पर की बजितए? उनटे गद्गद् होइ गेल जे हमरे-सन बाप भगवान सब केँ देथुन। मुदा, एकटा काज ओ सब आरो करै गेल जे अपना-अपना जनानी केँ एहि गद्गदी के खबरि दै गेल। बुझनिहार अनुमान क' सकै छथि जे प्रस्तुत रोगक कीटाणु-प्रवेश ओही दिन भेल हेतै।

कीटाणु-प्रवेश मुदा ओहि दिन भेल नहि रहै, बहुत आगू चलि क' भेलै। पक्का मकान बनाएब जखन शुरू केलक घूरन—छव कोठलीक भरल-पुरल आधुनिक मकान—तखन जा क' ओकरा बेटा सब केँ लागलै जे बहुत कमाबैबला पार्टी तँ ओ सब नहि अछि। टाका देने जाइ, आ तकरा मकान पीने जाइ। कैक बरख लागि गेलै। तीनू भाइ अकच्छ हुअए लागल। एहि बीच तीनू केँ बेराबेरी धियापुता भेलै। तखन फेर आर होइत गेलै। तीनू भाइ दिल्ली के समाज देखलक। सुन्दरता आ साज-असबाब देखलक। सेठ सभक भरल-पुरल धियापुता देखलक। कनिमा लेल शैम्पू आ धियापुता ले कार्नफ्लैक्स आब ओकरा सब केँ बहुत जरूरियो बुझेलै आ मकान सँ सस्तो बुझेलै। मकान पछुआइत गेल।

एही बीच मे एकटा घटना भेलै। लिंटल के ढलाइ लेल पन्द्रह हजार टाका तीनू भाँइ घूरन केँ पठौने रहै। आब करितय सरंजाम, आब करितय कि ता एकटा सामाजिक समस्या आबि गेलै। जटाशंकर कैक बरख सँ बेटीक बियाह लेल बर ताकए। घर भेटै तँ बर नहि, बर भेटै तँ घर नहि। दुनूक जँ मिलानी भेलै तँ टकाक माँग अफरजात। सौंसे गामक समाज लग जटाशंकर अपन पगड़ी उतारि क' राखि देलक। उचिते रहै जे सौंसे गाम एहि मामला केँ सामाजिक समस्या क' क' स्वीकारि लेलक। से, घूरन अपन पन्द्रहो हजार टाका जटाशंकर केँ द' देलकै। जटाशंकर पर बहुत कर्जा आबि गेल रहै, से ओ बेटी केँ बिदाइ केलाक बाद कमाबए राजस्थान पड़ा गेल। दू साल बीति गेलै। कथी ले घूरन के पाइ घुरतै! बेटा-पुतहु सब केँ ई बात बिक्ख भ' गेलै। मकान तँ जतय रहए ततए रहबे केलै, घूरन सेहो ओही ठामक ओही ठाम रहि गेल। बेटा सब स्वावलम्बी हेबाक चेष्टा मे लागि गेल। घूरन केँ बेकूफ आ धरकट करार देल गेल।

घूरन के आइयो धरि ई बात समझ मे नहि एलैए जे ओकर गलती की रहै? जटाशंकर केँ ओ एहन समय मे टका देलक, एहि बात केँ क्यो कोना गलत कहि सकैए? आब जटाशंकर जँ पाइ नहि घुराबए तँ ई गलती तँ ओकरे ने छियै भाइ, एहि मे घूरन के कोन दोख?

'ककरो दोख नै छै'—घूरन सोचलक—'दोख छै समय के आ कि दोख अछि हम्मर'—बस, यैह ओ जगह थिक जतए आबि क' ओकरा हृदय मे हूक उठय लगैत छैक—आब हम ककरा छोड़ी? एकरा छोड़ी की ओकरा? भांग छोड़ी की जलखै?

सात बरख भेलै—घूरन के घरबाली मरि गेलै। मरल तँ राज करए गेल बेचारी—घूरन केँ अधिकतर सैह प्रतीत होइ छै। मुदा, गौआँ-घरुआक कहब थोड़े दोसर रहै। लोक कहए—हौ भाइ, चुमाउन कए लैह। अखनी की उमेर भेलहहें। ओना केना जिनगी चलतह? मुदा, घूरन नहि मानलक। आब की चुमाउन करत बुढ़ारी मे? घुरि-घुरि वैह मौगी वैह गीत गाब—से नहि उचित हेतै। बेटो सब राजी भेलै जे बाबू, मोन मानह तँ कए लैह। हमरा सब केँ नहि कोनो हरजा। मुदा हरजा घूरन केँ अपने बुझेलै।

ओकर एकटा भाउजि पुबारि टोल मे रहैत रहै। विधवा रहए। निपुत्र। बेटी सब सासुर बसै। अपने बहुत दीनदशा मे रहै छल। जा घूरन लग मे पैसा-कौड़ीक अबरजात रहलै, ओ ओकर मदति क' दै। कहियो-काल ओ ओकरा ओहि ठाम जाइ। ओकरा संगें गप-सरक्का क' क' ओकरो मोन केँ बल भेटै। लागै जेना ओहो अपने परिवार के समांग छियै। एम्हर, बहुत दिन सँ ओकरा कपड़ा-बस्तर के अभाव भ' गेल रहै। घूरन देखलक जे एक्के खण्ड साड़ी ओकरा पहिर' जोग बचल रहै

आब। मुदा, घूरनक संग मे तँ आब एको पाइ रहै नहि छलै। बेटा सब पैसा सीधे कनिमा सब केँ दै आ कि महाजन तिरथा केँ।

घूरनक आँगन मे कपड़ाबला मोटैया आ सिंगार-पेटारबला, बासन बरतन बला मोटैया सब आबैत-जाइत रहै छल। कोनो ने कोनो पुतहु केँ सब दिन किछु ने किछु किनबाके रहैत छलैक। से, ओइ दिन जे कपड़ाबला मोटैया आएल तँ घूरन देखलक जे जेठकी कनिमा साड़ी कीनि रहल अछि। घूरन सहटि क' मोटैया लग गेल। एकटा साड़ी देखा क' पुतहु केँ कहलकै—'कनिमा, इहो साड़ी लए लियह। हमरा काज अछि।' आ भरोस क' क' जे साड़ी ल' लेल जाएत, ओ आँगन सँ बहरा गेल।

साड़ी तँ नहिमो लेल गेल, दरबज्जा पर सँ घूरन सुनलक, जेठकी पुतहु अपन दियादनी सब केँ परचारि रहल छल—'अइ कमासुत के सख ने देखै जाही! ओइ दिन मे कहलियै जे बियाह कए लैह तँ नहि केलक। आब जे अइ उमर मे रण्डीबाजी करत तँ से हम चलए देबै?'

घूरन बेकल भ' गेल। हौ महादेव रछिया करह, हौ महादेव रछिया करह—करए लागल। महादेव की रछिया करितथिन? नतीजा निकललै जे ओहि दिन सँ ओ अपन भौजी केँ त्यागि देलक।

त्यागि नहि सकल तँ एखनो धरि बाल-बच्चाक मोह नहि त्यागि सकल आ घर-दुआरि नहि त्यागि सकल। कतेको बेर ओकर मोन भेलै जे आब तँ बेटा सब अपन-अपन उन्नतिक बाट पकड़ै गेल आ पुतहु सब घर सम्हारै जोग होइत गेली, चली आब कोम्हरो दोसर दुनियाँ! मुदा नहि, ई मोन टा मे होइबला बात छियै। धरती पर एकरा उतारब घूरन बुते कहियो पार नहि लगलै। हफ्ता नहि बितैए कि बेटा सभक कुशल-समाचार लेल ओकर मोन बेकल हुअए लागै छै।

पहिने बेटा सब चिट्ठी पठबै छल। चिट्ठी मे सब समाचार विस्तार सँ रहल करै। गामक लोकवेद, बाध-बोन, सर-समाजक सेहो जिज्ञासा बेटा सब करैक। चिट्ठी घूरनेक नाम सँ आबैक। रस ल' ल' क' घूरन ओ चिट्ठी तीनू पुतोहु केँ सुनाबए। समाजक जाहि लोक सभक चर्च रहल करैक चिट्ठी मे, तकरो सब केँ बैसा-बैसा क' सुनाबै। सबहक मोन तृप्त-परितृप्त होइ। सब क्यो तीनू भाँइ केँ आशीर्वाद दैक।

मुदा आब गाम मे टेलीफोन पहुँचि गेलै। तिरथा बनीमाक दोकान गामक उतरबारि कोन पर रहै, जौं नहिमो किछु तँ तीन पौआ जमीन सँ कम नहि हेतै। तिरथा समाद दै तँ घूरन फोन सुनए जाए। अधिकतर रवि-रवि केँ फोन आबै। घूरन के मोन छुछुआएले रहि जाइ। बेटा सब धड़फड़ी मे गप करै। घूरन केँ किछु कहबाक मोका नहि भेटै। बेटा सब केँ बहुत बात करबाक खगता नहि रहै, ने बेसी बात सुनबाक। हाँइ-हाँइ क' काजक बात करए। काजक बात की तँ ई चीज एना करिहह

ई चीज एना। घुरनक मोन छुछुआएले रहि जाइ। तखन, गुण मे गुण यैह जे बेटा सब सँ मुँह लागल गप भ' जाइ। तिरथा तकर चार्ज लिअए पाँच रुपैया।

एक दिन छोटका फोन पर कहलकै—'हौ बाबू, अगिला रवि केँ बड़की भौजी केँ कहिहक फोन पर आबै ले। भैया बात करतै।'

घूरन उत्तर देलक—'रौ, एत्ती दूर मे फोन लागल छै। एते राति केँ जनीजाति कोना अइ ठाम एतै?'

मुदा, छोटका बाजल—'आबि ने जेतै! तूँ खाली कहि दिहक।'

ठीके सैह भेल। घूरन कहि टा देलक, जेठकी बड़ा हरखित मोन सँ गेल। ओही दिन मामला घुरनक हाथ सँ बहरा गेलै। ओहि दिन छौंड़ा जेठकी केँ कहलकै—'हे, अगिला रवि केँ मझिली केँ कहिहक फोन पर आबै ले। लक्ष्मण बात करतै।'

आब, अलग-अलग रवि केँ अलग-अलग कनिमाक पार हुअए लागलै। बात शुरु भेल रहै सख-सेहन्ता आ मनोरंजनक मामला सँ, मुदा बहुत जल्दी ई बात सौंसे परिदृश्य केँ छापि लेलक। सबटा मुद्दा आब कनिमो सब लग राखल जाय लागल—चाहे आर्थिक, चाहे सामाजिक, चाहे पारिवारिक। सम्पूर्ण सत्ता घूरनक हाथ सँ बहरा क' स्त्री-शक्ति मे समाहित भ' गेल। स्त्री-शक्ति एकजुट भ' गेल। पहिने छोटो-छीन बात मे तीनू लड़ि पड़य। आब तीनू एकजुट भ' गेल। खूब मेल रहए लागलै। दुश्मन केँ जँ सिकस्त देबाक हो तँ अपना मे मेल रहबाके चाही। दुश्मन भेलाह के तँ घूरन। उचिते बात कि ने? ई नियम तँ पहिनहु रहै जे मीमा-बीबी राजी तँ ससुरा साला पाजी! आब तँ नया जबाना आबि गेलै, आब ई बात किए ने हेतै? —तीनू तसफीआ करए।

शुरू मे कनिमा सब जे फोन करए जाए तँ घूरन सेहो जाइ। कोना एसकरे जाइ दितिहैक? मुदा, जल्दिए ओ अनुभव क' गेल जे ओकरा संग जेनाइ पुतहु सब केँ पसिन्न नै छै। कारण जरूर कोनो भितरिया रहल हेतै, किएक तँ कनिमा सब साफ-साफ नहि किछु कहैक, चिकारी मे अपना मे गप क' क' घूरन केँ बेहूदा बनाबै। बाद मे एना भेलै जे जेठकी आ छोटकी संग-संग जाए लागल। मझिली जे जाय तँ जेठकाक बेटा केँ संग क' क' जाय। घूरन मुक्त भेल। जखन बेटा सब डाइरेक्ट अपन बहुए सब सँ गप करै जाएत तँ ओ कथी लेल पाछू लागल जाएत? जेना जे होइ छै, तकरा रोकल नहि जा सकैत अछि—ओ यैह विचार केलक।

मुदा, विचार आ मोन मे तँ सब दिन सँ अट्ठाबज्जर होइत एलैए। विचार तँ क' लिअए मुदा मोन नहि मानै। एक रवि केँ ओहो तिरथा दोकान पर जुमि गेल। जेठकाक पार रहै, तें। जेठका बेटा थोड़े विवेकी रहै। घूरन केँ आस छलै जे ओकरा लग मे बात राखल जा सकैए।

जेठका जखन अपन कनिमा सँ बात क' लेलक आ कनिमा फोन राखए लागलै तँ घूरन लपकि क' फोन झपटि लेलक। ई ओकर पहिल प्रतिकार कहल जेतै। कहलकै—'रौ, हम तोहर बाबू बाजि रहल छी।'

राम दास कहलकै—'गोर लागै छियह बाबू।'

घूरन केँ आशीर्वाद देबाक कर्मकाण्डक फुरसति नहि रहै। ओ बाजल—'एकटा बात कहै छियौ। तूँ सब जे डाइरेक्ट अपन-अपन घरबाली सब संग गप करै जाइ छिही, से उचित भेलै? एना मे गार्जन के कोनो भैलू रहलै? बाप मरय तँ मरय, कनिमा टा मौज करए ताकय, सैह ने?'

ओम्हर जेठका अवाक् भ' गेलै। एम्हर, जेठकी चैंकि उठल।

जेठका जवाब देलकै—'तोरा खाइ-पीयै मे कोनो दिक्कत भेलह की? हौ बाबू, हम सब आब करबारिक भेलियह, तूँ अपन निचैन सँ खाह-पीयह आ राम-राम करह।'

घूरन केँ प्रतीत भेलै जेना मुद्दा केँ तोपल जा रहल हो। ओ विषय पर आएल—से नै, हम पुछै छियौ जे एती-एती राति केँ जे जनीजाति केँ अइ उफरफाँट मे बजबै जाइ छिही—अइ ठाँ लुच्चा-लम्पट के राज छै बाबू! काल्हि हमरा कहै नइँ जइहें। ई सब हमरा पाँज मे नै छौ।'

जेठका केँ मुदा तैयो स्पर्श नहि केलकै। ओ समाधान प्रस्तुत केलक—'अपना संग-संग आनल करिहक। बिल बहुत उठि गेलै। आब राखै छियह।'

'हमरा पाँज मे नहि छौ' के जवाब 'अपना संग-संग आनल करिहक' सुनि क' घूरन केँ ने दुख भेलै ने सन्ताप, ओकरा उनटे अपन जवाबदेही मोन पड़ि गेलै। हँ भाइ, ठीके ने बात छियै। धियापुता कतबो किछु कए लियए, गार्जन तँ ओकरा गार्जनेक नजरि सँ देखतै कि ने! ओ अपन धर्म कोना छोड़ि देत! से, एहि समाधान केँ ओ स्वीकार क' लेलक। ओ चिकरि क' जेठकी केँ कहलकै—'सूनि लेलहक ने, घरबला की कहलकह! गार्जन छियह तँ गार्जन मानि क' चलै जाह, नै तँ खत्ता खेबह।'

तिरथा एखन धरि चुपचाप बैसल बाप-बेटाक संवाद सूनि रहल छल। ओ थोड़े आशंकितो छल, थोड़े जिज्ञासुओ। एतबा धरि जरूर जे जेठकीक प्रताप पर ओकरा भरोस रहै। घूरन के बात सूनि क' ओ तरेतर जेठकी केँ कनखी मारलकै। माने देखहक बुढ़बा के चलती!

तिरथाक कनखी पर जेठकी मूड़ी डोलेलक। माने देखि लिहक हमरो चलती! मुदा, तकर की सैह टा माने? ई माने नहि जे एतय सब किछु बनीमा के नियन्त्रण मे रहै?

बेटा के इशारा पाबि घूरन अपन शासन टाइट क' देलक। हरेक नीक-बेजाय पर पुतोहु सब केँ उचिती-मिनती करय लागल। हरेक काज कोन तरीका सँ हेबाक चाही, तकर निर्देश देबए लागल। आब ओकर विरक्ति सेहो टुटलै, दुख सेहो कम भेलै। ओ स्वीकार क' लेलक जे पाइ-कौड़ीक मामला भने पुतोहुए सब देखय, मुदा गार्जनक जे कर्त्तव्य छियै से एतबे टा तँ नहि छियै। पहिने ओ बेसी काल पड़ले रहैत छल वा कि यत्र-तत्र असकरे ढहनाइत। आब ओ टुटल टाट-फरकक मरम्मति करए लागल।

पुतहु सब केँ मुदा ई चीज एकदम्म नै पसिन्न। ओ सब घूरन मे आएल एहि परिवर्त्तन सब सँ अपना केँ उजड़ल-उपटल अनुभव करए लागल। ओकरा सब केँ गार्जन के जरूरति नहि रहै। ओकरा सब केँ भविष्य के जरूरति नहि रहै। ओकरा सभक लेल यैह टा बात काफी रहै जे ओकर घरबला कमाइ छै आ ओ सब सुख-मौज सँ रहैए आ बनीमा तिरथा दरजल छै।

ओहि दिनुका घटना सँ जेठकी बेमछि क' रहि गेल छल। ओकरा बाद जे घूरन के रुख मे परिवर्त्तन भेलै, ताहि मे ओकरा ताकने बाट नहि भेटै। छोटकी सेहो अगियाबेताल छल। ओ तँ कइएक बेर काली जी के कबुला धरि केलक जे अइ बुढ़बा केँ मरने बिन हमरा सब केँ सुख नहि लिखल अछि। मझिली बेसी काल चुप्पे रहै छल। मोरचा के सदस्या ओहो रहए जरूर, घूरन के रुख सँ घुटन ओकरो होइ जरूर, मुदा ओकरा पढ़ल-लिखल जनानी होइ के गुमान रहै। ओ अपन मोनक भाव बड़ी महीनी सँ प्रकट कएल करय, मुदा ई धरि जरूर लागै जे बुढ़बा सँ ओहो आहत अछि।

अगिला रवि केँ मझिलिए के पार रहै। सँझुकी पहर घूरन किरतन मे गेल। आँगन मे कहैत गेल जे किरतन मे जा रहल छियह, ओम्हर सँ घुरि क' एबह तहन फोन करै ले' हमरा संगे जइहह। फोन साढ़े आठ सँ नव बजेक बीच मे आएल करैक। तिरथा-दोकान धरि जाइयो मे आधा घण्टा लागिये जाइक। से, घूरन सोचने रहय जे आठ बजे धरि ओ किरतन सँ घुरि आएत।

किरतन सँ ओ पौने आठे मे घुरि आएल। आँगन आएल तँ पाबैए जे दुनू पुतहु टी. वी. देखि रहल अछि आ मझिली एकसरे फोन करए चलि गेल। किए चलि गेल एसकरे? हम तँ मना केने रहिऐ! ई तँ बड़ बेजाय बात! मुदा आब तँ जे भेल, से भेल। ओ विचारलक जे पाछाँ सँ ओहो जाएत। पुछलकै जे मझिली कखन गेल तँ पता लागलै जे बड़ी काल भेलै। आब तँ पहुँचलो हएत। घूरन आँगन सँ टार्च माँगलकै। टार्च आँगन मे नहि रहै। मझिली अपने संग लेने गेल छल। घूरन हाथ केँ लालटेम लेलक आ चलि देलक।

उतरबारि टोलक रस्ता मे एकटा बँसबाड़ि पड़ै छलै। बँसबाड़िक ओहि कात साहू टोल। ओ सिपहिया डेग देने बढ़ल जाइ छल कि साहू टोल लग दू गोटे केँ बाट पर जाइत देखलकै। एकटा मौगी एकटा मुनसा। दुनू अपना मे चैल-ठट्ठा करैत, हँसैत-बजैत। मौगीक आवाज तँ ओ तुरत्ते चीन्हि गेल। ओ वैह रहै—मझिली। ई मुनसा के छी? —घूरन केँ उत्सुकता भेलै। ओ मुनसा नहि रहै, छौड़ा रहै। सिंहटोल के अजैया। ओकर बदनामी सँ गामक एक-एक लोक परिचित छल। आ ताहि छौंड़ाक संग ई मौगिया लट्टा-पट्टी कए रहल अछि? एती राति कें? एहि सून सड़क पर? घूरन केँ बड़ी जोर तामस उठलै।

ओ चहटि क' आगू गेल। ओकरा देखिते दुनू ठाढ़ भ' गेलै। ठाढ़ आ अवाक्।

सहज भेल पहिने मझिलिए। ओकरा थोड़े एहि घटना के अंदेसा रहल हेतै। मुदा, घूरन मझिली केँ नहि किछु कहलकै। ओ अजैया केँ घेरलक—'किए रौ! एती राति केँ तूँ किए हमरा पुतहु के पछोड़ धेने छें?' ओकर स्वर तामसें काँपि रहल छल।

अजैया मुदा, बड़ आराम सँ छछलि गेल—' पछोड़ किए धेने रहबै हौ? आ से हमरा की पुछै छह? अपना पुतहु केँ पुछहक!'

घूरन के तामस आरो बढ़ि गेलै—'हौ छिनरीभाइक जनमल! हम अपना पुतहु केँ पुछबै? तोरा अइ गामक लोक चिन्है नहि छौ? हौ सार, भागै छह एतए सँ की नै भागै छह?'

अजैया प्रतिरोध केलकै—'एना किए बात करै छह हौ? हे यै, अहीं एकरा समझाबियौ।' अजैया मझिली के आवाहन केलक तँ मझिली आगू आएल।

मझिली बाजल—'हम हिनका कहलियनि जे सून-बिसून सड़क के पार कराए दिय' तँ एहि मे हिनकर कोन दोख छै?'

'चुप छुतहरनी!'—घूरन तते जोकर सँ मझिली केँ धोपलक, तते जोर सँ जे अन्हार गाछ पर जे चिड़ै-चुनमुनी जिराइत रहय से सब पंख फड़फड़ा क' उड़ि गेल, सड़क कात मे बौआइत एकटा कुकूर भू-भू भुकए लागल, साहु टोलक पाँच-सात टा लोक अपना-अपना दलान सँ बहरा क' घटनास्थल दिस आबि गेल। ओही लोक सब मे सँ एकटा रहै—नन्दलाल साहु, गामक नम्बर एक कविलाठ। अपना दलाने पर सँ ओ दर्शन बघारलक—केहि कारन डोल मे डोलत पानी? केहि कारन?

दुइये-चारि मिनट बितैत-बितैत परिस्थिति एकदम बदलि गेल रहय। मँझिली आब घेरा गेल रहय। मुदा, एते लोक जुटि गेने घूरन केँ अपन बात कहबा मे असौकर्य हुअए लागल रहै। मझिलीक देह सँ जे सेन्ट के भकभकौआ सुगन्धि आबैत रहै, सेहो ओकरा असहज कयने रहैक।

अपन बात कहए लागल मझिली—'देखै जाइयौ। ई बुढ़बा मुनसा अनेरे हमरा पर कलंक लगबैए। अइ बाबू केँ हम कहलियनि जे कनी उतरबारि टोल पहुँचा दिय' आ ई मुनसा हमरा पर शंका करैए। हमरे अन-पानि खाइए आ दस लोक मे हमरे बेइज्जत करैए। नीमक हराम अइ ई। जेहने अपने अइ तेहने सब केँ बुझै छै...

घूरन के तँ गराबकौर लागि गेलै। रौ बहिँ, ई ताल! ओकरा समझ मे नहि एलै जे आब ओ की करए? अपन स्वर केँ सहज करैत ओ मझिली केँ कहलकै—'चल, अँगना घुर...'

मझिली विरोध केलकै—'अँगना हम किए घूरब? हम अपन स्वामी केँ फोन करए जाइ छी, फोन क' क' घुरब।

घूरन शासन पर उतरि आएल। आबाज कड़ा क' क' बाजल—'नै, कोनो काज नै छै फोन करै के। हम कहै छियौ, सीधे अँगना चल...'

मुदा, मझिली के कपार पर आब जेना भूत सवार भ' गेल रहै। ओ एकाएक उग्र भ' गेल। घूरन पर ओ निर्णायक प्रहार क' देलक। कहए लागल—'देखै जाइयौ अइ बुढ़बा के रंग-ताल। हमरा अपन स्वामी जी सँ तोड़ि रहल हें। लेकिन, कान खोलि क' सूनि लैह बुरढौहरे! हमरा पर तोहर शासन चलै बला नहि छह। बेसी जे लबर-लबर करबह तँ तते चप्पल मारबह जे चानि परहक सभटा केंश खँहरि जेतह...'

सब माने मे ई एक निर्णायक प्रहार छल। घूरन पस्त भ' गेल। ओकर सबटा क्रोध बिला गेलै। सबटा निसां हवा भ' गेलै। जते मर्दानगी रहए ओकरा भीतर, सबटा मिनट मे थस्स ल' लेलक।

कननमुँह भ' क' ओ समाजक लोक दिस ताकलकै। सब क्यो ओकरे दिस ताकि रहल छल। ओ सबहक आँखि दिस देखलक। सबहक आँखि मे कुतूहल रहै। ककरो आँखि मे ने निर्णय रहै आ ने कोनो विरोध रहै। ओ अपन आँखि नीचाँ क' लेलक। ओकरा लग कहै लेल आब कोनो शब्द नहि रहै। निश्शब्दक यात्रा करैत ओ चुपचाप घुरि गेल।

साहु टोलक नामी कविलाठ नन्दलाल साहु एक कात सँ डायलॉग मारलक—केहि कारन घूरन घूर गये? केहि कारन?

ओहि राति केँ घुरलाक बाद घूरन सब सँ पहिल काज ई केलक जे बहुतो दिनका बाद खूब अहगर सँ भांग खेलक। से, तते अहगर सँ खेलक जे सुतली राति मे ओकरा डाक ल' गेलै। ओ कनेकाल बाप-बाप चिकरल, फेर अपने शान्त भ' गेल। घूरन मुदा मुइल नहि। आब कथू केँ छोड़बाक निर्णय ओ नहि केलक।

दोसर दिन भोरे ओकर निन्न टुटलै तँ शरीर जरूर थोड़े शिथिल रहै मुदा मोन मलिन नहि रहै। ओ आइ चारि बेर भोजन करत। भौजी सँ भेंट करए सेहो जाएत।

घूरन सहटि क' आँगन दिस गेल। तीनू पुतहु केँ सम्बोधित करैत बाजल—है, सुनै जाह। आइ सँ तोरा सब केँ हम भिन्न कए रहल छियह। हमरा सँ आब तोरा सब केँ नहि कोनो मतलब। अपन-अपन कमाबह, अपन-अपन खाह। आ खबरदार, दरबज्जा आ बाड़ी हम अपना हिस्सा मे लै छी। इम्हर नहि कोइ टपिहह।'

आँगन सँ बहरा क' घूरन खढ़-बाँसक जोगाड़ मे गेल। ओम्हर सँ घूरल तँ भीलो दास सँ कोदारि माँगने आएल। टोलक लोक जुटल तँ देखैए जे घामे-पसीनें तर-बतर होइत बाड़ी मे कोदारि चला रहल अछि। बाड़ी मे ओ तरकारी लगाएत, फल लगाएत। चैदह कट्ठाक ओकर डीह छै। दुआरि पर ओ पोसियाँ महीस बान्हत। दुआरि पर ओ आइए साँझ किरतन कराएत। आब ओ दरबज्जा पर फूलक गाछ लगाएत, भिनसरे उठि पराती गाएत।

घूरन सोचलक—तः। अनेरे लोक दोसर केँ सुधारै मे अपसियाँत रहैए। अपने टा जिनगी ने लोक केँ अपना हाथ मे होइ छै भाइ! छै कि नै?

छियानत

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।
—संस्कृत सुभाषित

राति मे सब क्यो विचार क' क' सूतल छल जे भिनसरे उठनाइ छै, झटपट तैयार हेबै आ भगवती-स्थान हाजिर। पहिल जे परीक्षा हेतै, से अपने छागरक। साँझे खन पंडा सँ गप-सप सेहो भइए गेल रहै। मुदा, सब सँ पहिने निन्न टुटलनि बुल्लू राजा के। ओ दुनू हाथ सँ आँखि मिड़लनि आ माँ केँ उठब' लगला—'मम्मी गे, उथ। बकली भेमियाइ छौ।'

बकरी, माने छागर, भेमियाएल नहि रहै। मुदा बुल्लू राजा केँ तीन मासक हिस्सक छलनि। जहिया सँ घर मे छागर आएल छलै, सब सँ पहिने बुल्लुए राजा उठै छला। शुरुआती किछु दिन धरि तँ छागरो मरदे भेमियाएल छलै ठीके। बुल्लू उठथि आ माँ केँ उठाबथि 'मम्मी गे उथ। बकली भेमियाइ छौ।' बड़ लोक हुनका बुझाबनि जे रौ बौआ, ई बकरी नै छियै छागर छियै—छा...ग...र। एकरा 'छागर' कहबाक चाही। बुल्लू तेजगर लोक छला। ओ मानियो गेल छला जे ई छागर छियै। अहाँ जँ कहितियै 'छागर', तँ ओ बुझि जैतथि जे अहाँ हुनकर 'बकली' दिय' कहि रहल छियै। मुदा, ओहि छागर संग हुनका बहुत दोस्ती रहनि। अहाँक देल नाम ओ कोना कबूल करितथि? तीने सालक छला, ताहि सँ की?

शुरुआती दिन मे छागर थोड़े दिन भेमियाएल छलै ठीके। मुदा, जल्दिए रिता गेल रहय। परिवारक एक सदस्य बनि गेल ओ। ताहू मे एहन सदस्य, जकर चिन्ता सब केँ रहै छलै। पहिल दिन जहिया बुल्लू ओकरा संग दोस्ती कर' गेल छला, ओ हुनका उठा क' पटकि देने छल। बुल्लू केँ बड़ जोर तामस उठल छलनि। बुल्लूक पापा सेहो तमसा गेल छला। छागर केँ मार' दौगल छलखिन। मुदा दादी हुनका रोकि देने रहनि—'नै मारियै बौआ। भगवतीक निहुँछल छियनि।' दादीक बात के मर्म केँ बुल्लू कतबा-की बूझि सकल हेता, से सब क्यो बूझि सकै छियै। मुदा, हुनका ई

जरूर लागल छलनि जे ई जे क्यो बन्धु थिक, किछु स्पेशल जरूर थिक। अपन तामस केँ ओ जल्दिए बिसरि गेल छला आ दोस्तीक हाथ फेर बढ़ौने रहथि। एहि बेर छागर सेहो मानि गेल छलै। आ तकर बाद तँ एहि तीन मासक अन्तराल मे एहि दुनूक दोस्ती तेहन परवान चढ़ल जे तकर जँ खिस्सा कहए लागी तँ हमर ई खिस्सा फीका पड़ि जाएत। जखन देखू तखन बुल्लू अपन बकली संग। पापाक एकटा दोस बुल्लू सँ चैल करथिन—

—एँ रौ बुल्लू, मासु खाइ ले ककरा-ककरा बजेबही?

—छब के बदेबै।

—मौसी केँ बजेबही की?

—हँऽ ऽ ऽ... मौछियो केँ बदेबै।

—रे, तँ कनी पहिनहि बजा ने ले। एहन कड़गर छागर आ से एसकरे रहै छौ। मौसी केँ बजा ले आ बियाह करा दही।

आब बुल्लू केँ की पता जे जकर मासु खाएल जाय तकरा संग मौसीक बियाह नै भ' सकै छै। मुदा ओ कहै—'नै।'

—किए रौ?

—एँह, मौछी हमर बकली केँ मालतै। आ, ओ भरि पाँज क' पकड़ि क' छागरक गरदनि मे लटकि जाथि।

से, एहन-एहन तँ बात छलै। घर मे अक्सरहाँ चर्चा होइ जे छागर कटतै तँ मासु खेबै। बुल्लू सेहो बाजल करथि—माछु खेबै, माछु खेबै। मुदा, ओ अलग बात छल। ओ बात एहि दोस्ती केँ कोनो तरहें प्रभावित नहि क' सकैत छल।

बकली, माने कि छागर, भेमियाएल छलै नहि। असल मे बुल्लूक निन्न दोसर ओजह सँ टूटल छलनि। बाहर सड़क पर बड़ जोर हल्ला भेल रहै। अष्टमीक भिनसरबा रहै कि ने! बुल्लूक घर भगवती-स्थानक बाट पर सड़कक कात मे रहनि। राति मे भगवती स्थान मे निशा-पूजा भेल रहैक। लोक एकरा निशां-पूजा कहै। ई भगवती महामाया अग-जग मे नामी। निशापूजा मे तांत्रिक अनुष्ठान राति भरि चलै। ताहि मे जानि नहि कत्तए-कत्तए सँ पियांक सब, गजेड़ी-नशेरी आ बॉस-बादशाह सब उनटि क' आबए। तीन बजे राति धरि तँ 'पूजे' चलल हएत। भिनसरबा मे ई पियांक लोकनि मारि आ हो-हल्ला नै करै जेताह तँ आर की करता? आ ताहि सँ निन्न टूटल छलनि बुल्लू राजाक।

माँओ तुरन्ते उठि गेल छली। ओ पापा केँ उठब' लागल छली—'उठबै नै?

उठबै नै?' 'उँ...उँ...' करैत पप्पोक निन्न टूटल रहनि आ बाजल रहथि—'उँह, चाय बनाउ पहिने।' मुदा बुल्लू राजा केँ बकली देखबाक रहनि। माँ केँ ल' क' ओ आँगन मे आबि गेला। बकली-घर मे बकली ओंघाइत रहै। जहिना कि बुल्लू पहुँचला, दुनूक गराजोरी शुरू भ' गेल छल। दुनू-तीनू घर मे आ दरबज्जा पर पाहुन सब सुतल छलाह। अन्हार एखन रहबे करै। बुल्लू केँ छागर-संग रमल देखि क' माँ फूल तोड़ए चलि गेली। आब कने काल मे बाबा उठता, दादी उठती, सब क्यो उठत। तखन, सब क्यो पूजा करए जाएत। आइ बकली कततै। बुल्लू माछु खेता! सब क्यो माछु खाएत। आइ बुल्लू नबका धोतीबला 'कुलता' पहिरता। हुनका पापा कीनि देने छनि। ओह, किए ने सब जल्दी-जल्दी 'उत्थै' छै!

बुल्लू के पापा आठ बजे उठ'बला पार्टी रहथिन। आठ बजे सूति क' उठता, नव बजे धरि चाह पीता, दस बजे धरि जलखै करता, तकरा बाद कोनो चैक पर जा क' ताश खेलेताह। दूपहर मे खा-पी क' फेर वैह। साँझ मे फेर वैह। मुदा, बुल्लू आ हुनकर बकली मिलि क' तीन मास मे हुनको सुधारि देने रहनि। भोरे-अन्हारे सँ बुल्लू तंग करब शुरू करनि—'पापा, बकली भेमियाइ छह, गुल्लल-पात लाब', मने गुल्लरि के पात आनि दियौ।...अंदी-पात लाब'...दिलेबी-पात लाब'..।

असल मे, अपनो जे स'ख सेहन्ता रहनि, तकरो दवाब हुनका पर छलनि। पिताजी जहिया सँ नाजिर बनल रहथिन, घरक आमदनी बढ़ि गेल रहनि। बुल्लूक मोन खराब भेल रहै तँ तही मे माताराम छागर कबुला केने रहथिन। तय केने रहथि जे दशमी मे छागर देताह। मुदा दशमीक समय मे, एहि परोपट्टा मे छागर भेटबैया कत्तय? डेढ़ हजार-दू हजार छागर एक्के दिन एक्के भगवती लग बलि पड़ैए। पोसै तँ अछि क्यो नहि। तखन तँ कीनि क' आनू। समान उपलब्ध रहत, तखने ने टको आगू मे भेटत। हुनकर यार-दोस सब विचार क' क' तीन मास पहिने कोसिकन्हा दिस ढूकल रहथि। बड़ी दूर मे जा क' ई छागर भेटल रहनि। जुलुम के कड़गर। दाम छव हजार। दोस लोकनि तेख चढ़ा देने रहनि—नाजिर के बेटा छहक बाबू। सौंसे गाम मे तोहर छागर जँ 'फस्ट' नै केलक तँ की केलहक? साढ़े पाँच हजार मे छागर ओ कीनि अनने रहथि। यों मोट के ओकर गरदनि, दोस सब कहनि—पाड़ा छियै, पाड़ा। यों सोंटल देह, चलए तँ धरती दलमल-दलमल करै। ककरा नै मोन मे सेहन्ता जागल हेतै जे एह, दू बुट्टी मासु एकर जँ भेटितय! बघुआ क' ताकय तँ केहनो जाबिर जनाना एक बेर सहमि जाथि। ताहि छागर के मालिक रहथि बुल्लूक पापा। सीना तानि क' चलथि। वर्णन क' क' सुनाबथि जे ई छागर कोन धरानियें

हम कीनि क' अनलहुँ, आ कोना एकरा दाना खुआबै छियै आ गुल्लरि के पात कतए-कतए सँ लाबै छी। से, दवाब हुनका अपनो रहनि। जें कि पापा कने अलसाथि, बुल्लूक तान शुरू भ' जाइन—हौ पापा, बकली भेमियाइ छह...

चाह पीबि क' बुल्लूक पापा उठला आ बहरिया टोल दिस विदा भ' गेला। हुनका बजनियाँ सब केँ बजा क' अनबाक रहनि। दशमीक समय मे ओहुनो बजनियाँ के बड़ फेदरति। गाम मे बहुतो लोक धनीक भ' गेलाहें, सब केँ बजनियाँ चाहिऐक। एम्हर कुल मिला क' दुइए टा बजनियाँ-पार्टी। कतबो अहाँ मजदूरी आ बकसिस देबै तँ तैयो ओहि सँ बेसी दस घर मंगल बजा क' ओ सब कमा लेत। तें बजनियाँक टाँट। तखन तँ, गाम मे अहाँ प्रभुत्वशाली छी, तकर एकटा इहो पहचान भेल जे दशमी मे अहाँक छागरक संग बाजा बाजल। बुल्लूक पापा सबटा जस आ सबटा प्रतिष्ठा एक्के टा छागर मे कमा लेब' चाहै छलाह। कतए-कतए सँ ओ अपन कुटुम सब केँ मासु खाइ लेल बजौने रहथिन। गाम मे फस्ट छागर के मालिक छला, प्रतिष्ठा के प्रश्न रहै।

एम्हर बुल्लू के माँ हबड़-हबड़ चाह बना क' पाहुन सब केँ देलखिन आ नहाइ लेल चलि गेली। दादी पूजाक सरंजाम कर' लगली। जौ-अच्छत तँ घर मे रहै, मुदा कुश निपत्ता। कुश रहतै कोना घर मे? कहियो कुशोत्पाटिनी दिन बाबूसाहेब जाथि कुश उखाड़ए तखन ने? पड़ोसिया सँ माँगि क' अनने छली पछिला बेर। ताहि मे सँ दू टा बीट जुगुता क' रखने रहथि कोनो कोन मे। एखन से भेटिये नहि रहल छलनि!

ओम्हर दरबज्जा पर पाहुन लोकनिक बीच किसिम-किसिम के गप्प-सरक्का चलि रहल छलै। चर्चाक विषय की तँ बलिप्रथा। एकटा क्यो रहथि, तिनका सब क्यो मिलि क' बूड़ि बना रहल छला।

—अहाँ सब जे कहू, मुदा हम बलिप्रथा के विरोधी छी।

—अहाँ मासु खाइ छी कि नहि?

—हँ। मासु तँ खाइ छी। मुदा तकर ई मतलब नै जे...

—मतलब के बात छोड़ू। अपने जखन मासु खाइ छी तँ अहाँ बलि के विरोध कोना क' सकै छी। पहिने अपने सुधरू। हम सुधरेंगे युग सुधरेगा।

—तँ एकर ई मतलब नहि भेलै जे जगतजननी जिनका मानै छियनि, तिनका सामने मे आनि क' छागर के गरदनि काटि दियौ।

—यौ सरकार, अहाँ विज्ञानी आदमी बुझा पड़ै छी।

—हँ। विज्ञान-बुद्धि राखब कोनो बेजाय बात तँ नै भेल।

—नै। बेजाय कोना हएत। लेकिन, एकटा बात कहू।

—की?

—विज्ञान-बुद्धि दस-बीस बरख पहिने बेसी रहै गाम-घर मे, आ कि आइ-काल्हि बेसी अछि?

—आइ-काल्हि बेसी अछि।

—एकटा बात आरो कहब?

—पुछू।

—भगवती-स्थान मे छागर आ पाड़ा के बलि दस-बीस बरस पहिने बेसी पड़ै छलै कि आइ-काल्हि बेसी पड़ैए?

एहि प्रश्नक उत्तर बेर मे सब क्यो झौहरि कर' लगला—आइ-काल्हि बेसी पड़ैए, आइ-काल्हि बेसी पड़ैए...

सात बजैत-बजैत सब क्यो नहा-सोना क' तैयार भ' गेल। बुल्लू अपन धोती-कुरता-सेट बला नबका अंगा पहिरि लेलनि। माँ गोसाँउनि-घर मे पूजा करै छलि। एक अध्याय दुर्गापाठ कील-कवच समेत भ' गेलनि तँ बहरेली आ बुल्लू केँ तिलक-ठोप लगा देलखिन। बुल्लू मस्त भ' गेला। दौगल-दौगल गेला आ अपन तिलक-ठोप केँ छागरक मूड़ी मे रगड़ि ओकरो तिलका देलखिन। तखन ओ हल्ला कर' लगला—तलै तल, तलै तल। आब बकली कततै। आब माछु खेब्बै...। तलै तल, तलै तल... मने, चलै चल!

मुदा, पापा केँ घुरैत-घुरैत आठ बजि गेल। ओहो बूझि गेला जे बजनियाँ केँ बजाब' मे तेरह आफत कोना होइ छै। ओ लोकनि पहिने गमैया छागरक बेर मे बाजा बजबितथि, तखनहि कोनो दोसरक तलता देखि सकैत छला। गमैया माने डीही लोकनिक दिस सँ। बहुत सरंजाम होइ छै तकर। एक जोड़ छागर, एक जोड़ भेड़ा आ तैपर सँ एकटा पाड़ा। बजनियाँ लोकनि कहनि जे जाउ ने, अहाँ सब क्यो केँ लेने अबियनु। ओही ठमा तँ हम सब रहबे करब बाजा बजा देब। मुदा, ई गप कोनहुना मान' बला गप नै छलनि। भाइ, अपन घर-आंगन मे बाजा बाजल नहि, अड़ोसिया-पड़ोसिया, पाहुन-परक देखलनि-सुनलनि नहि तँ एहन बाजाक बजनहि की फैदा?

बजनियाँ लोकनि आबि गेला। गोसाँउनि घरक चिनमार पर, मोखा पर धूप-दीप जराओल गेल। ओसार लागि क' ओ लोकनि मंगलध्वनि बजाब' लगला—'जय जय भैरवि असुर भयावनि पशुपति-भामिनि माया...' आ, शोभायात्रा बहरेबाक तैयारी हुअ' लागल। स्वीटी दीदी छागर केँ पहिरेबाक लेल माला गँथने छली। से

माला पहिराओल जाय लागल तँ पता लगलै जे ओ छोट भ' गेल। माताराम स्वीटी दीदी केँ झझकार' लगलखिन—'गै बोकनि, तोरा कनिमोा टा अँटकर नै भेलौ गै! कहू त'। ओतेक अगरमस्त छागर लेल एतनी टा माला।'

माँ थोस-थाम्ह केलखिन—'एकटा माला आरो छै। बौआ ले' बनेने रहियै। वैह पहिरा देथुन।'

—कहू त' भला। बौआक माला, आ से छागर केँ पहिरा दिऐक?

—तँ की हेतै। ओहो तँ भगवतियेक निहुँछल छियनि।

आ कि, बुल्लू शुरू केलनि हल्ला—'हँ दै। पैला दही। हँ दै। पैला दही।' मने, पहिरा दही।

शोभा-यात्रा निकलि चलल। आंगन धरि सीमित 'जय जय भैरवि' आब अड़ोस-पड़ोस केँ गनगनाब' लागल। यात्रा मे बीस गोटे सँ कम की रहल हेता ! बीच-बीच मे सब नारा लगबथि—बोलो बोलो, मैया जगदम्बा की ज...य! बजनियाँक ढोल जेना साफ-साफ जैकारा दैक—काली तारा, काली तारा... पिपहीवादक आब नबका धुन पकड़ि लेने छला—'बाबा बैदनाथ हम आयल छी भिखरिया, अहीं के दुअरिया ना...'। बुल्लू राजा उछलि-उछलि क' चलि रहल छला। उछलै छलै सब के हृदय, पप्पो के, बाबो के, पाहुनो के, मुदा तकर प्रत्यक्ष आनन्द बुल्लुए उठा रहल छला।

भगवती स्थानक प्रांगण बड़की टाक। ओहिठाम पाँच सय लोक अटान ल' लिअए, ततबा तँ जरूरे। आ से प्रांगण लोक सँ खचमखच भरल छल। गौआँक लेल तँ ई बेरे छलैक, सब घर सँ छागर कटेबाक संकल्प छलैक, आ तकर ई शुभ मुहूर्त्त बीति रहल छल। अनगौंओ सब मुदा मेला देखबाक संग-संग बलियो देखबाक कुतूहल मे ढेरीक संख्या मे जुटि गेल छला। प्रांगण मे लोकक मिस पड़ै छलै। ताहि पर सँ एकटा ढोलबज्जा अपन मोन, प्राण आ आत्माक पूरा शक्ति लगा क' ढोल केँ पीटि रहल छल आ धुन निकालि रहल छल—काली तारा... काली तारा...। धिया-पुता आ किछु आनन्दमूर्त्ति लोक सेहो ओकरा घेरने रहै आ ओकरा संग नाचि रहल छल। ओ घामे-पसेनें चूर छल। मुदा, जान-प्राण अड़पने छल, तें ओकर कला बहुतो केँ आकृष्ट करै छलै। लोक ओकरा ढोल पर दसटकही चढ़ाबै आ दारूक पाउच दैक। पाउच केँ ओ कुरताक जेबी मे राखय जे कि पहिनहि सँ बेस फूलल छल। जें कि ओ कने थाकनि अनुभव करए, ढोल राखि एकात मे जाए आ गोटे पाउच केँ दाँत सँ चीड़ि मुँह मे उझीलि दै। अइ बेर मे क्यो-ने-क्यो पंडा-पुत्र सेहो ओकर संग ध' लै। भोर सँ ई लोकनि कत्ते पीबि गेल छला, तकर हिसाब अर्जुन झा छोड़ि क' ककरो लग नहि छलै। अर्जुन झा बतहबा। गाम मे हरेक साल दू-चारि लोक

बताह होइ छल। ओहि मे सँ गोटे-आधे आनन्दमूर्त्ति बहराबए। एखन ई स्थान अर्जुन झा लेने रहथि। आब जाधरि जीता अर्जुन, ईश्वरीय सन्देश केँ आम जनता धरि वैह पहुँचाबैत रहता। आनन्दमूर्ति बनि क'।

अर्जुन झा ललका सालुक पहिरने छला आ ललके सालुक ओढ़ने छला। पाँच हाथक काया आ ताहू सँ पैघ एक लकलक पातर छड़ी हाथ मे। ताहि छड़ी मे मारिते रास ललका कप्पा ठामठीम बान्हल। बड़का-बड़का केश, ताहि मे जट्टा पड़ल, पैघ-पैघ दाढ़ी-मोंछ, जँहपटार चतरल-छितरल। जाहि दिस ओ हुलथि, जोर सँ होहकारी देथि—'होऽऽह... आ गिया जमराज। बोलो बोलो चण्डी-कतैनी की...। हुनकर आवाज मे ततबा जोश रहनि जे जेहो-ने-सेहो हुनकर नारा मे संग पूरि दैनि—'जय'। बच्चा सब थपड़ी बजा क' हो हो करय। तकर पूरा आनन्द अर्जुन झा लेथि। प्रांगण के जाहि कोन मे ओ चलि जाथि, दस-बीस लोक हुनकर संग धयने रहनि। से, एकटा ओ ढोलबज्जा आ दोसर ई अर्जुन झा—दुनू मिलि क' मिस पड़ैत एहि भीड़ मे हलचल मचा रहल छला।

भव्य आ शुभ्र-शाभ्र ई प्राचीन भगवती मंदिर जतबा सुंदर छल, ताहू सँ बेसी सोहाओन लागि रहल छल। मंदिर केँ खूब क' सजाओल गेल छलै, बात ततबे नहि छल। भक्त लोकनिक मुँहेंठ सँ बहरा-बहरा क' उल्लास आ उमंग मंदिर पर जा खसैत छल। एक-एक चुहचुही मिलि क' मंदिर केँ हजार चुहचुही सँ भरि द' रहल छल। मंदिरक मुख्य द्वार पश्चिम दिस खुलैत रहैक। ताहि ठाम दुनू दिस दू टा पताका फहराइत। तकरा आगू मे छोटका महिखा गाड़ल रहै। जेना एकटा विकराल राक्षस कंठ धरि माटि मे गड़ल हो आ अपन दुनू हाथ ऊपर उठौने हो। एही दुनू हाथक बीच मे छागरक गरदनि फँसाओल जाइत छल। गरदनि फँसेलाक बाद ऊपर सँ किल्ली ठोकि देल जाइक। एक पण्डा छागरक टाँग सब केँ आपस मे फँसा क' पाछू दिस जोर लगा क' घीचै। दोसर पंडाक हाथ मे तरुआरि। तरुआरि उठेबा सँ पहिने पंडा जजमान दिस याचनाक हाथ बढ़ाबथि। दसटकही सँ नमरी धरि। क्यो-क्यो दारूक पाउच सेहो। कोनो छागर एक बेर तँ कोनो दू-तीन बेर पुकार लगबए—'में...' कि तावत तरुआरि ओकरा घररि दैक।

छोटका महिखाक एक लग्गा आगू बड़का महिखा गाड़ल छलैक। तकरा लागल भरि छातीक तरहरा खूनल। महिखा ततबा मजगूत छल जे अरना पाड़ा केँ जँ तरहरा खसा क' ओकर सींग महिखा मे बान्हि देल जाय तँ की मजाल जे एक्को बेर ओ 'बाँऽऽऽ' के टाहि मारि सकए! पाड़ा केँ घररि क' नहि काटल जाइत छल। ओकरा पर मारल जाय—छह। कै छह मे कोन पंडा कै मन के पाड़ा केँ काटलनि, ताहि सँ पंडाक अकबाल नापल जाइत छलनि। एक्के छह मे पाड़ा काटि देनिहार

पंडा जीक चरण ततेक लोक छूबनि आ ततेक दक्षिणा भेटनि जे हुनका अकच्छ हेबाक भाव प्रकट कर' पड़नि। मुदा, मानुषी शक्ति सँ ई अकबाल संभव नहि भ' पबैत छल। एहि असंभव केँ संभव बनबैत छल दारूक पाउच। आ, ढोलबज्जाक नगाड़ा। आ, अर्जुन झाक नारा—'आ गिया जमराज।' जहिना कि एकटा पाड़ा कटि जाय, अर्जुन झा बड़े चुमकीक संग चिकरथि—'एक विकेट डाउन,... ओ चुमकी पंडा केँ उमंग सँ भरि दै छलनि।

बुल्लूक शोभायात्रा, अबैत-अबैत भगवती स्थान लग आबि गेल रहए। बुल्लू राजा बहुत प्रसन्न रहथि। दोस कका हुनका उठा क' कन्हा पर बैसा लेने रहनि। घोड़ाक सवारी के मजा ल' रहल छला, बुझू। ताहि पर सँ ढोल-पिपही बजैत रहै। हँसी-ठहक्का चलैत रहै। दोस कका पुछथिन—'की बुल्लू, मस्ती छै ने?' बुल्लू गरदनि केँ टेढ़ करैत, मुँह केँ कलाकारी मे बिचकबैत अनधुन हँसीक संग उतारा दैनि—'हँऽऽऽ' आ दुनू हाथ हवा मे लहरबैत नारा लगबथि—'दुलगा माय की जाय।'

प्रसन्न हुनकर पापा सेहो बहुत छला। बाट मे बहुतो बलिदानी-पार्टी सब भेटनि। ओ सब छागर कटा क' घुरि रहल रहए—काटल छागर केँ लादने। सब क्यो एक भरपूर नजरि हिनका छागर पर दैनि। पापाक नजरि ओहि आदमीक आँखि पर रहैत छलनि। आदमीक आँखि मे एक सतृष्ण तरहक भाव पलछिन मे देखा जाइक। एहि मस्ताना छागरक लेल ओहि आँखि मे प्रशंसा रहै। ताहि संगे, एक सूक्ष्म व्यथा सेहो रहै जे हमरा छागर सँ हिनकर छागर कड़गर छनि। ताहि संगे, एक उद्दीप्त लालसा सेहो देखाब दै जे आह, एहि कड़ाचूर छागर के मासु जँ दुइयो बुट्टी भेटि जाइतै तँ की कहना छै! बुल्लूक पापा एही अठखेली सँ आनन्दित भ' रहल छला। चिन्हार लोक सब कहनि—'भाइ, अहाँ तँ डिग्गा बजा देलिऐक।' ओ 'हें हें' हँसी हँसथि। हुनकर तपस्या पूर्ण भ' गेल छलनि।

मंदिर-प्रांगण के सिंहद्वार लग मे चारि टा कल गाड़ल रहैक। मंदिर गेनिहार लोकनि ओहिठाम पयर-हाथ धोथि। ओही कल पर छागर केँ नहाओल जाइत छल। कले के बगल मे प्राचीन कूप छलै। ओहि सँ अछिंजल भरल जाइक। बुल्लूक पापा, सब गोटे मिलि क' छागर केँ नहाब' लगला। छागर कें, एहि तरहें पकड़ि-धकड़ि क' नहाएल जाएब पसिन्न नहि पड़ि रहल छलै। ओ कुनमुना रहल छल, उछलकूद मचा रहल छल। बुल्लू केँ मुदा ई दृश्य बड़ नीक लागि रहल छलै—इह, तूँ बल चलाक... पूजा मे सब क्यो नहाएल आ तूँ नै नहेबऽ—बुल्लू सेहो आगू गेल आ चुरूक मे पानि ल' ल' क' छागरक माथ पर छिटका मारलकैक। छागर केँ ई आरो बेजाय लागलै। ओ ढाही लेब' बढ़ल आ बुल्लू केँ ठेलि देलकै। ई साइत उलहन

छलै—अरे बुल्लू, तुहूँ... जेना सब क्यो करैए तहिना तहूँ करबह। मुदा, बुल्लू केँ की पता?

छागर केँ नहा-धुआ क' मंदिर आनल गेल। मंदिर मे भारी भीड़ छलै। छागर सभक नंबर लागल रहैक। एक दर्जन के करीब पंडा छला, जे बलि-पूजा करा रहल रहथि। पहिल पूजा होइन भगवती के। तखन तरुआरि के पूजा कएल जाय। तखन, फूल आ अक्षत मंत्र केँ छागरक माथ पर चढ़ाओल जाय। कने काल छागर अप्रतिभ रहए। तखन ओ गरदनि केँ झटका दियए आ फूल-अक्षत केँ निच्चाँ खसा दैक। पंडा कहथिन—'भए गेल परीक्षा। आब दक्षिणा दियौ।' दक्षिणा द' क' जजमान अपन छागर केँ लेने महिखा लग हाजिर होथि।

महिखाक चारुकात खून के धार जमल छल। खूने पर सँ खून आ ताहि पर सँ फेर खून। छागरक संख्या ततेक बेसी रहै जे बलि केँ रोकि क' एखन सफाइ नहि कराओल जा सकैत छल। पंडा कोसिस करथि जे काटल छागरक धड़ केँ अनामति जगह दिस फेकल जाय। मुदा से जगह बहुत तेजी सँ निघटि गेल छल। वातावरण मे एक भारी-भारी सन गन्ध व्याप्त रहै। एकरा ने दुर्गन्ध कहल जा सकैत रहय, ने सुगन्ध। बस, भारी-भारी सन गन्ध छल जे फेफड़ा केँ असहज लागि रहल छल। ई टटका खूनक गन्ध रहय। एहि गन्धक निस्तार के एक्के टा उपाय छल जे वातावरण मे खूब हो-हल्ला व्याप्त रहय। से व्याप्त छल। ई काज क' रहल छल छला-बजनियाँ, ढोलबज्जा, अर्जुन झा आ मारिते रास उत्साही आनन्दमूर्त्ति लोक सब।

पापा छागर ल' क' मंदिर सँ बहरेला आ महिखा लग एलाह। सब क्यो हुनका संग छलनि। बुल्लू सेहो। बुल्लू जहिना कि महिखा लग आएल, एकटा दोसर लोकक छागर काटल जा रहल छलै। छागरक अगिला दुनू टाँग केँ ऊपर मोचाड़ि क' आ पछिला दुनू टाँग केँ दोसर हाथ सँ पकड़ि क' पण्डा छागरक मूड़ी महिखा मे देलखिन, आ ओम्हर सँ तीर' लगला। छागर बाजल—'मेऽऽ'। बुल्लूक ध्यान ठीक एही काल मे छागर दिस गेलैक। दोसर पंडा तरुआरि उठौलनि आ छागर केँ घररि देलखिन। ताही काल मे कोम्हरो सँ अर्जुन झा जुमि गेला आ चिकरलाह—'एक विकेट डाउन।' बुल्लू केँ बहुत खराब लगलनि। ओ अपन दुनू आँखि मूनि लेलनि। हुनकर छाती जोर-जोर सँ धड़कि रहल छलनि। कण्ठ सूख' लगलनि। माथ मे लगलनि जे गरम-गरम गोला कोनो नाचि रहल हो। ओ दोबारा आँखि खोललनि तँ खूनक जमल धार पर छागरक धड़ ओंघरा रहल छल। ओ भरि पाँज केँ दोस कका केँ पकड़ि लेलनि।

पापा केँ बुल्लू दिस तकबाक फुरसत एखन नहि छलनि। ओ कोसिस मे रहथि जे जल्दी सँ छागर कटि जाय आ जल्दी ओ निचैन होथि। पंडा हुनका दिस अपन याचनाक हाथ बढ़ौलनि। पापा एकटा नमरी हाथ मे ध' देलखिन। पंडे लोकनि तय

क' लेने रहथि जे ई कड़गर छागर अछि तें एकरा काटै लेल दुनू पंडा अगरमस्त होना चाही। सैह कएल गेल छलै। बूढ़ा पंडा केँ भय रहनि जे एहन कड़गर छागर के मूड़ी महिखा मे अँटबो करतै की नहि! ओ एकटा अगरमस्त केँ कहबो केलखिन जे रे, कनी अँटकर कए लही। मुदा क्यो हुनका कहब पर कान-बात नहि देलक।

आखिर मे समस्या एलै वैह। छागरक अगिला दुनू टाँग केँ मोचाड़ि आ उनटा क' आ पछिला दुनू टाँग केँ तौलैत जखन अगरमस्त ओकरा उठेलक आ मूड़ी केँ महिखा मे देलकै, ओ नहि अँटलै। महिखाक फाँक छोट छलै, छागरक गरदनि बेस मोटगर छल। छागर आसमर्द क' रहल छल—'में... में...

आब ? आब की उपाय हएत ? एकटा नवजुआन पंडा बजलाह—'छागरक सींग केँ पाड़ा जकाँ महिखा मे बान्हि दै छियै आ एकरा घररि दहक।' घररबाक रहनि जिनका, से हाथ मे तरुआरि लेने ठाढ़ छला। हुनका नवजुआनक ई बात बहुत नापसिन्न भेलनि। ओ तमसा क' बजला—'हौ सार, तूँ बड़ काबिल। पाड़ा बला बिध हेतै छागर मे ? ...आ अपन तामस केँ बहार करबाक लेल नवजुआन दिस पएर उसाहलनि।

नवजुआन पाछू दिस पड़ाएल। पाछू खूनक जमल धार छल। धार तर मे सिमटी। से मारिते पिछड़ाह। नवजुआन के सन्तुलन बिगड़ि गेलनि। ओ धड़ाम सँ खूने पर खसि पड़लाह। कोलाहल मचि गेल। नवजुआनक सौंसे देह, सबटा वस्त्र खून सँ लथपथ भ' गेल। मुदा झट द' ओ उठि क' ठाढ़ो भ' गेला। अर्जुन झा एम्हरे टुघरल अबैत छला। ई दृश्य देखलनि आ हल्ला केलनि—आ गिया जमराज.

नवजुआनक बाप पंडा ओहीठाम विद्यमान छला। हुनका ई सबटा दृश्य बहुत अपमानजनक लगलनि। बेटा पर हुनका बहुत क्रोध भेलनि—बुझू त' सम्हरि क' चलियो-बूलि नहि सकैए, ई सब दुनियाँ मे की कए सकत! अर्जुन झाक नारा सुनि क' तँ हुनका आगि लेसि देलकनि। ओ आगू बढ़ला आ नवजुआन केँ एक आर जोरदार धक्का लगौलनि। ओ खून के धार सँ निकलल अबैत छल, फेर ओही मे ओंघरा गेल। चारुकातक लोक झौहरि कर' लगलै—मारि देलकै, मारि देलकै...

अगरमस्त पंडा छागर केँ एखनो धरि अपन दुनू हाथ मे तौलने छल। छागर भयावह स्वर मे भेमिया रहल छल। मुदा ओकरा धरती पर राखल नहि जा सकैत छलै। से करब अशुभ होइतिऐक।

खूनक धार मे ओंघरायल नवजुआन दोबारा उठि क' ठाढ़ भ' रहल छल। सैकड़ो लोकक भीड़ एहि दृश्य केँ देखि रहल छल। ओ आब आरो खून मे नहा गेल रहए। ओकर केश, मुँह, कान, मोंछ—सब कथू खून सँ सनमा-बटोरबा भेल रहए। ओ थाहि-थाहि क' सम्हरि-सम्हरि क' खूनक धार सँ बहार निकलि रहल छल।

एम्हर, तरुआरिबला पंडा बजलाह—'चल, राख गरदनि केँ महिखा मे।' छागरक गरदनि महिखा मे राखल गेल। मुदा ओ कतहु अँटय! तरुआरिबला पंडा तरुआरि उठौलनि। तरुआरिक छीप सपाट छल। ओहि सँ ओ छागरक गरदनि पर धुरमुस देब' लगलखिन। एक। छागर बाजल—मेंऽऽऽ...। दू। छागर बाजल—'में ऽ ऽ ऽ...। तीन! छागर शान्त...

ओम्हर, खून मे नहाएल ओ नवजुआन चलि आबि रहल अछि। आ, एम्हर छागर दोसर बेर बाजैए—में... —एही बीच मे बुल्लू राजा अन्तिम बेर आँखि खोलने छला। बहुत जोर सँ ओ चिकरला—'मम्मी गे...'। आ अचेत भ' गेला।

छागर निष्प्राण भेल तँ भेल मुदा महिखा मे ओकर गरदनि अँटि धरि जरूर गेल। तरुआरि बला ओकरा घररि देलखिन। सब क्यो बजलाह—माता जगदम्बा की जय...

दोस कका बुल्लू केँ जल्दी सँ कोरा मे उठौलनि आ कल पर दौगल पहुँचलाह। पापा सेहो पाछुए लागल एलखिन। बुल्लू केँ पानिक छिज्जा देल गेलनि। ओ आँखि खोलि देलनि। पापा हुनका दुलार कर' लगलनि। बुल्लू पापाक हाथ केँ धकेल देलखिन। बजला—'पापा, हम माछु नै खेब ऽ ऽ...'

अर्जुन झा सेहो पाछुए लागल दौगल आएल छला। ओ सबटा दृश्य देखि रहल छला। बुल्लूक बात केँ सुनि क' ओ बजला—'एक विकेट डाउन...'

पापा, अर्जुन दिस बघुआ क' तकलखिन।

समर-गाथा

सरकार बदलैत अछि तँ अत्याचार करैबला समुदाय सेहो बदलि जाइत अछि। नै बदलैत अछि तँ ओहि शान्तिप्रिय जनताक दुख-दर्द, जकरा सँ ई देश बनल अछि।

—यात्री जीक एक काव्य-भाव

खोभारी मुखिया केँ मुँहपुरुख आ बजन्ता लोक बूझल जाइत छलनि। अपना टोलक ओ मानिजन छलाह से तँ उचिते, दोसरो टोलक बेगरतूत लोक सब हुनके ताकै छलनि। पंचैती जे बैसे से समस्या चाहे घरौआ हो कि जतियारी, खोभारी मुखिया अपन समाधानक बन्दूक सँ ठाँय-ठाँय गोली चला क' समाप्त क' दैत छलाह। क्यो-क्यो मुँह घुमा क' कहबो करै—विधायक का आदमी है कि खेल है!

आ से खोभारी आइ बड़का जचना मे पड़ि गेल छला। आइ धरि जतय ओ गेला पंच बनि क' गेला। ताल ठोकि क' फैसला केलखिन। मुदा आइ हुनके समस्या पर पंचैती बैसि गेलै। एहन कोनो बात नै जे खोभारी कोनो अपराध केने छथि। बात इहो नै जे समाज हुनका कहल मे नै छनि। समस्या मुदा एहि सब सँ बड़ भारी। विपति हुनका पर पड़ि गेलनि अछि आ तें सौंसे परोपट्टाक लोक केँ बैसाबए पड़ल छनि। यैह बात सुलफा जकाँ खोभारी मुखियाक मोन केँ भेंसै छनि। हमरा पर विपति पड़ि गेल? खोभारी मुखिया पर? हम विधायक का आदमी है भाइ! पाँच हज्जार भोंट हमरा पाकिट मे हए। विधायक हमरा डेरा मे आबि कए दारू पीता है! छोटा सँ बड़ा तक सब लग आना-जाना है। आ से हमरा पर विपति?

एही महाझंझावात मे ओझरायल रहला खोभारी। गड़ाइन सँ भरल क्रोध मे झड़कैत रहला। सौंसे पंचैती ओ बेसी काल चुप्पे रहला। एकाध बेर बाजैयो लगला तँ तेहन अगियाबेताल भ' गेलखिन जे विधायक जी चुप करा देलखिन। एक बेर ओ कहए लागलखिन—'आइ हमर जीना बेकार भए गेल विधैक जी! खोभारी के बाड़ी आइ टुटि गेलै। सौंसे निषाद समाज के इज्जत आइ धूल मे मील गेलै।'

एहि बात पर विधायक जी बड़ा मेंही सुलफा भोकलकनि-''ई बात नै कहक खोभारी! तोरे टा बाड़ी नै टुटलहें। दस टा आरो जाति-भाइ के बाड़ी टुटलैए।' बात कें, ओना तँ तुरन्ते आगाँ बढ़ा देने छलखिन—'एकर उपाय की होना चाही, से ने हम कहि रहल छियह!'

आगाँ चलि क' एकर मतलब लागल रहै खोभारी कें! मुदा ओकरा होश कहाँ रहै? ओ एम्हर उड़ैयो लागल रहै बहुत। पचासो आदमी लग ओ बाजल हेतै जे पाँच हज्जार भोंट तो हमरा पाकिट में है। विधायक केँ ई बात कतौ खराब नै लागै?

पंचैती मे एहि बात पर विचार हुअए लागलै जे एकर उपाय की होना चाही।

बी. डी. ओ. आ दरोगा मिलि क' खोभारी मुखियाक बाड़ी उजारि देने छलैक। कुल एगारह टा बाड़ी उजारल गेल छल। आन लोक सब असथिर रहय। सब क्यो यैह सोचैत रहय जे देखियै, खोभारी भाइ की करै छै? छोड़ि तँ नहिमो ने देतै!

विधायक जी बजलाह—'देखहक खोभारी, हम कलक्टर सँ जाय कए भेंट करबै। बी. डी. ओ. केँ महग पड़ाए देबै। ओकर बदली करा कए हम अइठाम सँ भगाइयो देबै। लेकिन, सब के जड़ि मे छै परतिष्ठा। परतिष्ठा तँ तोहर सब के घुरि कए नै एतह। अइ बारे में सोचहक।'

ब्लॉक मे नबका बी. डी. ओ. आयल रहय। एकदम छरेछाँट नौजबान। पहिले पोस्टिंग रहै। ओ मरदे विधायक केँ गुदानबे नै करै। ब्लॉक के नियम रहै जे विकासक जते काज हैत, ओहि मे दू परसेन्ट विधायक जी केँ भेटतनि। ताहि पुरान नियम केँ ई बी. डी. ओ. तोड़ि देने रहै। ओ विधायक के डेरा पर दरबारो मे शामिल नहि होइत छल। एकदम ठसक मे छल ओ। विधायक जी केँ सीधे-सीधी लाखो टाका सलाना के घाटा रहै। ओ ताक मे छलाह। मामला एकटा ई हुनका बजरि गेल रहनि। ओ जनता केँ आगाँ करए चाहैत रहथि। ओ कहलखिन—'सब के जड़ि मे परतिष्ठा छै खोभारी! अइ बारे मे सोचहक।'

फेकन मुखिया के बेटा जागेसर बाजल—'अहाँ हमरा मदद करबै सर? अइ सार बी. डी. ओ. केँ हम बीच चैक पर गोली मारि देबै।'

जागेसर एहि टोल मे एकटा बढ़िमा वीर बहरायल अछि। बम-पेस्तौल राखए लागल अछि। समुच्चा गाम मे ओकर नाम पसरि गेलैए। ओ आब सौंसे इलाका मे अपन नाम पसारय चाहैए।

मुदा, विधायक जी ओकरा डाँटि देलखिन—'ई सब बात नै बाजी। अपना दिमाग सँ फैसला नै करी जे ककरो गोलिये मारि देबै। अइ पंचैती मे अगर यैह फैसला भए जाए, तँ एकटा बात भेल!'

विधायक जी सब केँ पुछलखिन जे एकर की उपाय होना चाही? मुदा लोक

एकर की जवाब दितय? अहाँ विधायक छियै, ई सब अहाँक प्रजा थिक। अहाँ के बात पर जान अड़पि दैए। रैली हो कि घेराव हो, अपन-अपन काज-धंधा जियान क' क' अहाँक पाछू धेने रहैए। आब ई विपति आबि गेलै तँ अहीं ने पार लगेबै। अहीं ने सोचबै जे एकर की उपाय होना चाही? लोक ओते बुझै छै? मूर्ख लोक अछि, अपन-अपन रोजी-रोटी सँ मतलब राखैए!

मुदा, विधायक जी पक्का खेलाड़ आदमी छलाह। करता सबटा वैह, अपने मोनक करताह, मुदा पन्दरह बेर सब केँ पुछथिन जे एकर की होना चाही।

जखन सब क्यो 'सलेन्डर' क' देलक आ विधायक जी पर छोड़ि देलकनि जे अहीं फैसला करियौ, ओ मिनट भरि मे फैसला क' देलखिन—'बी. डी. ओ. पर मोकदमा होना चाही। एकदम क्रिमिनल केस। लूट, डकैती आ मारिपीट के।'

खोभारी बड़ा ध्यान सँ ई बात सुनलनि आ बजला—'लेकिन, अइ सँ फैदा?'

विधायक जी बजलाह—'बहुत फैदा छै। जहिना बी. डी. ओ. पर वारंट निकलतै कि ओ दौड़तौ तोरा सब लग। दौड़त हमरा लग। हम ओकरा सँ ततबा पैसा तोरा सब केँ दियाए देबह, जतबा अइ साल माछ मारनो सँ नै हेतिहह।'

—आ बाड़ी जे तोड़ि देलकै, से टुटले रहि जेतै? सोनाय मुखिया पुछलखिन। हुनकर आशय रहनि जे हरामे के पैसा पर आस? मेहनत कै कए पैसा नहि कमबए देतै?

विधायक जी चट दए उतारा देलखिन—'नै भाइ, टुटले किऐ रहि जेतै? जहिना केस करबहक बी. डी. ओ. पर कि ओ अइ इलाका मे आना-जाना छोड़ि देतह। ओम्हर केस करह आ एम्हर अपन-अपन बाड़ी फेर लगाए लैह।'

एक गोटे आर प्रश्न उठेलनि—'बाड़ी तोड़ै मे जे समान सब बेरबाद भेलैहें, तकर जुरबाना के देतै?'

'—भेरी गुड!' —विधायक जी मोने-मोन सोचलनि। एकटा आर तीर हुनका हाथ मे आबि गेल छलनि।

एहि गाम मे पूर्व विधायक के सेहो किछु आदमी रहै। ओ सब विपक्षी पार्टीक कार्यकर्त्ता रहय। समय-समय पर ओकरा सब दिस सँ हिनका खिलाफ बोल बहराइ। ओ सोचलनि जे एकरो सब केँ समेटिए लेनाइ ठीक रहतै। कहलखिन—'ईंटा भट्ठा बला सब केँ पार्टी बनाए दहक। किछु जोतदारो केँ ओहि मे शामिल कए लैह। ओ सब जुरबाना भरतह।'

सौंसे गौआँ के मोन मे हरियरी पसरि गेलै। हँ, हँ! ई ठीक रहतै। यैह ठीक रहतै। किछु बाभन, दू एक भूमिहार, एकाध टा तेली—ई सब बड़ा दिक करै छै निषाद-समाज कें। छेबो करै ई सब फूल छाप पार्टी मे। ठीक कहै छथिन विधायक

जी!

पंचैती मे जे विधायक जी एलखिन अपन टाटा-सूमो गाड़ी सँ, से हुनके संग आयल रहथिन रामदरस यादव। यादव जी विधायक जी के कुटूम छथिन। विधायक जी हुनके अपन क्षेत्रीय प्रतिनिधि बनौने छनि। रामदरस बाबूक घर लगे मे—समलापुर। ओ एहि इलाका के राइ-रत्ती धरि सँ परिचित। से, ई सबटा बात जखन तै-तसफिया भ' गेलै तँ ओ एकटा प्रश्न उठेलखिन—'बी. डी. ओ. पर जे लूट के केस करबै से तँ बड़ बढ़िमा। दरोगा-पुलिस के साथ आया। बोला कि बीस किलो मछली दो। मछली का दाम मांगे तो गाली-गुप्ता किया। गाली देने से रोके तो मारपीट करने लगा। मछली लूट लिया। जाल लूट लिया। बाड़ी तोड़ दिया। लेकिन, असली बात तँ ई छै जे चवर के जे जमीन छियै से सरकारी खास। ओहि मे माछ मारै के तँ ककरो परवाना नै भेटल छै। ककरो बन्दोबस्त नै भेलैहें। सबाल उठतै ने जे भाइ, उस चवर मे आप किसके औडर से मछली मार रहे थे!'

बहुत पक्का बात! बहुत पक्का बात!! विधायक जी सोचय लगलाह। निषाद-समाज मे सँ किछु गोटे हताश भ' गेलाह। एहि स्थिति मे तँ केस होना मुश्किल छै!

—'कोनो मुश्किल नै छै खोभारी! सब चीज के रस्ता छै। कनी ई कहह जे ओहि चवर मे तोरा सब मे सँ ककरो जमीन पड़ै छह कि नै?' —विधायक जी पुछलखिन।

सब क्यो सोचए लागल। जमीन ककरो थोड़े पड़ैत रहै? सब गरीब-गुरबा आदमी रहय। सरकारी जमीन केँ घेरि क' माछ मारय।

—हमरा टोल मे जमीन छै कहाँ ककरो? एकटा खोभारिये भाइ टा तेसराँ किनलथि हें'—मुसाय मुखिया बजलाह।

—लेकिन, ऊ जमीन ओतए सँ दुरस छै। घटनाबला जगह सँ एक पौआ सँ कम नै हेतै।' —खोभारी उतारा देलखिन।

—दुरस छै कि लग छै—तै बात केँ छोड़ह ने। ओहि जमीन मे पानि छै अखन की नै? —विधायक पुछलखिन।

—हँ, पानि तँ छै!

—ओइ मे माछ मरि सकै छै की नहि?

—ओइ मे की माछ मरतै? माछे कते हेतै ओइ मे?

विधायक जी फैसला देलखिन—'ओइ जमीन मे पानि छै आ माछो छै। आब कम हुअए की बेसी—से के देखै ले' जाइ छै! केस मे तू अही जमीन पर घटना बतेबहक। तूं करबहक केस आ ई दस गोटे गबाह रहतह। बिसनाथ यादव जिला के नामी वकील छथि। हुनका हम कहि देबह। तूँ काल्हि भोरे चलि आबह।'

पंचैती खतम भेल। विधायक जी विदा भेलाह। जाइत काल लोक सब केँ कहैत गेला जे चिन्ता करै के कोनो बात नै। जे हेतै हम देखि लेबै। अच्छा, प्रणाम! विधायक जी के यैह आदति एक समय मे खोभारी केँ बहुत पसिन्द रहै। जहिया कहियो ओ कोनो पंचैती सँ उठय लागताह, सब केँ कहथिन—अच्छा, प्रणाम! ओहू दिन खोभारी के ध्यान एहि बात पर चलि गेल रहै। खैर।

पंचैती सँ जखन खोभारी घुरला तँ हुनकर क्रोध थोड़े कम भ' गेल रहै। ताही हिसाब सँ प्रतिहिंसा सेहो घटि गेल रहै। क्रोध मे लोक सोचि लैए जे फलनमा केँ जाने सँ मारि देबै। मुदा, जखने ओकरा मोन पड़ै छै जे जान मारै मे तँ बहुत झंझटि छै; ओकर उत्साह धीमा पड़ि जाइ छै। खोभारीक लेल आब सब सँ पैघ चिन्ताक बात ई रहै जे केस एसगरे ओकरा नाम सँ कयल जेतै। पंचैतिए मे ओ देखि लेने रहय जे ई बात उठिते सब जाति-भाइ निचैन भ' गेल रहय। जेना झंझटि सँ छुटकारा भेटि गेल हो, जेना फँसरी चढ़ै सँ बचि गेल हुअय। इह साला धरकट सब! आ जेबह से जेबह कतय? थम्हह ने, हम देखाए दै छियौ'—खोभारी मोने मोन बजलाह।

से, ओहि दिन राति मे दस बजेक करीब खोभारी अपन आँगन पहुँचलाह। पंचैती सँ बहरेलाह तँ सोझे सल्हेसथान दिस चलि गेल छलाह। ओम्हरे डोलडाल भेलनि, ओम्हरे टहलान। ओत्तहि सँ पसीखाना चलि गेलाह। ओतए सँ फुरसत होइत-होइत निसब्बद राति भ' गेलै। पसीखाना सँ आँगन पहुँचै मे हुनका एक घंटा लागलनि।

जे खोभारी आइये दिन मे भारी चिन्तित भारी परेशान रहथि, से एखन चीन्हल नहि जाथि। हुनका सन आनन्दित एखन क्यो नहि। ओ अपने मे अपना बड़ा व्यस्त रहथि। तमसेबो कखनहु करथि, गारि पढ़ै लागथि अज्ञात उपस्थित कें, मुदा फेर तुरत्ते हँसैयो लागथि। गाना गाबए लागथि—'मार दिया जाय कि छोड़ दिया जाय! बोल तेरे साथ... बोल क्या किया जाय?' गाना गाबैत-गाबैत तुरत्ते ओ अपन विषयो बदलि देल करथि—हमरा घर मे नौ मोन मछरी, अब डर काहे का? बोलो जी काहे का? बोलो जी जय सियाराम। बोलो जी...' कुल मिला क' एखन ओ साक्षात द्रष्टा बनल विराजमान रहथि। जिनगी मे सब किछु छै भाइ, रोग-बेमारी छै, झगड़ा छै, झंझटि छै, अलाय छै, बलाय छै मुदा सब सँ असली चीज भेल आनन्द। सब आबए सब जाए, हमरा की? हम तँ रंगमंच के खेलाड़ी छी।

से, ई रंगमंच के खेलाड़ी जखन दस बजे राति मे आँगन पहुँचलाह तँ देखै की छथि जे तीन-चारि टा अभ्यागत बहरिया गोहाली मे बैसल छथि।

'के ई?' —अपन चैहद्दी के बाहरे सँ खोभारी अवाज देलखिन, जेना ओ अपन कोठलीक भीतर सँ देने होथि।

—'आबहक। आबहक खोभारी कका! हम सब अपने आदमी छियै।' —एकटा जुबक बजलाह।

अपना दरबज्जा पर बैसल अपरिचित लोक सब केँ देखि क' खोभारी मुखिया थोड़े व्यवस्थित भ' गेल छलाह। पीढ़ीक अन्तर, ओहू मे पढ़ल-लिखल बुझाइत पीढ़ी—हुनका थोड़े आर होश मे आनि देलकनि।

खोभारी गोहाल लग आबि क' झुकलाह आ भीतर पैसलाह। गोहाली मे डिबिया जरैत रहै आ अखरे चैकी पर तीनू टा जुबक बैसल रहय।

'के हौ?' —खोभारी तेना पुछलखिन जेना कोनो आन लोक सँ, आनंदलोक सँ घीचि क' ल' आबए बला अनचिन्हार दूत सँ ओकर परिचय पूछि रहल होथि।

सब सँ छोटगर उमेरक जे जुबक रहथि, से बजलाह—'हम कका मनोज, बिघनेसर मुखियाक बेटा! ई छथिन रामजी बैठा, घर भेलनि हिनकर पटोरी। परिवर्त्तन समिति के पंचायत संजोजक छथिन। आ ई हिनके संग एलखिनहें—साक्षरताकर्मी छिया...'

—हूँ...' खोभारी मुखिया हुंकारी भरलनि। तकर मतलब जे आगाँ कहै जाह की बात। मुदा तकर एक मतलब इहो जे मोरचा हम जीति गेल छी—जे क्यो छह, हमरा सँ छोटे छह।

थोड़े-थोड़े घसकि-फसकि क' जुबक लोकनि खोभारीक लेल चैकी पर जगह बनेलखिन। तखन आग्रह केलखिन तँ खोभारी ओहि पर बैसि गेलाह। बुझना जाइत छल जेना घर जुबके लोकनिक होइनि आ खोभारी पाहुन होथि।

पंचायत संजोजक बजलाह—'हम सब तोरे सँ भेंट करए आएल छियह खोभारी कका!'

खोभारी चुपचाप ओहि जुबकक मुँह दिस ताकए लगला। हुनका चेहरा पर मौन छलनि आ आँखि मे एकदम्म सँ जिज्ञासा। जिज्ञासा की से बुझबै? हुनका आश्चर्य लागल छलनि जे ई आदमी हमरा 'तोरा' किऐ कहि रहल अछि? अनगौआँ छी भाइ! चिन्है ने जानै छियै। 'तोरा' किऐ कहैए? 'अहाँ' किऐ ने कहैए? आ दोसर उत्सुकता जगौने रहनि 'कका' शब्द। एते अपनैती किऐ? कोन काज एकरा पड़लैए अइ अधरतिया मे?

संजोजक बजलाह—'हम सब साँझे सँ तोरा असरा मे बैसल छियह। ई, विजय जी अगुताइतो रहथि। लेकिन, हम साफ कहलियनि जे आबि गेल छियै तँ भेंट कइए कए जेबै।'

'बात की छियै से कहह ने भाइ' ...आजिज जकाँ होइत खोभारी बजलाह। हुनका हृदय मे मुदा एखन आजिजी भावना नै रहैक। असल मे ओ अपन जिज्ञासाक वेग केँ रोकि नहि पाबि रहल छलाह। आतुरता रहनि भीतर। सम्भ्रान्त लोक जकाँ

गढ़ि-गढ़ि क' बात चिबाबए थोड़े आबै छनि हुनका ?

संजोजक बजलाह—'तूँ बी. डी. ओ. साहब पर केस करए जाए रहल छहक ?'

ओ उत्सुकताक वेग, आ ई खोरनाठल सवाल, खोभारी मुखिया तमसा गेलाह—'हँ, भाइ केस करबै नै ? नेसनाबूद कए देबै। ओकर ई मजाल ? हमर बाड़ी उजाड़ि देलक साला।'

आ ओ बी. डी. ओ. केँ गारि पढ़ए लगलाह। ताबड़तोड़। क्रोध मे आबि कए हाथ-पैर भाँजए लगलाह। जुबक सब तँ बुझिते रहथिन जे ई एखन पीने छथि। ओ लोकनि हिनका सम्हारए लगलनि।

संजोजक बजलाह—एना तमसाबै किऐ छहक कका ! हम सब तँ तोहर धियापुता छियह। एना तमसेबहक तँ गप हेतै ? जाह, अखन खाए-पी कए सूतह गए। आब भोर मे गप हेतै। तोरे दलान पर भरि राति रहबह हम सब, लेकिन बिना गप केने नै जेबह।'

एतबा बाजल जुबक सब आ हाथ-डेन-पाँजर पकड़ि कए बाहर लए जाए लागलखिन। 'चलह कका, तोरा अँगना पहुँचाए दै छियह' बला ढंग मे।

खोभारी शान्त भ' गेलाह आ जुबक सब सँ हाथ छोड़बैत बजलाह—'छोड़ह ने, बैसै छी...' आ फेर चैकी पर बैसि रहलाह।

'हम कहैत रहियह जे... केस जे करबहक से ठीक नै हेतह!' —संजोजक टूटल तागक एकटा छोर पकड़ि कए बात आगाँ बढ़ेलखिन!

—'किऐ ? किऐ नै ठीक हेतै ? किऐ नै हेतै ? विधायक कहने छै भाइ। विधायक सँ तोरा बेसी ज्ञान ?' —खोभारी भीतर सँ उग्र भेलाह मुदा बाहर सँ अपना केँ सम्हारने रहलाह।

—'हौ कका, ई बात तँ तूँ बेकार कहै छहक' —संजोजक सेहो जानि बूझि कए अपन स्वर केँ कने तिक्ख बना लेलनि। फेर बजलाह—विधायक केँ कते ज्ञान छै आ कोन चीज के ज्ञान छै—से बात तहूँ नीक जकाँ जानै छहक। अपन दिल पर सिरिफ हाथ राखि क' देखहक! तखन मानि लैह जे हुनका संग रहै छह, अइ मे तोरो कोनो मजबूरी हेतह! आ, अगर मानि लैह जे ठीके कहै छथिन, तैयो अपना दिल मे सोचि कए तँ देखहक ने तोरा लेल ओ बात ठीक हेतह की नै ? अपना दिल मे सोचहक कका।'

आ संजोजक चुप भ' गेलाह। कने काल धरि चुप्पी रहलैक। ई चुप्पी वातावरण-निर्माण के चुप्पी रहै—वातावरण मे परिवर्त्तनक!

'तोहर कहै के मतलब की छौ ?' खोभारिए मुखिया ओहि भकोभन्न केँ तोड़लनि।

संजोजक बहुत प्रौढ़ छलाह। लोक केँ परिवर्त्तित करबाक चेष्टा रखनिहार केँ एहने हेबाको चाही। ओ बजलाह—'हमर कहै के मतलब नै कोनो। तूँ अपने दिल मे सोचि कए देखहक। तूँ जै चवर केँ बान्हि दै छहक जानै छहक ओही दए कए दस गाम के बाढ़ि के पानि भागै छै! दस-पन्द्रह हजार एकड़ धान मे एखन तक पानि भरल छै खोभारी कका। किसान धान नै काटि पाबि रहल छै। धान कटतै तँ गहूम हेतै। तै ले खेत जोतै के समय आबि गेलै। खेत सुखेतै ? इलाका कंगाल नै भए जेतै हौ ? कते के धिया-पुता अन्न खातिर बेलल्ला हेतै! कहक, हेतै की नै हेतै ?

संजोजक सोझे प्रश्नोत्तर-शैली पर आबि गेल छलाह।

खोभारी मुखिया प्रतिवाद केलकनि—'एतेक के सोचै छै ? सब केँ अपना-अपनी सँ मतलब छै।'

संजोजक बजलाह—'लेकिन, इहो सोचहक खोभारी कका! आइ जकर खेत जोत नै भए सकलै, बाल बच्चा केँ अन्न नै भेटलै, आ सब साल जँ एहिना भेलै तँ ओ सब तोरा छोड़तह ? हँ, ई बात ठीक छै जे विधायक के तूँ आदमी छहक तँ बी. डी. ओ.-सी. ओ. तोहर जेबी के चीज भेलह। कलक्टरो वैह करतह जे तूँ सब चाहबहक...

संजोजक कने रेघेलखिन कि खोभारी मुखिया उचङिलेलनि—'हँ भाइ, किऐ नै हेतै ? सरकार हमर छी!

—लेकिन, जनता तोहर नै छियह हौ ? हम सब तोहर बाल बच्चा नै छियह ?

खोभारी मुखिया उन्माद मे आबि गेलाह। ओ उठि क' ठाढ़ भ' गेलाह—तुम कहना क्या चाहता है ?

'हम कहै ले ई चाहै छियह जे... तेसराँ तूँ ओइ चवर केँ बान्हलहक—लोक हाकिम-हुकुम लग गेल। कोई नै कुछ बिगाड़लकह। लोक सहि गेल। परुकाँ बान्हलहक तँ लोक गुंडा मंगबाए कए तोड़बेलकह। अइ बेर बी. डी. ओ. आबि गेलह बेकाबू तँ वैह तोड़बाए देलकह। अही हिसाब सँ देखहक तँ आगुओ तँ किछु ने किछु हेबे करतह! से सोचहक...

संजोजक के कण्ठ सूखए लागल रहनि। ई सब बात कहैत जेना ओ बहुत तनावपूर्ण भ' गेल होथि। ओ थूक घोंटि कए बात बदललनि—'आ ओइ नाला के जमीन जे छियै से तोहर नै छियह कका! ओ सरकारी जमीन छियै। दसक हित ले ओकरा छोड़ल गेलैए। किऐ तूँ ओकरा बान्हि लेबहक ?

संजोजक एहि उत्तेजना मे आबि गेल छलाह जेना तुरत्ते आब युद्धक घोषणा भ' जाइ बला हो। मुदा, सबटा उत्तेजना सैंतल-चैपेतल रहैक। बाहर केवल शब्द बहरा रहल छल—उचित आरोह-अवरोहक संग। कमाण्डर केँ शायद अही तरहें

लड़बाक ट्रेनिंग देल जाइत होइ।

दुनू ठाढ़ भ' गेल छल। आमने-सामने ठाढ़। दुनू एक-दोसराक आँखि मे ताकि रहल छल। जे वस्तु ओ सब ताकि रहल छल से की रहै? सम्भवत: विश्वास रहैक। खोभारी मुखिया थस्स दए चैकी पर बैसि रहलाह। हुनकर मोन औल-बौल हुअए लागलनि।

ओ घोर निशां मे रहथि। तै पर सँ ई गप-सप! हुनका शोचनशक्ति पर जेना बड़ जोर धक्का पड़ि गेल छलनि, आ हुनका खौंत फेकि देने रहनि। ओ बजलाह—'हौ, लागैए जेना रद्द हएत!

संजोजक कहलखिन—'कोनो बात नै कका! हे यैह अराम सँ अइ खुट्टा लागि कए ओठंगि जाहक। विजय भाइ, हे ओ, कनी बीयनि देब तँ...

खोभारी मुखिया आश्वस्त भेलाह जे आब ओ चैन सँ रद्द क' सकताह।

हीरा जनम तिहारो

हीरा महतो केँ बघजर लागि गेलै। बाप रे बाप, एहन जुलुम? अत्ततह भेल जाइए। गोनू मिसर मारलखिन हौ? किऐ मारलखिन? एतेक छोट बात पर कतहु एना मारल जाय? होस नहि भेलैए? एखनहु होस नहि भेलैए?

गोसाँइ मण्डल केँ एखन धरि होस नहि भेल रहैक। छव घंटा बीति गेल रहैक। कम्पाउन्डर बाजल जे एकाध धंटा मे जँ होस नहि भेलै तँ जय सियाराम! गाम मे डाक्टर नहि रहैक। एहि भुच्च देहात मे किऐ डाक्टर रहतै? कम्पाउन्डर महाग चतुर लोक। गोसाँइ मण्डलक भाइ-भैयारी कहैक जे एहि ठाम नहि सम्हरैए तँ सहरसा लए जाय दिय'। मुदा कम्पाउन्डर ताहू लेल तैयार नहि। सहरसा जँ मरीज गेल तँ गोनू मिसर पक्का बान्हल जेताह। कम्पाउन्डर से किऐ चाहत? जाति-बेरादरक यैह तँ मर्यादा हेबाक चाही!

हीरा महतो सुनलनि तँ हुनका बघजर लागि गेलनि! बाप रे बाप, एहन अत्याचार! कतहु कोनो आजादी नहि? कतहु ने कोनो सरकार, कोनो व्यवस्था, कोनो सभ्यता? कतहु किछु नहि?

केटली-गिलास-बासन समेटै मे हुनका मुश्किल सँ दू मिनट लागलनि। चुल्हा झाड़ि देलखिन। दोकान बन्न कयलनि आ दौड़लाह अस्पताल दिस।

अस्पताल मे लोकक करमान लागल रहैक। गोसाँइक घरबाली आ धियापुता झौहरि करैत रहैक। भाइ-भैयारी दवाइ-बिरो मे अपस्याँत रहैक। लोक सभक जे जुटान रहैक, से सब अपने-अपने मे गपसप करैत। बेसी गोटे एक-दोसरा केँ खिस्सा सुना रहल छलाह जे फलां केँ फलां जे एक बेर मारने रहै, से एना मारने रहैक! फलां के जे मौअति भेलै से कोना खून हगि क' भेलै, मारिये ततेक जरियाएल रहै। हीरा महतो एक गोटे केँ इहो बाजैत सुनलनि जे 'अइ बेर ठीक भेलै। राड़ सब के मिजाज बड़ा बढ़ि गेल रहै। बुझह तँ, एतेक हिम्मति जे बाभनक खेत छोड़ि क' राड़क खेत जोतय जेतै! मरि तँ सार जेबे करताह, तखन आब जहिया मरथि!'

हीरा महतो उनटि क' ताकलनि। बजनिहार चुप्प भ' गेल। हीरा महतो चहुँ

दिस नजरि खिरौलनि। लोकक जे करमान लागल रहै से सबटा ब्राह्मणे लोकनि छलाह! पचपनिमा लोकनि अपन-अपन घर मे नुका रहल रहय। गोसाँइ महतोक घरबाली आ धियापुता जे कानैत रहय, से ओकरा सब केँ कानैयो मे संग पुरनिहार कि चुप करेनिहार क्यो छोटका नहि!

हीरा महतो केँ तामस उठलै—'साला बलगोमना सब! कते बेर कहलियै जे रौ भाइ, अपन-अपन लोकक सुख-दुख मे संग रहै जो। अइ सँ एकता बढ़तौ। एकते मे बल होइ छै।' मुदा, कोनो फरक नहि!!

ई मुदा, तामसक बेर नहि रहैक। हीरा महतो गोसाँइ केँ देख' लगलाह। गोसाँइ बेहोस रहैक। मुँह पीयर भ' गेल रहैक। आँखि मुनायल रहैक। मुँहेंठ पर अथाह पीड़ाक भाव भदबरिया मेघ जकाँ पसरल रहैक। हीरा महतो अनुभव कयलनि जे गोसाँइक जीत बचब आब मश्किल छैक। अतमा कलपि उठलनि। बाप रे बाप, एहन अन्यान्य!

ओ मोन केँ मजगूत कयलनि आ कम्पाउन्डर केँ पुछलनि—'की कम्पाउन्डर सहैब, की कहै छी आब?'

एहन सीधा प्रश्न सँ कम्पाउन्डर थकमकेलाह। ओ बात बदलि देलनि—'नै-नै, सुधार तँ भइये रहल छै। दबाइ सब देलियैए। पानियो चढ़ाए दै छियै। तखन आगाँ जानथि बैदनाथ!'

हीरा महतो फेर एक बेर गोसाँइ दिस तकलनि, फेर एक बेर कम्पाउन्डर दिस। आ तखन गुम्म भ' गेलाह आ सोचा-बिचारी मे लागि गेलाह।

गोसाँइ मण्डल भूमिहीन बोनिहार लोक। बालें-बच्चें मजूरी करय आ परिवार चलाबय। बेर-बेगरता काल मे सियाराम भगत सम्हारल करैक। सियाराम सँ ओ अगोबार बोनि लेने छल, आ एक हफ्ता ओकर खेत जोतबाक करार रहैक। मुदा, काल्हि साँझ गोनू मिसर पहुँचलाह। कहलखिन जे काल्हि हमरा खेत मे हर जोति दे। गोसाँइ बचन के पक्का आदमी। कहलकै जे मालिक, काल्हि तँ नहि, चारिम दिन तोहर खेत जोति देबह। बस, एतबे बात! एकदम्म एतबे। एक्को मिसिया फाजिल नहि। दोसर दिन भोरे गोसाँइ सियारामक खेत मे हर जोतय गेलाह। थोड़बे काल मे लाठी लेने पहुँचलाह गोनू मिसर। पच्चीसो गोटे देखने हेतै डेंगबैत। क्यो रोकि नहि सकलै। जखन गोनू मिसर केँ विश्वास भ' गेलनि जे खिस्सा खतम छै, तखन जा क' घुरलाह। हरबाह-चरबाह सब बाद मे, गोसाँइ केँ टाँगि क' अस्पताल पहुँचेलकै।

सबटा खिस्सा सुनलनि हीरा महतो आ बड़ी काल सोचा-बिचारीक बाद अपन भातिज टुनमा केँ कहलखिन—'रे बाबू, जल्दी सँ अँगना जो आ खटिया उठेने आ। भीलो आ तिरबेनी केँ बजेने आबिहें। कहिहै जे कका तुरत बजेलकह-हें।'

लोकक करमान जे लागल रहैक से जखन सुनलक जे हीरा खटिया मँगबा रहल अछि, सब क्यो गोसाँइक घरबाली आ भाइ-भैयारी केँ बुझाब' लागलै जे सहरसा गेने तों सब भारी आफत मे पड़ि जेबै। गोसेमा तँ बचतौ नहिमो, पुलिस तोरे सब केँ पकड़तौ। अखबार मे छपल रहै जे जे मरल मुरदा लए क' जाइ छै, तकरे बान्हल जाइ छै। रोजी-रोजगार बला लोक तों सब छें। सहरसा मे कए दिन पड़ल रहबिही? छौ ओकाद? अरे ब्राह्मणे सब ने गुजर चलबै छौ? आइ मारलकौ तँ की भए गेलै? जतय दस टा घैला रहै छै तँ कहियो ढनमनाबितो छै! आ देखही, गोसेमा के हालति सुधरि रहल छै। थोड़े काल मे होस आबिये जेतै। कम्पोटर सहैब तँ लागले छथिन! अइ हिरबा के फेर मे नहि पड़ी! ई तँ गाछ चढ़ा कए छह दै बला लोक अछि!! एकरा कहला पर चलै जेबें, तँ तोहूँ सब मारल जेबें।

थोड़बे काल मे टुनमा खाट लेने पहुँचल। भीलो आ तिरबेनी सेहो आबि गेल। हीरा महतो केँ पाबि क' भीलो उत्साहित छल, जखन कि एतेक बाभनक बीच अपना केँ पहिल बेर मोरचा पर देखि क' तिरबेनी थोड़े अप्रतिभ छल।

हीरा महतो बजलाह—'की भीलो, की विचार? सहरसा चलबहक ने?'

—'हँ भैया, चलबै! जतय जाइ ले' कहबहक ततय चलबै।'

—तिरबेनी, तूँ?

—हँ भैया, चलबै।

हीरा महतो गोसाँइक घरबाली केँ कहलखिन—'भौजी, कननाइ-खिजनाइ छोड़ू। गोसाँइ भाइ कोनो चोरी-चमारी मे मारि नहि खेलनिहें। सत्त आ न्याय के रस्ता पर चललाहें। जे अन्याय करै जाइ छथि, कानतनि तँ हुनकर धियापुता। गोसाँइ भाइ के सहरसा लए जाइ छियनि। अहूँ चलू। अइ ठामक तँ हाल देखिते छियै। ओतय सदर अस्पताल मे भरती कए देबै तँ सुधार भेले ताकय।'

लोकक करमान जे लागल रहय, से ई निश्चय विचार सुनि क' गुम्म रहि गेल। सब क्यो चिन्ता करय लागै गेलाह जे ई हिरबा अइ गाम केँ बेरबाद क' देत।

हीरा महतो गोसाँइक भाइ-भैयारी केँ कहलखिन—'सितो, एक दिस तों पकड़ह खाट, बसन्त एक दिस तों पकड़ह। माया मे नहि फँसह। एखन गोसाँइये भाइ मारल गेलाहें। एना जँ कान पाथि-पाथि क' गप सुनबहुन हुनका सभक त तोहूँ दुनू भाँइ मारल जेबह। आबह भीलो, आबह तिरबेनी। भौजी, अहाँ पाछाँ-पाछाँ आबू।

दू मिनट बितैत-बितैत खाट उठबा लेल तैयार भ' गेल।

दर्शनार्थी लोकनि मे खुसुर-फुसुर बड़ी काल सँ भ' रहल छल। मुदा, हीरा महतोक दृढ़ निश्चय देखि क' क्यो आगाँ आबै लेल तैयार नहि।

खाट जखन उठय लागलै तँ एक गोटे, पण्डित गोविन्द चैधरी आगाँ अयलाह।

कहलखिन—'हौ हीरा, कथी ले सहरसा लए जाइ छहुन्ह हिनका? अनेर लफड़ा मे पड़ै जेबह। हम सब आइये पंचैती बैसायब, गोनू मिसर केँ दण्ड भेटतनि! छोड़ह, खाट राखह।'

हीरा महतो थम्हि गेलाह। कहलखिन—'बबा, एकदम ठीक बात कहलियै! बितरासुर आ राबन सनक आदमी केँ जखन दण्ड भेटलै तँ ई कोन भारी लोक छिया? अहाँ नै दण्ड देबनि तँ ओ देथिन, ओ नै देथिन त क्यो दोसर देतनि। दंड आदमी थोड़े दै छै बबा! दण्ड तँ समय दै छै। समय बड़ा बलवान साधो, समय बड़ा बलवान!'

हीरा महतोक गप सुनि क' खाट उठेनिहार युवक सब छगुन्ता मे पड़ल। ओ सब उत्साह मे रहय। सहरसा जेनाइ एकटा साधारण घटना एखन नहि छलैक, जेना कि लोक रोग-बलाय भेला पर अपन आङ-समाङकेँ ल' गेल करैत छैक। सहरसा जेनाइ एखन प्रतीक छल आ एहि जेबा मे युद्धक्षेत्र मे लड़बा सन केर रोमांच छलै। से बात ओ युवक सब बुझैत छल। ओ सब छगुन्ता मे पड़ल आ हीरा महतो दिस ताकय लागल, जेना आँखिये-आँखि पूछि रहल हो—की हीरा भैया, पण्डित गोविन्द चैधरी जँ ठीक कहैत छथि तखन तँ सहरसा जेबाक कोनो काज नहि?

हीरा महतो आगाँ बजलाह—'यौ बबा, मारैक मालिक अहाँ, बचबैक मालिक हम। अहाँ अपन काज केलियै आ हम अपन काज नहि करबै, से कतहु होइ? गाँधीजी केँ अंग्रेज चलती गाड़ी सँ ठेलि देलकै आ चलि गेलै। बचेनिहार हुनका बचेलकनि। तकरा क्यो रोकै ले' तँ नै एलै! गोसाँइ भाइ केँ सहरसा जे लए जाइ छियनि से हिनकर जान बचबै ले'। अइ ठामक हालति तँ अहाँ सभ देखिते छियै! असिरबाद दियौ जे ओम्हर सँ ई चलता-फिरता बनि क' घुरथि।'

क्यो किछु नहि बजलाह। खाट उठेनिहार जुबक सब बढ़ि चलल। बाट मे हीरा महतो अपना आँगन गेलाह। पाँच किलोक माने चूड़ा घर मे रहनि, ताहि मे सँ तीन-साढ़े तीन किलो अपना संग लेलनि। पेटी सँ पाँच सय टका बहार क' लेलनि। स्त्री केँ किछु जरूरी बात बुझौलखिन आ सहरसा चलि देलनि।

कहबी छै जे मारनिहार सँ बचैनिहार बली। से बरु ठीके। दोसर दिन भोर होइत-होइत गोसाँइ मण्डल केँ होश भ' गेलनि। एहि बीच तँ बुझू की-की ने भेल! सरकारी अस्पतालक रामभरोसे हाल एक दिस। पुलिस जे जुमल तकर हील-हुज्जति दोसर दिस। गोसाँइक स्त्री जे रहि-रहि क' कपार पटकथि, तकर तँ खिस्से भिन्न। संग आयल सब क्यो अपस्याँत छल।

मुदा, भोर होइत-होइत जा कि गोसाँइ मण्डल आँखि खोललनि, सभक जान

मे जान अयलैक। देखलनि सब सँ पहिने हीरा महतो। अधरतियाक बाद सब क्यो जहाँ-तहाँ घोलटि गेल रहय। हीरा महतो मुदा गोसाँइक बेड़ पर बैसल चिन्तामग्न आ विचारमग्न छलाह। देखलनि सब सँ पहिने वैह।

गोसाँइ मण्डल आँखि खोललनि। बड़ा मेहनति सँ पलक खुलि सकल होइक, तेना बुझायल। ओ कोठलीक चारू भर, जतबा कि बिना मूड़ी घुमौने देखल जा सकैत छलैक, देखलनि। कोनो आहटि नहि। नीरव स्तब्धता जेना हुनका पजियौने होइनि। ओ फेर आँखि मूनि लेलनि।

हीरा महतो बजलाह—'गोसाँइ भाइ, गोसाँइ भाइ, मोन अराम लागै छह?'

आँखि मुननहि गोसाँइ अस्पष्ट-अस्फुट शब्द मे जवाब देलखिन—'ता ऽ ऽ ऽ म। ता ऽ ऽ ऽ म।'

हीरा महतो किछु बुझि नहि सकलाह। ओ फेर पुछलखिन—'गोसाँइ भाइ, ठीक छहक ने तों?'

गोसाँइ बजलाह—'सिङ.. सिङ..' आ आँखि खोलि क' पंखा दिस ताक' लगलाह।

हीरा महतो हुनका माथ पर हाथ देलखिन। बड़ कोमलता सँ, जेना ओ स्पर्श-चिकित्सा क' रहल होथि। गोसाँइ मण्डल चीत्कार क' उठलाह—'ताम् ताम् सिङ..' लागल जेना तपत लोह सँ हुनका क्यो दागि देने होइनि।

हीरा महतो चिन्ता मे पड़ि गेलाह।

गोसाँइक चीत्कार सूनि हुनक स्त्री धरफड़ा क' उठलीह, जे कि हुनके गोरथारी मे पड़लि ओंघा रहल छलीह। ओ एक नजरि पति केँ देखलनि आ बहार निकलि क' सब क्यो केँ उठा देलखिन—'होस आबि गेलनि। हुनका होस आबि गेलनिहें।'

गोसाँइ एकटक हीरा महतो दिस ताकि रहल छलाह। निष्कम्प आ अपलक दृष्टि। सम्वेदनाशून्य जकाँ। हीरा पुछथिन—'गोसाँइ भाइ, पानि पिबहक?' गोसाँइ उतारा देथि—'ताम् सिङ'। हीरा पुछथिन—'भाइ, दरद होइ छह?' ओ कहथि—'सिङ सिङताम्।' हीरा पुछथिन—'दूध पियै के मोन होइ छह? ओ बाजथि—'सिङ सिङ ताम् सिङ्।' एक बेर हीरा कटोरी मे पानि मंगौलनि—'पानि पियह गोसाँइ भाइ!' गोसाँइ एक बेर कटोरी दिस तकलनि, एक बेर हीरा दिस आ तखन पंखा दिस तकैत रहलाह आ ओंघाब' लगलाह। कोनो एहन संकेत नहि छल, जाहि सँ हुनक इच्छा केँ अथवा हुनक कष्ट केँ बूझल जा सकय।

नव बजेक करीब डाक्टर अयलाह। बड़ी काल धरि गोसाँइक जाँच करैत रहलाह। तखन जा क' आन-आन डाक्टर सँ विचार-विमर्श कयलनि। तखन जा क' हीरा केँ बजबाओल गेल। डाक्टर बजलाह—'मरीज सेमी कॉन्सस में चला गया

है। यहाँ इसका इलाज नहीं है। पटना ले जाउ।'

हीरा महतो गुम्म रहि गेलाह। मुदा, बेसी काल गुम्मो नहि रहलाह। से ओ रहियो नहि सकैत छलाह। डाक्टर सँ पुछलखिन—'सर, इसमें खरचा कितना होगा?'

'कम से कम बीस हज्जार...।' —डाक्टर बजलाह।

'खतरा भी है डाक्टर साहेब?'

'हाँ जी। खतरा तो हइये है। बेसी से बेसी अड़तालीस घंटा रख लो।'

हीरा घुरि अयलाह।

गोसाँइ मण्डल एकटक छत दिस ताकि रहल छलाह। लागय जेना ओ भयंकर आक्रोश मे होथि। गारि पढ़बाक शैली मे ओ हौले-हौले भनभना रहल छलाह—ताम् सिङ्। ताम् सिङ्। सिङ् सिङ् ताम्। हीरा महतो कान' कान' पर भ' अयलाह। ओ बहरा गेलाह। जुबक सब केँ समुच्चा हाल बतौलखिन। राय-विचार करैत रहलाह। जुबक सब तँ खाली हाँ-हूँ करैक, निर्णय तँ हीरा महतो केँ अपनहि लेब' पड़तनि।

हीरा महतो बजलाह—'बारह हजार तँ हम देखि लेबौ। सात हजार हमरा छहु, से बैंक सँ निकाल' पड़त। पाँच हजारक जोगाड़ हम अपना बल पर धराए लेबौ। बचलहु आठ हजार, तकर की कयल जाय?'

बड़ी काल धरि एहि समस्या पर विचार होइत रहलै। गोसाँइक सहोदर सीत-बसन्त कहलकै—'भैया, तों आन भए कए एते करै छहक, तूँही असली सहोदरा भेलहक। हम सब करबै तँ की करबै? घर मे अरजल छदामो नहि छै। अइठाँ जे एलियैहें से ओतय बाल-बच्चा उपास पड़तै आब। लेकिन, भैयाबला बात छियै। हम दुनू भाइ महाजन सँ पँच-पँच सय करजा लए कए देबह।' सीत आ बसन्त, दुनू भाँइक आँखि नोरा गेलैक।

हीरा महतो दुनू भाँइक पीठ ठोकलखिन। बजलाह—'आब बचलहु सात हजार।'

भीलो आ तिरबेनी अढ़ाइ-अढ़ाइ सय दै ले' तैयार भेलै। एहि सँ आगाँ किछु स्पष्ट नहि रहैक।

की कयल जाय? —हीरा महतो जेना अपने सँ प्रश्न कयलनि। उपाय एक्केटा रहैक—चन्दा उगाही कयल जाय। मुदा, साढ़े छव हजारक सवाल छैक। गामक पचपनिमा सब जन-बोनिहार। थोड़-बहुत बनियाँ-बैकाल जे धनीक छल, तकरे असरा भ' सकैत छलैक, मुदा तकरा सभक हिसाबे किताब दोसर। कोना हेतै?

भीलो बाजल—'गाम-गाम घूमि क' पचपनिमा सँ चन्दा माँगल जाय। दुनू काज हेतै। टको भए जेतह आ एकतो बढ़तै।'

हीरा महतो कहलखिन—'समय ओते नै ने छौ। काल्हिए राति मे पटना चलना छै।'

विचार ई भेल जे हीरा आ भीलो-तिरबेनी गाम जाथि। सीत-बसन्त मे सँ एक भाँइ एतय रहि जाथि आ एक भाँइ गाम चलथि। टकाक व्यवस्था लेल भरि दिन भरि राति—एतबे समय बचल छै।

सबटा इन्तिजाम-बात क' क' हीरा महतो गाम अयलाह। चारू भर प्रचार कयल गेल जे घौलू महतोक दरबज्जा पर बैसार होयत। जुबक सब घर-घर जा क' कहि एलै।

मुदा जखन बैसारक बेर भेल तँ मश्किल सँ बीस-बाइस गोटे पहुँचलाह। एहि गाम मे पाँच हजारक अबादी छै पचपनिमाक, मुदा...। हीरा महतोक हृदय दया-भाव सँ भरि एलै। शिवजतन कामरेड कहियो ओकरा कहने रहै—'हीरा, देश के अजादी के जँ असली हालति देखना छौ तँ आपत-बिपत मे देखही आ से एतय शहर-बजार मे नहि, गाम मे जाय कए। अजादी तँ बेमतलब बात छियै हीरा। ई चोट्टा सब गद्दी लूझै केँ अजादी कहैए।'

हीरा बड़ भावुक भ' गेलाह। एही आवेग मे ओ बैसार शुरू कयलनि—'सुनै जाह पंच लोक सब! सत्त आइ असोथकित पड़ल छह। न्याय केना मिलतह? गोसाँइ मण्डल मरि रहल छथि तँ बुझहक तोंहू सब थोड़-थोड़ क' मरि रहल छह। गोसाँइ मण्डल किऐ मरि रहल छै? की ओ केकर बिगाड़लकै? ई जुनि सोचिहह जे गोसाँइ बुड़बक रहय तें मारि खेलक, आ तों होशियार छह। भैया, इहो नै होइबला छह जे तों अपन नीक रस्ता पकड़ने जाइ छह, आ कोइ तोरा नै टोकतह... नै हेतह भैया, नहि हेतह, बड़ा मश्किल छह।'

हीरा महतो कान' लगलाह। सब क्यो देखलक जे अन्तिम लाइन बजैत-बजैत स्वर हुनकर भखरि गेल आ दुनू आँखि भरला भादो बनि गेल। ओ चुप भ' गेलाह। एक शब्द आगाँ नहि बाजि भेलनि।

लोक सब आवेग मे आबि गेल। नौजबान दशरथ राम कॉपी-कलम उठेलक। जे दस टका दै जोग रहय, से बीस टका लिखेलकै। जे लोक अनुपस्थित रहय, तकरो नाम टोलबैया सब लिखेलकै। लिस्ट बनि गेल। पुरलै मुदा मात्र बाइस सय।

हीरा महतो मूड़ी गोतने चुपचाप विचार करैत रहलाह।

'कते बचलै आब रे?' —माइनजन पुछलकै।

'तैंतालिस सय।'

'की हीरा? केना हेतै?' —चिन्तित भ' क' माइनजन पुछलनि। ई चिन्ता टकाक ब्योंतक सेहो छलै, आ हीरा जे कननमूँह भेल बैसल छला, तिनका सहज

करबाक सेहो।

मुदा, हीरा महतो सेहो जेना एही विचार मे लीन होथि। बजलाह—'चलह, बाबू-बबुआन सँ मदति माँगल जाय।'

'बाबू-बबुआन के?' —माइनजन पुछलखिन।

'एक बाबू-बबुआन भेलाह—कुशो साव, मेघो दास, फूलचन मण्डल। दोसर बाबू-बबुआन भेलाह पण्डित गोविन्द चैधरी, पुलकित झा, भवनाथ पाठक।' —हीरा सीधा जवाब देलखिन।

भीलो कहलकै—'भैया, बाभन सँ चन्दा लेबहक?'

हीरा बजलाह—'हँ हौ भीलो, किऐ नै लेबहक? तोरा होइ छौ सब ब्राह्मण एक्के रंग होइ छै? तों की जाने गेलहक जे एकहक टा लोक केहेन-केहेन भेलाहें अइ पिरथी पर!'

तिरबेनी कहलकै—'बिगड़हक नै भैया! कहैक मतलब ई छै जे बाभन के खिलाफ मे तँ हम सब छियै, तहन ओकरे सँ चन्दा...'

हीरा महतो फेर कने तरडल जबाब देलखिन—'विचित्र बात बाजै छह आ कहै छह जे बिगड़हक नै। बाभन के खिलाफ हम सब लड़ै छियै आ कि गोनू मिसर सन-सन राक्षसक खिलाफ! नै माँगबहक ओकरा सब सँ तँ नै माँगह। लेकिन बात केँ बुझहक!'

हीरा महतो चुप भ' गेलाह आ खट् द' फैसला भ' गेलै। विचार भेलै जे पहिने पचपनिमा महाजन सब सँ माँगल जाय, तकर बाद ब्राह्मण सब सँ।

पाँच गोटेक कमेटी बनलै आ लोक विदा भेल।

सब सँ पहिने पहुँचल मेघो दासक दोकान पर। ओ पचपनिमा मे सब सँ धनीक छलाह। बड़का गोला चलबै छलाह आ गहना-जेबर बन्हकी राखि महाजनी सेहो करैत छलाह। हुनकर रिनियाँ पचपनिमो छल, आ ब्राह्मणो।

हीरा महतो कहलखिन—'कका, बेहरी माँगय आयल छियै हम सब। गोसाँइ मरर के इलाज ले।'

महाजन हिनका दिस गँहीर नजरिमो ताकलखिन आ मूड़ी हिलबय लगलाह, जेना अधिकतर लोक बिस्मिल्ला खाँक शहनाइ सुनैत काल हिलबैए।

महाजन बजलाह—'कथी माँगए एलहहें? बेहरी? बेहरी तँ भगवानक दसगरदा पूजा मे माँगल जाइ छै हौ!'

हीरा महतो जेना तैयारे छलाह। कहलखिन—'कका, सब सँ पैघ पूजा छियै ककरो जान बचेनाइ। जीव पर दया करनाइ। गोसाँइ मरर मरि रहल छथि, हम सब हुनका प्राण देबनि, अइ सँ पैघ पूजा और की हेतै?'

'लेकिन बाबू, हमर 'सिध्यान्त' दोसर छह। हम...'

महाजन अपन सिद्धान्तक वर्णन करथि, ताहि सँ पहिनहि हीरा महतो अपन दलक संगें दोकान सँ नीचां उतरि चुकल छलाह।

'अहीं ठाँ कहलकै रहय—प्रथमे ग्रासे...' हीरा महतो भनभनाइत दोसर महाजन लग गेलाह। तेसर महाजन लग गेलाह। सभ धनीक पचपनिमाक दुआर घुमलाह। कुल्लम टका जुटल—आठ सय।'

'की, आ ऽ ऽ ब?' हीरा महतो पुछलखिन।

'जे कहक... ' —भीलो बाजल।

साँझ पड़ि गेल रहय। अन्हरिया एखन पूरा नहि उतरल छलै। माल-जाल बाध-बोन सँ घुरि-घुरि आबि रहल छलै। भगवती स्थान जे लोक सब गेल छलाह, सेहो लोकनि दर्शन क' क' घुरि आबि रहल छलाह। जहाँ-तहाँ घूरक धुइयाँ आ खरड़ाक धूरा अकास तोपने रहै। हरिवंश मिसरक लाउडस्पीकर पर सँझुका भजन—फिल्मी गीत शुरू भ' गेल रहय।

सब मिलि क' विचार कयलक जे दछिनबारि टोल सँ शुरू कयल जाय। ओही टोल मे पण्डित गोविन्द चैधरीक घर रहनि। पंडी जी भगवती स्थान सँ घुरि आयल हेताह, से अन्दाज करैत; मंद-मंद विचारमग्न हीरा महतो सब सँ पहिने हुनके ओहि ठाम पहुँचलाह।

पंडी जी भगवती स्थान सँ घुरि क' पयर-हाथ धोइत छलाह। दलान पर लालटेन टाँगल रहैक।

'के ई?' पंडी जी पुछलखिन।

'हम छी बबा, हीरा महतो। गोड़ लागै छी।'

'जीबह बाबू...'

पंडी जी दलान पर बिछाओल चैकी पर जा क' बैसलाह।

'बैसह हीरा...' पंडी जी हीरा केँ कहलखिन। हीरा महतो मुदा ठाढ़े रहलाह। कहलखिन—'बबा, सहरसा सँ एलियैहें। गोसाँइ मण्डल के हालति बड़ खराब छै। डाक्टर कहै छै जे पटना लए जाए पड़तै। पैसा घटि रहल छै। किछु मदति माँगै लए एलियै रहय।'

पंडी जी बजला—'हमही तोरा रोकने रहिय' हीरा। लेकिन सौंसे ब्राह्मण-समाज केँ ललकारा दैत तूँ सहरसा लइये गेलहक। किछु गोटे बहुत क्षुब्ध छथि। आ तूँ मदति माँगय आएल छह। कोना क्यो मदति करतह?'

हीरा अखरा खाट पर बैसि गेलाह। कहलखिन—'कोनो बात नै। नै करथु। लेकिन बबा, भने तँ अहाँ कहलियै जे किछु गोटे क्षुब्ध छथि। जे अत्याचारी हेता

से तँ क्षुब्ध हेबे करता। फैसला तँ अही ँ सब करबै ने जे ब्राह्मण खाली अत्याचारी होइ छथि कि इंसान सेहो होइ छथि!'

पंडी जी गुम्म भ' गेलाह। सोचा-बिचारी मे लागल रहलाह। बड़ी काल धरि गहन मौन व्याप्त रहलै। ने पंडीजी एक शब्द बाजथि, ने हीरा महतो।

बड़ी कालक बाद तखन पंडिये जी पुछलखिन—'कते खरचा लागै छै?'

—'बीस हजार... लेकिन घटै छै पचीस सौ।'

—'ठीक छै। मुदा हौ बाबू, तोरा सब केँ टका देबाक नहि काज। सबटा इन्तिजाम हमहीं सब करबह। कोनो हरजा? —पंडी जी बजलाह।

बिना कोनो हील-हुज्जतिक एना, एते सहज रूप सँ मामिलाक निपटारा भ' जाएब भीलो केँ नीक नहि लागलैक। हीरा महतो के मुदा, पूरा ध्यान गोसाँइ मंडल पर रहैक। ओतय एखन संघर्ष नहि रहैक, रक्षा रहैक। कहलखिन-'नै बबा, हरजा की!'

लेकिन, अहूँ कनी मिलान क' लियौ जे अहाँक पाँजमे आब कते लोक छथि! तें हमरा विचार सँ, सबटा के भारा नै लियौ, जतबा घटै छै ततबे दियौ!'

पंडी जी फेर गुम्म भ' गेला।

पन्द्रह अगस्त सन्तानबे

—तों हमरा बहुत तंग करै छह हीरा! देखहक जे आइ फेर लेट भए गेलै। एना काज चलतह? तहन तँ लगाए दहक धिया-पुताक मुँह मे जाबी—हीरा महतो अपने केँ अपना कहलनि।

—हम करियै तँ की करियै? मोने सक्क मे नहि रहैए। सब कहैए जे बेकार के चिन्ता मे पड़ल छह, लेकिन हमरा कहाँ लागैए जे बेकार के चिन्ता छियै—हीरा महतो सोचलनि।

चारूकात रौद पसरि गेल रहै। महिसबार सब महीस चरा क' घुरि आयल रहय। हराठ गेनिहार सभक प्राय: अन्तिम दल बाध दिस प्रस्थान करै छल, कोंढ़ियाठे हरबाह आब बचल हुअए तँ हुअए। ऐती-जैती तीन टा मैक्सी एखन धरि चैक पर सँ विदा भ' चुकल रहय। भोरुका बेर मे चैक पर चाह पिनहार लोक सब आबि क' घुरि गेल रहय। मास्टर लोकनि साइकिल पर सवार अपन-अपन स्कूल लेल विदा हुअए लागल रहथि। चैक मेन्टेन केनिहार गामक बेरोजगार जुबक लोकनि अपन-अपन स्थान ग्रहण क' लेने रहथि।

हीरा महतो केँ आइ फेर देरी भ' गेल रहनि।

उत्साहहीन आ लयहीन पयरें चलैत हीरा महतो अपन दोकान लग पहुँचलाह। तीन-चारि गोटे मचान पर बैसल रहथि। सहरसा दिस जाइबला अनगौआँ मोसाफिर लोकनि छलाह।

हीरा महतो कठघरा खोललनि। सर-सामान बहार कयलनि। पानि भरि क' अनलथि, बरतन-बासन केँ धोलथि-पोछलथि आ स्टोव जरा क' पानि चढ़ा देलखिन। औंटल दूध जे संग अनने छला तकरा दुधौंटा मे ध' देलखिन। ई सब काज असथिर-असथिर भेल। लागै छल जेना हीरा भीतरे-भीतर कोनो भरी गुनधुन मे पड़ल खौंत सहि रहल होथि आ ई सब टा काज जेना अपने, सहज गति मे मशीनी ढंग सँ पूरा भ' गेल हो।

—सैह, ई हालति भए गेलै समाज के? बसुदेवा हमरा एहन बात कहि देलक?

बसुदेबा कहलक? हेंहें... —हीरा महतो अपने केँ अपना कहलनि आ एक बेर उदास हँसी हँसलाह। पहिल खेपक चाह तैयार भ' गेल छलै। मोसाफिर सब जे बैसल छलाह से लोकनि चाह मंगलनि। हीरा हुनका सब केँ चाह देलखिन आ एक गिलास मे निकालि क' अपनहु पीब' लगलाह।

—'की हीरा? खुलि गेलै दोकान?'—हीरा देखलनि पण्डित भोलानाथ मिसर छलाह। पुरान गांधीवादी। हीरा सँ हुनका खूब अपेक्षितारय रहै। आ ओ एहि दोकानक नियमित गँहिकी छलाह।

—'हँ कका, आबियौ। बैसियौ।' —हीरा बजलाह आ पण्डितजी लेल चाह बहार करए लगलाह।

पण्डितजी मचानक एक कोन पर बैसि गेलाह। ओ प्राय: जलाश्रय दिस सँ घुरल छलाह। हुनकर धोतीक निचला भाग मे मारिते रास चिड़चिड़ी लागल रहनि।

पण्डितजी केँ पाबि हीरा कने उत्साहित भ' गेल छलाह। ओ अपन लोक-सन लागैत रहलखिनहें। ई बात भिन्न जे हीरा जहिया कहियो कोनो मुद्दा पर सीधा संघर्ष मे फानलाह अछि, सब दिन पण्डितजी केँ अपना संग अयबाक अनुरोध केलखिन मुदा कहियो पण्डितजी सीधा संघर्ष मे नहि उतरलाह। मुदा, ताहि सँ कहियो अन्तर सेहो नहि पड़लैक। हीरा सब दिन एही निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे सीधा संघर्षे टा एकमात्र रस्ता नहि छिऐक, पण्डितजीक जे बाट छनि सेहो अपना जगह पर ठीक अछि।

हीराक नजरि पण्डित जीक धोती मे लागल चिड़चिड़ी पर पड़ल। ओ मुस्कियाइत बजलाह—'सैह एकरा देखियौ कका, चिड़चिड़ी-सन के नाचीज वस्तु! की औकाति छै? लेकिन, मनुक्ख-सन के बलशाली आदमी जँ एकरा दबलक तँ तकरो नहि छोड़लक। भरि जानें बकुटि लेलक। की?'

पण्डित जी हँस' लगलाह। कहलखिन—'गांधी जी देशवासी केँ सब सँ पैघ बात यैह ने कहलखिन हौ! ओ कहलखिन जे जे जतहि छह, निर्भय बनह। बड़ पैघ बात ई भेलै की ने? देखहक हीरा, शोषक कतबो बलशाली हुअए, लोक जँ ओकरा सँ डेराएब छोड़ि दियय तँ प्रश्ने नहि छै जे ओ जीतत। भगवान जे ई दुनिमा बनेलखिन तँ सब केँ हथियार देलखिन जे अपन-अपन रक्षा करह। से सब केँ छै। मुदा, लोक भयभीत अछि तँ अपने हथियार ओकरा अपने नहि देखार पड़ै छै! की?'

—'हँ कका, ठीके।...हीरा बजलाह—आब ई बात दोसर जे हथियार भगवान देलखिन आ कि लोक केँ अपने सँ तकर विकास करना छै।'

पण्डित जी मुस्किएलाह—'हँ, हमरा-तोरा विचार मे एतबा तँ फरक रहले ताकय।'

हीराक दोकानक बामाकात गोलम्बर छै। पाखरिक विशाल गाछक चैबगली

जवाहर लालक रोजगार योजना अन्तर्गत गोल चबूतरा बना देल गेलैए। चारि बरख बनना भेलैए। एहि बीच मे, एक खेप तँ निर्माण भेल आ दू-दू खेप मरम्मति भ' चुकल अछि। ओ चबूतरा ताड़ीबाज, दारूबाज, गंजेरी, जुआरी सभक अतिरिक्त गामक बेरोजगार जुबक सभक आश्रय-स्थल सेहो थिक।

ओहि गोलम्बर पर एखनहु गोट दसेक नौजबान सभक मजलिस लागल रहैक। ताहि मजलिस मे एकाएक बड़ जोर हल्ला भेलै। हल्ला सुनि पण्डित जी उठि क' ठाढ़ भेलाह आ पाँच डेग आगाँ बढ़ि देख' लगलाह जे की बात अछि! कोनो बात नहि रहैक। नौजबान सब गांजा पीबि रहल छल, तकरे निशांक आवेग मे थोड़े हँसी-मजाक भेल रहैक। पण्डित जी आगाँ बढ़ि क' नौजबान सब केँ देखलनि तँ ओहो सब पण्डितजी केँ देखि लेलक। नौजबान सब पण्डितजी केँ देखलक तँ पूरा शक्ति लगा क' मन्त्र उचारलक—

बम भटक, चिलम पटक
दम मारय पुबारि टोल
गांड़ि फाटय पछबारि टोल
हर हर महा दे ऽ ऽ ऽ व...

पण्डितजी चुपचाप घुरि अयलाह। चिलम-पार्टीक नौजबान सब पुबारि टोलक छल आ पण्डितजीक घर पछबारि टोल पड़ैत छलनि, कहब आवश्यक नहि।

पण्डितजी चुपचाप घुरि अयलाह। हीरा सबटा बात सुनिये रहल छलाह। हुनका लेल ई कोनो नब बात नहि रहनि। चैकक यैह संस्कृति छलैक, यैह सभ्यता। हीरा अनेक बेर एकर विश्लेषणो कयने रहथि आ निर्णय कयने रहथि जे वस्तुत: चैक सम्पूर्ण समाजक सभ्यताक एक अइना मात्र थिक। ओ एकाध बेर एहि प्रकारक नौजबान सब सँ भिड़न्तो कयने रहथि। मुदा, हीराक हथियार बहुत पुरान छलनि। दुनाली बन्दूक सँ ए ?के ?-47 केँ मातु नहि देल जा सकैत छल। हीरा ओकरा सब केँ कहने रहथिन—'की यौ विद्यार्थी सब! यैह होइ? एखन जीवन-निर्माणक समय अछि। माय-बाप आस लगेने बैसल छथि। भारत माता कते सेहन्ता सँ अहाँ सब केँ देखि रहल छथि। यैह होइ?'

हीरा अंदाज कयने रहथि जे एतबा कहलाक बाद नौजबान सब तर्क करत। चिलम पिबाक पक्ष मे अपन विचार देत। कहत जे ई नेता सब आ ई राजनीति नौजबान पीढ़ी केँ मसान-घाट पहुँचा देलकै—आब जीवन-निर्माणक कोन सवाल? हीरा सोचने छलाह जे जुबक सब एतबा बात कहत तँ हमहूँ अपन बात कहबै जे रे भाइ, निराश भेने तँ काज नहि चलतहु। अन्हरिया जँ बड़ जड़िआएल छै तँ इजोतक ओरियान करी, तखन ने वीर? हीरा आस कयने रहथि जे अन्तत: एहि जुबक सब केँ जीवनक

दिस आ निर्माणक दिस कनेको तँ आकृष्ट कइये लेबनि!

मुदा, हीरा केँ खूब नीक जकाँ मोन छै। ओ नौजबान सब कोनो तर्क, कोनो विचार नहि राखलक रहय। ओ सब गप-सपक भाषा, गद्य मे कोनो उच्चारणे नहि कयने रहय, ओ सब जबाब देने रहय कोरस-मय संगीतबद्ध पद्य मे—

बम भटक, चिलम पटक
दम मारय ब्राह्मण-पुत्र
गांड़ि फाटय राड़-पुत्र
हर हर महा दे ऽ ऽ ऽ व...

पण्डित जी चुपचाप घुरि अयलाह आ मचान पर बैसि रहलाह।

गँहिकी सब पाइ द' द' क' ससरि गेल रहय। सहरसा दिस जेबा लेल एकटा गाड़ी आबि गेल रहै। पाँच-छव गोटे जल्दी सँ चाह माँगलकै। ओकरो सब केँ यैह गाड़ी पकड़बाक रहैक। हीरा बिनु एक शब्द बजने गँहिकी सब केँ चाह पियौलक आ पाइ लेलक। दोकान तखने खाली भ' गेलै।

पण्डितजी पुछलखिन—'हीरा, आइ-काल्हि तोरा बड़ उदासीन देखै छियह'

हीरा गिलास साफ करैत रहथि। बजलाह—'हँ कका, हे यैह, बारहो बरनक अइंठ धोइ छी, अहिना धोइत रहब। एना मे के उदासीन नहि रहत?'

पण्डितजी केँ ओ समुच्चा प्रसंग मोन पड़ि गेलनि। तीन दिन पहिनेक ओ प्रसंग। ओही दिन सांझ मे हीरा हुनका सुनौने रहथि। हीरा ओहि दिन बहुत दुखी रहथि। हीराक मुँहेंठ पर दुखक गहनता देखि क' ओहि दिन पण्डितजी हिसाब पाबए लागल रहथि जे देसक आजादी दिन गांधी जीक मुँहेंठ पर प्राय: एहने पीड़ा रहल हेतनि। ओ हीरा केँ सम्हारबाक बहुत कोसिस कएने रहथि। मुदा सब व्यर्थ गेल जेना। हीरा आइयो दुखी छथि आ उदास छथि।

—कका, ओ खिस्सा अहाँ केँ मोन अछि? सन सतहत्तरि मे जे हमर दोकान जरौने रहय! अहाँ तँ ओहि समय मे गाम मे नहि रहैत रही। ओही साल हम लखनउ सँ घूरल रही। लखनउ युनिवर्सिटी मे सुनल-देखल बात सब अतमा मे हिलकोर लैत रहय। देखबे केने रहियै जे इमरजेन्सी मे जनता केँ कते सताएल गेल रहय। भारतमाता केँ कोना निखत्तर पहुँचाए देने रहय बैमनमा सब। हमर बाप ओही साल मुइल छलाह। माय कहलक जे गामे आबि कए दोकान-दौरी करह। अइ गाम केँ ताधरि हम चिन्हैत नहि रहियै कका! ओहि साल इलेक्सन जे भेल रहै, के ठाढ़ भेल रहथि एइ ठाँ सँ?

—'हँ, नन्दकिशोर पाठक ठाढ़ भेल रहथि।' —पण्डितजी कहलखिन—'आ, से नन्दकिशोर पाठक केहन तँ ने हगबा जोग ने मुतबा जोग।'

—'हँ, ठीके कहलिऐ कका! आ वैह अइ ठाँ सँ जीतल रहय। किऐ यौ बाबू तँ ब्राह्मण छी। वाह रे जाति। समुच्चा ब्राह्मण समाज कांग्रेस दिस। आ पचपनियाँ जे रहय से तँ बुझियौ जे ब्राह्मणक पयर तरक ख'ढ़ रहय। सबटा भोंट छापि लेलकै।

—'तहिया बुझितो नै रहै लोक आ हिम्मतो नै रहै।' —पण्डितजी कहलखिन।

—से बात असली नै कका। असली बात रहै जे लोक भिखमंगा रहय। उचित मजदूरी भेटै नहि तँ पेट नहि भरय। तखन तँ ब्राह्मणम् शरणम्। दिल्ली-पंजाब जहिया सँ लोक देखलक तहिया सँ मुँह मे बोल हुअए लागलै, माथ मे दिमाग... हँ तँ से खैर! हमर मोन नै मानलक। हम लखनउ युनिवर्सिटीक हालति देखने छी कका! जान दै ले लोक तैयार रहय। उचित बात लोक तते चिकरि क' बाजय जे अपकारी सब कोन दाबि दै। सब मामला मे देस बीच मे चलि अबैक। ई बात जे हएत से देसक हित मे हएत की नै हएत? देशक कल्याण लेल जे उचित थिक, सैह टा एहि राज्य मे कि एहि जिला मे होना चाही। आ से बुझबै, द्वारिका मिसर मुखमंत्री नहि बनथि, तकर कोशिश लेल जँ पचीस-पचास क्रान्तिकारी जुबक केँ गोली खाय पड़नि तँ तकरा लेल तैयार लोक भेटै छल। कैक टा केँ तँ हम पुलिसक गोली सँ मरैत देखलिऐ युनिवर्सिटी गेट पर। हम तँ चाह-दोकानक नोकर रही, हमर की औकाति? लेकिन कका, पाँच-छव टा शहीद सभक जुलूस मे हम घाट तक गेल छी। छिनरी भाइ मलिकबा, तै ले' हमरा आठ चोरिक मारि मारय...

हीरा महतो कने थम्हलाह आ तुरत्ते पहुँचल दू टा गँहिकी लेल चाहक पानि चढ़ा देलनि। स्टोव पर दूध चढ़ल रहै, तकरा उतारि देलनि।

हीराक गप्पक आवेग उतर' लागल छल, विधिवत समापन करब हुनका जरूरी बुझना गेलनि। ओ बजलाह—'सैह कहलहुँ कका, ताहू दिन मे अइ गाँ मे हम ठाढ़ भए गेल रहियै। ब्राह्मण लोकनि तँ हमर बात नहि सुनलनि, लेकिन सौंसे गामक पचपनियाँ केँ हम होश मे आनि देलियै।' हीरा फेर चुप भेलाह।

'हँ, ठीके होश मे आनि देलहक'—पण्डितजी कहलखिन।

'हँ, अपना दिमाग सँ आदमी सोचए लागय, सैह ने होश भेलै।' —हीरा केँ लागलनि जे पण्डितजी केँ भाव पकड़ै मे किछु दिक्कत भ' रहलनि अछि, ओ स्पष्ट कयलनि।

ससपेन मे चीनी आ चाहपत्ती खसबैत हीरा फेर बजलाह—'आ तै गाम मे आइ हम भगौआ-पड़ौआ भए गेलहुँ। ओ लुच्चा बसुदेबा कहलक जे लबर-लबर नै करह, बारहो बरनक अइंठ धोइत जीवन गेलहें, अहिना अपन चुपचाप करैत रहह। यैह हुअए कका, यैह हुअए?'

हीरा महतो चुप भ' गेलाह। मुदा, हुनक मुँहेंठ एकदम विकृत आ ललौन भ'

गेल रहनि। बड़का बिहाड़ि-पानि भीतर चलि रहल छलनि, जकर झाँट बाहर मुखाकृति पर साफ खसैत देखार पड़ैत छल। ओ एकदम अशान्त छला। हुनकर मौन एकदम भ्रामक मौन छलनि। ओ भीतर सँ एकदम मुखर छलाह। बाहर जँ मौन आबि क' व्याप्त भ' गेल छल तँ से एहीटा कारण कि ओ गहन निस्संगताक पीड़ा सँ दुखी रहथि।

बाजब तँ, मुदा सुनत के? आ जँ क्यो सुनबे नहि करत तँ बाजब कथी ले'—भीतरे-भीतर मुदा जड़ैत-धधकैत रहब, खौलैत-खदकैत रहब—एहि पीड़ाक अनुभव कहियो अहाँ केँ भेल अछि?

हीरा जाहि प्रश्न सँ अपन बात समाप्त कएने रहथि, तकर कोनो जवाब बूढ़ आ रिटायर्ड गांधीवादी, हाइस्कूल मास्टर पण्डित भोलानाथ मिसर लग नहि रहनि। एहि प्रश्नक उत्तर एहि गाम मे, एहि परोपट्टा मे, एहि राज्य आ एहि देश मे ककरो लग नहि रहैक...

पण्डित जी चुपचाप मूड़ी निहुरा लेलनि आ प्रकृतस्थ होयबाक चेष्टा कर' लगलाह। हीरा हुनको उद्विग्न क' देने रहथि। बजलाह—'चलै छियह हीरा, आब। फेर सँझुकी पहर भेंट हेतै।'

—बड़ बेस—हीरा उत्तर देलकनि।

ता, दुसधटोली के आठ-दसटा जुबक सब पहुँचलै। सब क्यो बेरा-बेरी कहलकै—'गोड़ लागै छियह हीरा कका!' हीरा सभक अभिवादन स्वीकार कयलनि। ओकरा सभक मेठ रहै पितम्बर पासवान। ओ बतेलकै जे जुबक सब दिल्ली दिस चलै गेल अछि। की करतै? गाँ मे कोनो काज-रोजगार नहि छै। बी? डी? ओ? जाधरि जेल नहि गेल रहय, ताधरि कोनो-ने-कोनो स्कीम चलैतो रहैक। मजूरी भेटि जाइक। मुदा, बी? डी? ओ? जेलो नहि जइतय तँ सेहो तँ नहि उचित। साला तिन-तिन हजार लोकक बुढ़बा पेंशन असगरे खाय जाइ? जखन बड़का-बड़का नेता जेल जाए सकै छथि तखन तँ बी? डी? ओ? केँ जाने चाही...

एकरा सभक दिल्ली जेनाइ हीरा केँ नीक नहि लागलै। ओ बजलाह—'मियांक दौड़ मस्जिदे तक सब दिन रहतै पितम्बर?'

पितम्बर बाजल—'उपाय की कका?'

—दिल्ली-पंजाब तँ पूँजी छियै ने हौ? वैह जे कहबहक जे हमरा सभक जीवन छी, से तँ नहि ने छियै! ओतए सँ कमा कए आनलह तँ आब अपन मात्रभूमि केँ रोशन करह। जेना देखहक तूँ जे दस टा जुबक छह, दसो मिलि क' सौंसे फटोरिया बाध मनहुंडा पर लए लैह। दसो मिलि क' ओतहि डेरा डालह आ सौंसे बाधक सामूहिक खेती करह। बोरिंग दहक। ट्रैक्टर लगाबहक। जेना ओन्ने खटै छह, तेना एतय खटहक। दिल्ली-पंजाब फीका भए जेतौ पितम्बर।'

—हीरा कहलखिन आ प्रेरित-सम्मोहित करै लेल जेना थोड़े काल धरि पितम्बरक आँखि मे आँखि मिला कए तकैत रहलाह।

—चाह दहक हीरा कका, आठ-दस गो। —पितम्बर बात बदलि देलक।

हीरा मुदा रौ मे छलाह, ओ बजलाह—'नब्बे के एलेक्शन तोरा मोन छौ पितम्बर? कोना दस-दस दिन हम सब घुरि कए घर नहि आबी! कोनो टोल कोनो घर नहि छोड़ने रहियै! अवधारि लेलथि रहय ब्राह्मण सब जे जादब केँ जीतए नहि देना छै। लेकिन देखलहक रहय, सबटा दछिनाहा पहलमान सब कोने दाबने रहि गेलै! एक्को टा बूथ कैप्चर कए भेलै? आ, ओ जे गौरी झा हमरा पर बम फेकने रहए पितम्बर, मननपुर चैक पर; मोन छौ ने ओकरा पकड़ि कए तूँ सब कते मारि मारने रही।'

पितम्बर सेहो आब अतीत के झलक पाबए लागल रहय। ओ बाजल—'हँ, कका, एह, ओ तँ समैये जुलुम रहय!'

—'सभक जड़ि मे छै पुरुखारथ। अपन मात्रभूमि पर जै शान सँ रहबिही, दिल्ली-पंजाब मे से शान चलतौ?' —हीरा असली बात पर आबि गेलाह।

—'अपन-अपन सोचै के बात छै!' —पितम्बर फेर कनछी काटि गेल।

—'ई बात किऐ कहलिही? हम की कोनो नजायज बात कहै छियौ?' —हीरा विचार-विनिमय के मूड मे छलाह।

पितम्बर एहि बेर सक्कत भ' गेल। ओ बाजल—'हीरा कका, एकटा बात पुछियह? खराबो लागतह?'

—नै भाइ, खराब किऐ लागत?

—'तूँ तँ गोली-बम खाए कए जिताए देलहक जादब जी कें। सरकारो बनि गेलह। लेकिन बाजह, दुसधटोली मे एकटा इन्दिरा आवास बिना घूस के दियाए भेलह? धनुकटोली मे ककरो एकटा बोरिंग भेटलै? तोरा टोल मे रोड बनलह? उचित बात जँ कहियो कहलहक तँ मोजर देलकह जादब जी? नेता भेल के तँ असरफी दास आ बसुदेबा! तूँही ने कहैत रहह हीरा कका जे बसुदेबा पहिने मुंगेर लाइन मे पकेटमारी करैत रहय। आइ ओकर रुतबा देखहक। मुखमंत्री एतै तँ ककरा दरबज्जा पर शरबत पीतै? तोरा दरबज्जा पर? छह मुखमंत्री जोगर दरबज्जा? सेहो बसुदेबे केँ छै ने हौ? पुरुखारथ के की कहै छहक हीरा कका! भगमान जखन पेट देलखिनहें तँ कहुना लोक ओकरा भरै के जोगाड़ मे लागत। अइ मे पुरुखारथ के कोन बात छै?' —एक्के दम मे पितम्बर बहुत रास बात कहि गेलै। मुदा, तुरन्त ओकरा लागलै जे ओ किछु बेसिये रुक्ख भ' गेल। ओ बाजल—'माफ करिहह हीरा कका! तूँ हमरा सबहक माथ के मुकुट छहक। लेकिन, उचित बात जँ बाजबहक तँ उचित बात सुनैयो ने पड़तह?'

हीरा भकोभन्न चुप्पी मे बन्न भ' गेलाह। खिस्सा फेर ओही ठाम आबि क' ठमकि गेल रहैक—ओही बसुदेवा लग मे।

जुबक सब ले' चाह बनि गेल रहैक। ओ सब चाह पिबिते रहय ताधरि मैक्सी स्टार्ट हुअए लागलै। हबर-हबर सब क्यो चाह खतम केलक। पितम्बर पैसा देलकै आ हीरा केँ पयर छुबि प्रणाम कयलक। सब जुबक बेरा-बेरी हीरा केँ प्रणाम कयलक। पितम्बर कहलकै—'चलै छियह हीरा कका, धिया-पुता केँ देखिहक।'

हीरा महतो कननमुँह भ' गेल छलाह। गाड़ी खुलि गेलै। पितम्बरक अन्तिम वाक्य जेना वायुमण्डल मे गूँजैत रहलैक—धियापुता केँ देखिहक! धियापुता केँ देखिहक!

—हें हें...' —हीरा महतो मूड़ी डोलबैत एकान्ती हँसी हँसलाह आ अपने केँ अपना कहलखिन—'यैह होइ छै। लोक बड़ा जतन सँ घर ठाढ़ करैए। मुदा, दस बरस बीस बरस मे घर ढहि जाइ छै! ठीक बात छियै। सभक एकटा औरदा होइ छै। मुदा अकाल मिर्त किऐ होइ छै? अकाल मिर्त?'

एही चिन्ता मे हीरा महतो पड़ल रहलाह। एक्का-दुक्का गँहिकी आबय, तकरा ओ चाह पिया देथि, पाइ ल' लेथि, मुदा हृदय सँ आ मस्तिष्क सँ ओ कतहु आन ठाम छलाह। पछिला बीस बर्खक इतिहास मे ओ बौआ रहल छलाह। इतिहास जे छलै पछिला बीस बर्खक, जे घनघोर जंगल बनि गेल छलै। ओहि दिन मे जतन सँ रोपल पौध सब आब बेतरतीब झाँखड़ बनि गेल रहै आ बर-पीपर-पाखड़ि-सन वृक्ष सब धरतीक सबटा उर्वरता सोंखि ल' रहल छल। हीरा महतो देखलनि जे छोटहन लता-गुल्म सब कि तँ सुखा गेल छल अथवा पीयर-कपीस भेल सुखा जयबाक क्षण मे प्रवेश क' रहल छल। विशाल वृक्ष सब अपन-अपन छाड़नि के रद्दी सँ सौंसे इतिहास केँ कबाड़खाना बना देने रहैक। आ ताहि पर सँ, सबटा रस चूसि गेल तैयो सन्तोख नहि, हीरा पौलनि जे एकहक टा विशाल वृक्ष दस-दस टा जटा नमरा क' धरती केँ सोंखि लेबाक आकुलता मे अछि। छोटहन सँ जे विशाल बनि रहल छल, सेहो सब नहुँए-नहुँए एही अभियान मे शामिल भ' गेल छल। आ रे बहिं, ई हमर देस छी आ कि कोनो जंगल? —हीरा अपने केँ अपना कहलनि।

—ओहि बेर जे बड़का बाढ़ि एलै रहय हीरा, —हीरा महतो अपने केँ अपना कहैत रहलाह—आ रे बा, एहन बिपतिकाल नहि देखलौं रहय। इन्दिरे गाँधी के राज रहै ने? जते छाँटल शैतान सब रहय सबटा आन-आन काज छोड़ि क' ब्लौक धए लेने रहय। बी? डी? ओ? केँ कहै जाइ हग तँ हगय, मूत तँ मूतय। मिनिस्टर जे रहय चैधरी जी, से तँ लागय जेना एकरे सभक बल पर मिनिस्टर अछि! पचपनियां सभक सबटा रिलीफ साला यैह सब खाए जाइ? आ तों जे ठाढ़ भेलहक रहय हीरा, पचपनियां दिस सँ, अन्हड़-बिहाड़ि आबि गेल रहै। नै? आ ओ जे छिनरी भाइ दू

जुत्ता मारलकौ रहय तोरा, से तँ आरो कमाल कए गेलै। सौंसे परोपट्टा के पचपनियां तहिया एक भए गेल रहय। गुलामी के ओ अन्तिम दिन रहै। नै? आइ कोइ कहतै जे ओहो समय अही गाम मे बीति चुकलैए?

—आ ओ जे रहथि हीरा, गजेन्दर मण्डल पचगछिया बला, ओहो खूब मदति केलथि रहय। हफ्ते-हफ्ते मीटिंग बैसय पचपनियां के। सौंसे परोपट्टा मे चेतना पसरि गेल रहै। पचपनियां के डीलर अलग, विभाग अलग, कोन लुच्चाक मजाल रहै जे एकटा बेहुसल बात कहि देतै? बात-बात पर कलक्टर-एस? पी? केँ उतरए पड़ैक, बी? डी? ओ? के कोन मानि? सब कहौ तोरा नेताजी। नै? लेकिन, नेता तों भेलहक कहिया? सब दिन चाहक दोकान करैत रहलह, बारहो बरनक अइँठ धोइत रहलह!!

फेर हीरा ओतहि पहुँचि गेलाह आ फेर उदासीनता गछाड़ि लेलकनि। मोन कचकि उठलनि।

कचकले मोन सँ हीरा धरती पर उतरलाह तँ यादि पड़लनि जे दूध बला केँ आबैक बेर भ' गेलैए। ओ दुधौंटा खाली कयलनि आ ससपेन-डेकची-दुधौंटा केँ कल पर ल' जा क' माँज' लगलाह। आब बड़ी काल धरि कोनो गाड़ी केँ आना-जाना नहि छै, चैक खाली भ' गेल अछि।

कोनो छोटोछीन क्रिया अपन समानताक बहन्ना सँ पैघ-पैघ घटना सब केँ स्मृति मे जगा दैत छैक। हीरा बासन माँज' लगलाह तँ अनेरो एकान्ती मुस्की मुस्कियाब' लगलाह। अपनहि केँ अपना सम्बोधित कर' लगलाह। जेना एहि बासन केँ ओ माँजि रहलाहें तहिना एक दिन भीलो-तिरबेनी कें, नागेसर-टुनमा कें, मूसो आ गोपाल कें, धुर कते कही, सौंसे पचपनिये केँ माँजने रहथि। वाह जी नेताजी, खूब केलह, माँजैत-माँजैत गतर-गतर के मैल छोड़ा देलहक—ओ अपने केँ अपना कहैत छथि। मुदा, सब चलि गेल। सभक सब चलि गेल। मैदान एकदम्म खाली! हीरा केँ फेर मोन पड़लनि—जाइत काल पितम्बर कहने रहै—चलै छियह हीरा कका, धिया-पुता केँ देखिहक।

—ठीके तँ बात छियै भाइ, हमहीं ने एकटा बचल छियै—अपने केँ अपना हीरा कहैत छथि—एक माने मे अगर सोचहक तँ बसुदेवा कोनो अनचित बात नै कहने रहय। हमहूँ तँ ओकरा बड़ भारी बात कहने रहियै! हँ उचित कहने रहियै से अलग बात, लेकिन रहै तँ भारिये!

परसू साँझ खन हीराक दोकान पर नेता सभक रठान लागल रहैक। बजरंग दल के पाठक जी आ कांग्रेसक ठाकुर जी मे टक्कर शुरू भेल रहै। विषय रहै—हवाला कांड। तुरन्त चर्चा चारा-घोटाला धरि पहुँचि गेल रहै। तखन एहि मे वि ?पी ?पाक सुनील झा आ राजद के बासदेब भगत सेहो शामिल भ' गेलाह। भाजपाक रामचन्द्र

झा आ समताक धनुषधारी सिंह केँ चैक पहुँचबा मे आइ थोड़े बिलम्ब भेल रहनि जरूर, मुदा चारा-घोटाला शुरू होइत-होइत, ओहो लोकनि जुमि गेल छलाह। धुरझार चल' लागल, धुआँधार। कखनो-कखनो तँ एहन होइक जे एक्के बेर पँच-पँच टा बीर अपन बहुमूल्य सिद्धान्त-वाक्य दाग' लगैत छलाह। ओ क्षण आसमान केँ फाड़ि दैबला, समुद्र केँ चीड़ि दैबला क्षण होइत छलैक। चैक मुदा अभ्यस्त छल। चैक लेल धनि-सन। जनता-जनार्दन सब अपन-अपन काज-रोजगार मे, अपन-अपन अमल मे लागल रहैत छलाह।

चर्चा चलि रहल छल घमासान, हरेक नेता अधिक सँ अधिक अभिव्यक्त होयबाक अफरातफरी मे छलाह। मुदा, सब क्यो एतबा समय निकालि लेल करथि जे बीच मे एक बेर हीरा केँ पूछि लेल करथिन—'की हीरा, ठीक कहै छियै ने? ...की हीरा भाइ, तोहर की विचार? ...हीरा कका, तूँही कहक जे ई बात छियै कि नै?' हीरा एक तरहें विचार-गोष्ठीक केन्द्र मे छलाह, यद्यपि कि ककरो कहियो ओ मंगनी चाह नहि पियाबैत रहथि।

लागय जेना मण्डन-दल आ शंकराचार्य-दल मे तुमुल शास्त्रार्थ चलि रहल अछि आ निर्णायक छथिन भारतीक अवतार हीरा महतो।! ताहि तरहक प्रतिष्ठा हुनका देल जाइनि!

प्रतिष्ठा हुनका बड़ भारी देल जाइनि, तकर कारण ई नहि जे चर्चाक अन्त मे ओ विजेता केँ माला पहिरा क' विजयी घोषित करै छलखिन, तकर कारण ई जे ओ लगातार चुप्प रहै छलाह, एकदम्म गुम्म आ बड़ जरूरी भेल तँ 'हाँ हूँ' करैत।

चर्चा चलल छल ओहि दिन जबर्दस्त, मुदा, पण्डित लोकनिक कहल छनि जे दुनिमा मे जतेक तरहक बल अछि, ओहि मे टाकाक बल सब सँ जब्बर होइए। जितलाह अन्ततः बासुदेब भगत। सौंसे इलाका मे मशहूर छै जे बासदेव भगत पछिला दू साल मे पचास लाख टाका कमेलक अछि। ओ सब केँ निरुत्तर क' देलक। एक तरहें बुझू जे सब क्यो गछि लेलनि जे चारा धोटाला जे छल से बहुतो कारण सँ उचित बात छल। आ ई जे भेल अछि से कोनो गलत नहि भेल अछि।

बस, यैह क्षण छल जखन हीराक देह मे आगि लागि गेल रहैक। आगि मात्र मोहाबरे टा मे लागल होइक, से बात नहि। हीरा एकदम होश मे अनुभव कएने रहथि जे हुनका देह मे आगि लागि गेल अछि आ ओ धू-धू क' जरि रहलाह अछि।

भयावह प्रतिहिंसाक आवेग मे ओ बुमकारा छोड़ने रहथि—'रे बसुदेबा ऽ ऽ ऽ... 'एतबे बाजि क' ओ रेघा देने रहथि—विस्फारित आँखि रहनि—आगि मे धह-धह करैत आँखि एकाग्र बासदेव भगत पर टिकल। निचला ठोर समुच्चा ओ दाँत तर मे दाबने रहथि आ दाँत किचने छलाह। सब क्यो चकित रहि गेल रहथि। बासुदेब

भगत केँ सेहो आश्चर्य लागल रहै जे ई हीरा कका तँ ओकरा ओहू दिन मे बासदेव छोड़ि क' बसुदेवा नहि कहियो कहने रहथि, जाहि दिन मे ओ हुनकर चेला रहय।

प्रतिहिंसाक आगि मे जरैत हीरा महतो बाजल छलाह—'रे निर्लज्जा, एतबो सरम कर! जे कुकर्म करै छें से अपन करैत रह, लेकिन एना समाज मे नै कहियै जे कुकर्मे करब ठीक छियै। एतबो रहम कर बहिं...'

ई तँ बड़ भारी बात भेलै! करोड़पति आ एम? एल? ए? होइ दिस अग्रसर बासदेव भगत केँ फूकि देने रहै। आऽऽ रे राम, एना तँ कोइ एस? पी? कलक्टरो ओकरा नहि कहि सकै छै! ओ क्रोध मे उठि क' ठाढ़ भ' गेल रहय आ हीरा महतोक मुँह लग हाथ ल' जा क' कहने रहैक—'ऐ हीरा कका, जबान सम्हारि कए बात करह! कोन बेटीचोद के कोठीक चाउर हम निकालि कए लए आनलियैहें हौ? कहि त' दियय अइ गामक कोइ आदमी? बिना परमान के बात नहि बाजल करह।'

—'परमान? हँ रे बाबू, परमान तँ तोरे टा हिरदय जानैत हेतौ।' —हीरा महतो कनी आस्ते भेल रहथि।

बासुदेव भगत मुदा, जेना हीराक बाते नहि सुनने होथि, घृणा आ क्रोधक पूर्ववत आवेग मे बजलाह—'आदमी केँ अपन औकात देखि कए बात करना चाही। खाइ ले बार नै बोल बड़ भारी हौ? बारहो बरनक अइँठ धोइ छह, अहिना धोइत जिनगी बिततह।'

एही सब तरहक दू-चारि टा आरो सूक्ति आ लोकोक्तिक प्रयोग ओ प्रायः कयने हेताह, से तकर स्मरण सोगक कारण हीरा केँ नहि छै, आ क्रोधक कारण बासुदेवो केँ नहि।

—एक माने मे अगर देखहक तँ बसुदेवा कोनो खराबो बात नहि कहने रहय!' —हीरा महतो अपने केँ अपना कहलनि—'तोंही ओकरा कम भारी बात कहि देलहक? —दोख तोरे छौ हीरा, कोइ दोसर दोखी नै अछि। जादब जी जखन मिनिस्टर भेलाह तँ ओहो तँ तोरा कहने रहथुन—हीरा छोड़ह ई धंधा, ठीकेदारी लाइन मे आबह। तोंही नहि गेलहक।

बरतन-बासन माँजि क' हीरा घुरलाह, तखन हुनका मोन पड़लनि जे जा, दूधबला केँ तँ आइ ओ मना क' देलखिन अछि। साँझ मे तँ आइ दोकान बन्द रहतै।

हीराक नस मे उत्साहक सुरसुरी पसरि गेलनि। ओ दोकान बन्न क' आँगन जायब उचित बुझलनि। धियापुता फुच्ची-शीशी जमा क' सकतै की नहि! दू टा केराक गाछ सेहो काटबाक अछि, गेटो बनाए देबै। दीप जरय आइ भारतमाता के नाम पर। वन्दे मातरम्। हीरा अपने केँ अपना कहलनि—'नै रे भैया नै, हारि तँ हम नहिमो मानबहु।'

कालि्ह सँझुकी पहर जिला जनसम्पर्क विभागक गाड़ी चैक पर एलै रहय। जीप सँ प्रचार होइत रहै जे अइ साल 'आजादी के पचासवीं वर्षगाँठ' छियै। स्वर्णजयन्ती। से, अइ दिन सब क्यो अपना-अपना घर मे 'दिवाली' मनाउ। हीरा सुनने छलाह, अझक्के-सन। कान-बात नहि देलखिन। एहिना बहुत तरहक प्रचार होइत रहै छै। मुदा, गाड़ी चैक पर आबि क' रुकि गेलै आ रुकि क' प्रचार करए लागलै। गोलम्बर पर ओहि काल मे 'एलेवन स्टार' के नौजबान सब गांजा पिबैत रहय। ओहि नौजबान सभक कान मे झर पड़लै आ दिक भेलै। ओ सब चहटि क' जीप बला लग आयल छल आ प्रचार बन्द करबा ले' कहने छलै। तकरा बाद 'एलेवन स्टार' क बॉस प्रचारबला केँ कहने रहैक—'आप किसके तरफ से परचार करने आए हैं?'

—बिहार सरकार के तरफ से।

—ओऽऽ। बिहार सरकार हमको कहता है दिवाली मनाने के लिए। ठीक बात है। लेकिन, हम तेल कहाँ से लावेंगे? बिहार सरकार हमको तेल का पैसा देगा? साला घोटाला करेगा वो सब और दिबाली मनाएगा पब्लिक? इतना बेकूफ समझते हैं पब्लिक को? बोलिए, जवाब दीजिए।'

प्रचारबला गुम्म भ' गेल रहय। बाँकी नौजबान सब हिहिया देने रहैक।

एहि क्रम मे जे हल्ला भेलै तखन हीरा महतो अकानने छलाह आ बात केँ बुझने रहथिन। प्रचारबला अपन जीप ल' क' आन-आन टोल प्रचार करए चलि गेल रहय। हीरा महतो केँ एलेवन स्टारक मन्तव्य बड़ स्पर्श कएने रहनि। ओ बड़ी काल एहि विषय मे विचार कयने रहथि। आ तखन अपने केँ अपना कहने रहथिन—रस्ता लेकिन ई ठीक नै भेलै हीरा! नै? की यैह हुअए जे हम सब किछु नहि करी? हमर कोनो फर्ज नै?'

आ, हीरा तखनहि निर्णय कयने छलाह जे आइ दिबाली मनौताह। दूधबला केँ रोकि देने रहथिन। तेलक इन्तिजाम कयने रहथि। आँगन जा केँ कनिमा आ धियापुता केँ निर्देशो द' देलखिन। मुदा, जुलुम देखियौ जे आइ भरि दिन बिसरल रहलाह।

हीरा आँगन घुरलाह। फुच्ची-शीशी ताकल गेल। बाती बनल। तेल पड़ल। केलाक थम्ह काटल गेल। गेट सजल। बाँसक बत्ती जहाँ-तहाँ बान्हल गेल आ ताहि पर डिबिया जराओल गेल। धिया-पुता आनन्द मे छल। सौंसे टोलक नेना-भुटका जुमि गेलै। मुक्त आलाप पसरए लागल। हीरा परम प्रसन्न छलाह। हुनकर मोनक उदासीनता जेना झरकि-झरकि धरती पर खस' लागल—एनमेन फतिंगा सब जकाँ।

ताहीकाल मे पण्डित भोलानाथ मिसर हीराक ओहिठाम पहुँचलाह। देखलनि जे सौंसे गामक भकोभन्न अन्हरियाक बीच हीरा महतोक दलान अछि जे जगमगा रहलनि अछि। पुछलखिन—की हीरा, ई की हौ?'

—आइ स्वर्णजयन्ती दिवस छियै कका।

—हँ हौ, प्रचार हमहूँ सुनने रहियै। इच्छो भेल रहय जे दीप जराएल जाय। मुदा, बिसरि गेलियै। तोहूँ हमरा नै कहलह!'

—'उचित बात कोइ थोड़े बिसरै छै कका!' —बहुत आस्ते सँ हीरा कहलखिन। जेना ओ पण्डितजी केँ नहि, अपने केँ अपना कहि हरल होथि!!

पण्डितजी आगाँ बढ़ि दरबज्जा पर जा क' चैकी पर बैसि रहलाह। ओहू ठाम जगमग करै छलै। बजलाह—'आबह हीरा, बैसल जाय कनीकाल।'

'हे यैह, अबै छी कका'—कहैत हीरा आँगन गेलाह आ ओम्हर सँ भरि चंगेरी पेड़ा लेने घुरलाह। सौंसे टोलक नेना-भुटका केँ पेड़ा बिलि्ह क' ओ पंडित जी लग पहुँचलाह। पण्डितजी एकटा पेड़ा लेलनि, एकटा हीरा अपनहु लेलनि।

इजोतक जगमगी आ पेड़ाक मिठास सँ प्रसन्न होइत पण्डितजी बजलाह—'वाह हीरा वाह, असल मर्द तों छह जे भारतमाताक पर्व मनेलह। ओम्हर देखहक जे सौंसे गाम अन्हार मे बिलाएल छै।'

बाल-गोपालक संग हँसी-खेल करैत हीरा एखन चंचल बनल छलाह। पण्डितजीक गप हुनका अचानक गंभीर बना देलकनि। बजलाह—'दुनू बात तँ अहीं कहै छियै कका! सौंसे गाम जखन अन्हरिया मे बिलाएल छैहे तखन हम असल मर्द कोना भेलहुँ?'

—'हँ, बात तँ ठीक हौ; मुदा ई ककर सक?' —पण्डितजी बजलाह।

'हें ऽ ऽ हें ऽ ऽ हें ऽ ऽ...' हीरा हँस' लगलाह। बजलाह—'अइ गामक पचपनियां केँ देखियौ कका! आ, अइ गाम केँ की सौंसे देशे केँ देखि लियौ। लोक गुलाम रहय। क्यो एकटा मर्द आदमी एलै, जुगुत बतेलकै, लोक जतन केलक आ आजाद भेल। थोड़ बरस बितलै कि फेर गुलाम भए गेल। आजादी केँ सम्हारि क' राखब जँ पार नहि लागय तँ एकरा की कहबै?'

ताधरि, बहार मे बच्चा-पार्टी मे घोल-घमसान हुअए लागलै। हीरा बहार निकललाह। ओ देखलनि जे उँचका बत्ती परहक एकटा डिबिया मिझा गेलैए, तकरा फेर सँ जरेबाक लेल बच्चा सब मे अफरा-तफरी मचल छैक। सब सँ बेसी परेशान अछि बबलू, पितम्बर पासवानक बेटा। हीरा महतो केँ ई दृश्य बड़ नीक लगलनि। ओ पण्डित जी केँ बजौलनि। कहलखिन—कका, एखने अहाँ पुछने रही ने जे ई ककर सक? हे यैह देखियौ! मिझाएल डिबिया केँ जरेबाक लेल कते बेचैनी छै!'

पण्डितजी बबलू केँ पीठ ठोकलखिन। हीरा ओकरा कोरा मे उठौलनि। बबलू मिझाएल डिबिया उतारलक। डिबिया मे तेल छलैहे, ओ बसातक झोंक सँ मिझा गेल छल। बबलुएक हाथें फेर डिबिया जरबाओल गेल। सब बच्चा थपड़ी पाड़ए लागल।

रानी अनारवती

—'धनि ने ई टाका जे बुढ़ा के फलनमा पद छुटलै। हय कनिमा, कहलकै रहय, जे ने करए कका, से करए टका। आ से टका हम फेकने जाइ? अखाढ़ मे जे तूँ लए गेलै पचास गो टका, से देलह? आ आइ फेनो माँगए जुमि गेलह! हम तोरा नहि देबह'—बुढ़ी छकोरीक कनिमा केँ ठाँहि-पठाँहि जवाब देलखिन।

आँगन मे ई गप होइत रहै आ ऊपर कोठा पर सँ बुढ़ा सब बात सुनै छलाह। बुढ़ा केँ बुढ़ीक गप बड़ा वाजिब बुझना गेलनि—धनि ने ई टका जे बुढ़ाक फलनमा पद छुटलै। पैंसठ-छियासठ बरखक भेलाह बुढ़ा छुतहरू मरर। जीवनक साठि बरख तँ ई पद लागले रहलनि—छुतहरबा, रे छुतहरबा! बाबू भैयाक नवतुरियो मे सँ की क्यो छुतहरू कहियो कहलकनि? आ आब? मठोमाठो लोक सब जँ आब टोकै छनि तँ हौ छुतहरू, यौ छुतहरू मरर! ठीके बुढ़ी कहै छथि—धनि ने ई टका!

बुढ़ा केँ मुदा, दया लागि गेलनि। छकोरीक बेटा के तबियत खराप छै। चारि दिन सँ जर नहि उतरि रहलैए। छकोरी हरियाणा मे कमाइए। बहुत दिन सँ टका नहि पठेलकैए। छकोरीक कनिमा चिन्तित छै। गामक दबाइ सँ ठीक नै भेलै। दबाइ बला कहि देलकै जे आब सहरसा लए जाहक। बुढ़ा केँ दया लागि गेलनि। कोठा पर सँ उतरि क' पुछलखिन—कनिमा, कते टका चाही? छकोरीक कनिमा केँ दू सएक बेगरता रहै। बुढ़ा द' देलखिन। कहलखिन—छकोरी केँ खबरि कए दियौ!

आन बखत रहितै तँ एहि बात लेल बुढ़ी बुढ़ा के एक लाख गंजन करितथिन। दू दिन धरि अट्टाबज्जर होइत रहितए। मुदा, एखन बुढ़ी किछु नहि बजलखिन। रोग-व्याधि मरनी-हरनी मे दस के मदद होना चाही, बुढ़ियोक ई नियम छियनि। मुदा, समाज तँ जुलुम अछि! छुतहरू मरर केँ पैसा छनि, तँ कोनो बुद्धि सँ झीटि क' खाउ! से की ओहिना पैसा होइ छै? सब केँ तँ बेटा छह। किऐ नै कमबै जाइ छह? एँऽऽऽ दीन हे दीन, साँय खेलक बड़ रीन... हम तँ कहै छियै जे भगवान सात घर दुश्मनो केँ एहने बेटा देथून!

छकोरीक कनिमा गेलै तँ बुढ़ा बुढ़ी केँ पुछलखिन—किऐ ओइ बेचारी केँ ओते

बात कहि देलिऐ? ओकर बेटा बेमार छै...

बुढ़ी कलखिन—कहबै नै? अखाढ़े मे हमर टका लेलक रहए एक मासक करार पर। आइ तलिक नै देलक। आ एतबा कहि क' बुढ़ी हँसए लागलथिन। बुढ़ा बूझि गेलाह—बुढ़ी उपरक मोन सँ कहने रहथिन। सब केँ होइ छै भाइ। जे करार छौ तैपर रह। आइ जँ रोग-व्याधिक बात नहि रहितए तँ छकोरीक कनिमा केँ एक छदाम भेटबैया नहि रहै।

बुढ़ा-बुढ़ीक संवाद होइते रहै कि टेलीफोनक घंटी बाजए लागल। यैह पाँच-छव मास भेलैए, बेटा गाम आएल रहनि तँ फोन लगबाए देलकनि। पहिने तँ किछु दिन भारी झमेला भेलनि। कखनहु घंटी टनटनाबए लागनि—बेर-बखत के कोनो विचारे नहि! फेर नहुँ-नहुँ बुढ़ा व्यवस्थित भेलाह। एखनहु फोन पर गप करै मे धकमकाइत छथि। मुदा, सब सँ भारी झंझटि होइए जखन सुतली राति मे अड़ोसिया-पड़ोसिया के फोन आबि जाइत छनि। एक तँ सुतली राति मे निन्न कामहि करू आ तैपर सँ सुतलाहा लोक सब केँ डाक दैत रहियौ। बुढ़ा तँ आजिज भ' गेल छथि! मुदा, बुढ़ी केँ फोन लगला सँ बड़ खुशी। घर बैसले बेटा-पुतहु सँ गप भ' जाइ छनि, आब की चाही?

बेटे के फोन रहनि। दिल्ली सँ। बुढ़ा गप करए लगलाह—हँ, हँ। सब ठीक... हँ, नीके। आबै छह? कहिया? दस दिन मे। बालें बच्चें? हँ हँ, सब इन्तजाम भए जेतै की! हे यैह काल्हिये! हे लैह, माय सँ गप करह...

बेटा सँ बुढ़ीक संवाद तँ विलक्षणे होइ छनि। चुनि क' दस टा तँ पहिने सबाल करती—ठीक छह ने? छोटकू ठीक छह ने? बड़कू ठीक छह ने? बुचिया ठीक छह ने? कनिमा ठीक छह ने? आ एहि सवाल-जवाबक बाद असिरबाद—खूब नीकें रहह बौआ... तारामाय के किरपा सँ... काली माय के किरपा सँ, दुर्गा माय के किरपा सँ, शंकर भगवान के किरपा सँ...

छव मास पर अशोक गाम आबि रहल छै। गामघर आबियो कहाँ होइ छै ओकरा? ओहो बेर जे आएल रहए तँ असकरे। पोता-पोतीक मुँह देखै ले' बुढ़ा-बुढ़ीक मोन लागले रहै छनि। ओहो की करत? कारबार बड़ झमटल छै। चाह-नश्ताक दोकान छै। छव टा नोकर खटै छै। चारि हजार-पाँच हजार के बिकरी छै। भाइ-बेरादरी छै। दोस्ताना छै दिल्लीक लोक सँ। ओकरा फुरसत कहाँ छै?

अशोक जे गाम आबि रहल अछि, तकरो कारण छै। दू-तीन मास पहिने दिल्ली मे डेंगू बोखार के चलती जागल रहै। अखबार मे देखनहि हेबै। बड़ा भारी आतंक पसरल रहै। दर्जन भरि सँ कम बिहारी मजूर की मुइल हेतै? कते लोक तँ डेंगूक डर सँ काज-रोजगार छोड़ि क' पड़ा आएल। की तँ जान बचत तँ डोरियो बाँटि क'

खाएब। मुदा अशोक अपन कारबार छोड़ि क' कतए जैतए ? धिया-पुता सभक पढ़ौनी बन्न होइतै, से समस्या! आ सौंसे परिवार केँ ल' क' एना धरफड़ा क' भागबो थोड़े सम्भव छै? ओ रहि गेल। ओ कहि गेल—जानता बाबा धरमराज।

कहमा तँ ओ कहि देलक—जानता बाबा धरमराज, मुदा अगिले हफ्ता मे जखन बड़कू केँ जर भेलै, ओकर अतमा काँपि गेलै। काज-रोजगार छोड़ि क' डाक्टर-बैदक चक्कर मे पड़ल। अशोक के कनिमा के तँ ई हाल रहै जे मुँह मे धान दियौ तँ लाबा भ' जायत। तुरत-तुरत ओ कबुला-पाती शुरु कएलक—दोहाय बाबा धरमराज के! जीव के बदला जीव देबह बबा! एक के बदला तीन देबह बबा! चानीक आँखि देबह बबा! झोरी छाप बटुआ देबह बबा! दोहाइ बाबा के। हमर बालबोध केँ थुकड़ि दैह...

बड़कू केँ डेंगू नहि रहै। चारि-पाँच दिनक दबाइ-बिरो मे ओ ठीक भ' गेल। पथ्य-परहेज करैत-करैत आठ-दस दिन मे ओ पूर्ण स्वस्थ भ' गेल। आब कनिमा अशोकक ठोंठ पर सबार भेल। किरपा बाबा धरमराज के जे बौआ हमर घुरि आएल। आब चलू सब सँ पहिने गाम। गोपालपुर (अशोकक मातृक) मे कबुला-पाती चढ़ाएब। चारिये-पाँच दिन मे घुरि आएब। मुदा, जा हम कबुला नै पूरा करै छी, हमरा चैन नै हएत।

एम्हर अशोक के अबैया सुनि क' बुढ़ा-बुढ़ीक सगरो दिन सगरो राति अही निर्णय-विचार मे बितए लागलै जे कोन चीजक इन्तिजाम कोना बढ़िमा हेतै। गोपालपुर समाद लए कए के जेतै ? भगता आब गोपालपुर मे नै रहै छै, चैनपुर मे रहै छै। ओकरा सुपारी ककरा मारफत पठाएल जाए ? छागर-पाठी गाम मे किनाएल जाए कि गोपालपुर मे। झाँप चाही झिलमिल चकमकिया बला। से अइ ठामक मलीबा बनाए सकतै ? सहरसे सँ मँगाबए पड़तै। कनिमा जे कबुला केलकै से तँ हेबे करतै, बुढ़ी केँ मोन छनि जे दू जोड़ झालि बाबा धरमराज केँ दियनि। भगैत मे झालि बाजतै तँ धरमराज के कान मे मिसरी घोरतनि।

कुल मिला क' यैह कहल जाय जे दस दिनका व्यस्तता लेल बुढ़ा-बुढ़ी केँ पर्याप्त काज भेटि गेलनि अछि। लागल रहू भरि दिन, भरि राति। बुढ़ा अपना जुगक नामी कमासुत तँ बुढ़ियो सब सँ जल्दी पाहि लगौनिहारि नामी बोनिहारिन। बुढ़ा, एखनहु जखन-तखन बाजैत रहैत छथि जे जहिया हमरा कोनो काज नै रहत हाथ मे, मास दिन बितैत-बितैत मरि जाएब!

आब, जकरा हाथ मे टका छै, तकरा कोन कमी छै मददगार के, कोन कमी छै समाज के ? घूरन गोपालपुर गेल, गाँगो चैनपुर। क्यो झाँप आनए गेल, क्यो छागर-पाठी ताकए। बुढ़ी माटिक दीप बनाबथि। बुढ़ी प्रसाद केँ चूनथि-बीछथि, फटकथि-

झारथि। बूढ़ी जखन-तखन ब्राह्मणक गीत, मालति माइक गीत, धरमराज बाबाक गीत गुनगुनाबथि—गोड़ तोरा लागौं हो धरमराज, पैमा तोहर पड़ौं, गरू बेर मे होहो ने सहाय....

पड़रीवाली कनिमा केँ बुढ़ी औडर देलखिन—कनिमा, आब पाँच दिन बाध-बोन जेनाइ छोड़ह। हमर काज सम्हारि दैह। जे ओन्ने कमेबह से बुझहक हमही देबह... परड़ीवाली बाधबोन जेनाइ छोड़ि देलकै आ सगरो दिन बुढ़ीक संगे परसाद कुटै-फटकै मे, अगड़म-बगड़म मे लागल रहल...

परड़ीवाली भारी कर्मठ आ ज्ञानी जनाना रहथि। हुनकर घरबला चुनचुन मंडल मुदा महाग कोढ़ि आ अहदी आदमी। कोनो खेती-पथारी नै, रोजी-रोजगार नै। डीह छोड़ि एको कट्ठा धनहर नै। बालबच्चा भुक्खल मरत, से हालति रहै। मुदा परड़ीवाली फाँड़ कसि क' बोनि-मजदूरी मे भीड़लि। साबिक जबाना मे पानि बाली बोनिहारिन ई बुढ़ी अशोकक माए रहथिन कि अइ जबाना मे परड़ीवाली छथि। परड़ीवालीक बेटा सब चेठनगर भेलै तँ बुढ़ीक पैरबी पर अशोक ओकरो दुनू केँ दिल्ली लेने गेल। एखन ओहो दुनू भाँइ हजार-बजार कमबै छै। अशोक तँ तते के उद्धार एखन धरि केलकै जे तकर कोन गनती!

परड़ीवाली केँ आँखि मे पानि छै। ओ अशोक के गुन कोना बिसरतै ? आ, ताहि अशोक के माय-बाप एतए गाम मे बिना बेटा-पुतोहु के रहै छै। एहि हालति मे परड़ीवालीक की कर्त्तव्य ? ओ कखनो अपन कर्त्तव्य मे बेतिरेक नहि करै छथि। भोरे उठि क' चाह। तखन जलखै बना क' बाध-बोन जेती। एगारहे-बारहक अमल मे घुरि एतीह। बुढ़ा-बुढ़ी मानितो छथिन बड़। एक दिन परड़ीवाली कहलखिन—कका, गाय किनि दौथु तँ हिनका दूध-दही के कमी नै हुअए देबनि। उठौनाबला के तँ हाल देखते छथिन—आइ बियाह, तँ काल्हि सराध। बुढ़ा एकमुश्त चारि हजार मे गाए किनबा देलखिन। बरखा मे घर चुबैत रहै। चुनचुन बुते छाड़ब-सम्हारबो कहाँ पार लागै छै! बुढ़ी जिद ठानि देलखिन जे परड़ीवालीक घर पर खपड़ा लगना चाही। खपड़ा लागलै।

बुढ़ा-बुढ़ीक सिद्धान्त छियनि—तूँ हमरा ले' एक करबह तँ हम तोरा ले' चारि अना बेसिये करबह। आ जँ नहि तँ तहूँ अपना घर, हमहूँ अपना घर। मुदा, गौआँक से सिद्धान्त नै छियै। क्यो सुख सँ रहैए तँ किऐ रहैए ? ककरो घर मे शान्ति छै, तँ किऐ शान्ति छै ? रौ बहिं, ककरो जीवन मे यदि शान्ति ब्यापि गेलै तँ तोरा नन्नोक तोड़ने सँ ओ टुटतौ ? तों अपने शान्ति ताकबें, से नहि ?

मुदा, से किऐ ? एक दिन भरत झा परड़ीवाली केँ कहलखिन—की परड़ीवाली ! नबका चलनसारि शुरू भेलैए ? आब राड़ो-रोहिया खबासिन राखत ? एक दिन चतुर मिसर कहलकनि—की परड़ीवाली, गामक सब बाभन 'घर भुजी भांगे नै' भए गेलै जे अहाँ राड़क हबेली धएलहुँहें ? आर तँ आर, एक दिन तिरबेनी महतो सेहो कहि देलकै—है परड़ीबाली, ओइ धिचोदा के तँ चलनिमा बेर आबिए गेल छै जे अपने जाति केँ अपने हबेली मे खटबैए, लेकिन तूँ तँ कनी बिचार करह ! बाभनक ऐंठ तँ बाप-पुरखा खाइत एलह, आब राड़ोक ऐंठ नहि छोड़बहक ?

आब परड़ीवाली की करत ? सौंसे गाम एक दिस, एसकर परड़ीवाली एक दिस। मुदा जियो रे वीर जनाना ! सब केँ ओ एक्के जवाब देलकै। एकदम खढ़ुआरल जवाब—जै अन्हरा केँ ई देखार पड़लैहें जे हम हबेली कमाइ छी से सहरसा जाए कए अपन आँखि के इलाज कराबौ गए। हमरा कोन कमी यै जे हबेली कमाएब ? हम तँ अपन सासु-ससुर के सेवा करै छी। अपन सासु-ससुर नै छथि, तै सँ की ? जेहने अपन, तेहने ओ ! आ ओ की हमरा अनका नजरि सँ देखै छथि ? अशोक अपनें दुनू-परानी गाम-घर मे नै रहै छै तँ हमर की धर्म छियै बाबू ? जे हमर धिया-पुता ले' ओते करै छै, तकर माय-बाप केँ छोड़ि देबै ? अपन धर्म तँ हम नै छोड़बै बाबू !

आ एहि गौआँ केँ देखियौ। सौंसे गामक राड़-बाभन एक अछि ! मुदा, एकटा अबला केँ ओकर कर्म सँ विरत कए पाबि सकलै ? रहलै कोनो बल समाज मे ? देखियौ !

आ, एही समाजक आब दोसर खिस्सा सुनियौ !

अशोक गाम आबि रहल अछि, ई बात चैबीसे घंटा मे सौंसे गाम पसरि गेलै। अशोक एखन समुच्चा गाम के एकटा स्तम्भ थिक। पहिने एकटा रहथि कमिश्नर साहेब, तखन एकटा रहथि इंजीनियर साहेब। ई सब स्तम्भ रहथिन। गाम आबथि तँ सौंसे गामक लोक दासोदास। कतेको के धिया-पुता केँ ओ जहाँ-तहाँ सेट केलखिन। हुनका परतापें कतेको घर मे चूल्हि पजरल। ओ लोकनि पैघ लोक रहथि तँ स्तम्भ रहथि। मुदा ई अशोक ? ई किऐ स्तम्भ औ बाबू ? ओ तँ ने सोति थिक, ने बाभन, ने पढ़ल अछि ने लिखल अछि। ने हाकिम थिक ने हुकुम। ई किऐ स्तम्भ ? मुदा, सौंसे गाम केँ बूझल छै—एखन अइ गाम मे बेर-बखत पर ककरो घर मे चूल्हि पजारबाक सामर्थ्य एक अशोके मे छै। एहन बेबहारी आ विवेकी लोक एहि धरती पर नै क्यो भेल ! कमिश्नर साहेब आ इंजीनियर साहेब जै-जै घर मे चूल्हि पजरबेलखिन, से बुझलहुँ, ओ सबटा घर बाभनक घर रहए। चपरासियो बहाल भेलै तँ बाभने,

भनसियो तँ बाभने। आर तँ आर, झाड़ूदार जे बहाल भेलै तँ सेहो बाभने। आ एहि मर्दराज केँ देखियौ ! उदित पाठकक बेटा बी-एस ? सी ? क' क' दिल्ली गेल—सोझे अशोक लग। ओ लोहो ढोइ लेल तैयार। लेकिन, अशोक कहलकै—किऐ भैया, लोहा किऐ ढोबह ? तूँ हमरा डेरा पर रहह। खाह पियह। हम देखै छियै। दिल्ली अछि की हम छी ! आ, मास दिनक अन्दरे ओ जुबक एकटा प्राइवेट अस्पताल मे रिसेप्शनिस्ट भए गेल। छव हजार के महिना। आब मौज करह। कहियो बुद्धन कामति के बेटा गेलाह, तँ कहियो पुलकित मिश्रक पौत्र। कहियो अर्जुन चैधरीक जमाय गेलाह तँ कहियो लूटन मुखियाक भातिज ! जे जै काजक जोग छल, तकरा ततए सेट केलक।

तँ की अशोक ओतए मजदूर सभक ठिकेदारी करैए ? दलाली करैए ? ओकरा अपना रोजगार सँ फुरसत कहाँ छै जे से सब करत ? हँ तखन, बारह बरख सँ दिल्ली मे रहैए। मजूर बनि कए गेल रहए, सेठ बनि कए कमा रहल अछि। जकरा-जकरा सँ सम्पर्क भेलै, सभक हृदय अपन बेबहार सँ; अपन इमन्दारी सँ जितलक। बड़का-बड़का सेठ-बेपारी आ हाकिम-हुकुम सँ ओकर दोस्ताना छै। ओकरे लोक फोन क' क' कहै दै—एक बन्दा दो अशोक। एक पढ़ा-लिखा लड़का दो। एक गार्ड दो। लोक जानैए, अशोक जकरा देत, से विश्वासी बहराएत। अशोको एहि बात पर चैकस रहैए। गमारी हिसाब-किताब ओकरा लग चलैबला नै छै।

से, गाम मे ई खबरि पसरल कि लोक बुढ़ाक दलान पर जुमए लागल। बुढ़ाक कोठा, बुढ़ाक सुखी बुढ़ारी, बुढ़ाक अमन-चैन जकरा कहियो फुटली आँखियो नै सोहाबै, सेहो सब एखन 'की समाचार कका', 'की हालचाल मरर' करए लागल। बुढ़ा तँ उड़ल कौआ केँ चिन्है छथि। ओ कहैत रहैत छथिन—औ बाबू, अइ दुनिमा मे ककरो लेल क्यो किछु थोड़े करै छै ? सब सँ पैघ छै अपन ज्ञान, अपन देहक पानि। हमर बेटा ककरो कतहु धराइये ने देतनि ? अरजताह तँ ओ अपने बुद्धि-विवेक सँ। अइ लेल तँ अहाँ सब बेकार हमरा लग आबै जाइ छी। आबए दियौ, ओकरे कहबै।'

भरत झा-सन लोक मुदा बड़ भारी जाबिर होइ जाइ छथि। ओ सीधे बुढ़िये लग पहुँचलाह—की अशोक के माय, सुख सँ रहै छी ने ?

आ एहि बुढ़ी केँ देखियनु। साठि बरखक छथि। भरत झा बड़ बेसी हेताह तँ चालीसक। मुदा, बुढ़ी हुनका पहिने गोड़ लागतनि। पहिने तँ पयर छुबै छलखिन। जहिया सँ बुढ़ा थोड़े टाइट भेलाहें आब ओ हाथ जोड़ि क' 'परनाम' कहै छथिन।

बुढ़ी कहए लागलखिन—बाबू, अहाँ सभक पएरक असिरबाद सँ बड़ सुख मे छी। कोनो कमी नै। एहने बेटा भगवान सब केँ देथुन।

मुदा, एहने बेटा भगवान सब केँ देथुन की नहि देथुन, एहि सँ भरत झा केँ

कोन मतलब? हुनका तँ अपन बेटाक लेल जगह बनेबाक छनि। एम? ए? पास, छिलथि ने घास। पीबथि ताड़ी, करथि चुहारी।

सीधा आडुर सँ कतोक बेर घीउ नै बहराइ छै, से सब क्यो जानैत हेबै। भरत झा अपन आडुर कोना टेढ़ केलनि, से भांज सुनू। ओ बुढ़ी केँ घिचने-तिरने अतीत मे ल' गेलाह—अशोक के माय! मोन यै ने? हमरा खेत मे अहाँ धान काटय जाइ! बाप रौ बाप, अहाँ सन के पनिगर जन नै कतहु देखलहुँ! की? सब सँ पहिने अहींक बोझ तैयार। आ हे, बोझो कते बड़का-बड़का बान्हियै यै! दोसर कोनो मौगी केँ रहै ओ हिम्मति? हमहूँ अहाँ केँ चारि मुठला कए बेसिये बोनि दी! मोन यै की बिसरि गेलियै?

बुढ़ी केँ बड़ा आनन्द भेलनि। अपन बड़ाइ ककरा नै नीक लागै छै? भरत झा तँ अपन बड़ाइ करै छलाह जे चारि मुठला केँ बेसी बोनि दी, बुढ़ी एम्हर अपन बड़ाइ सँ गद्गद् भ' रहल छलीह जे हमरा सन हिम्मतिगर के? बड़ी काल धरि बुढ़ी बाध-बोनक गप, बोनि-मजूरीक गप करैत रहलीह।

मुदा अन्त मे फेर वैह गप—लोक केँ तँ अपने बुद्धि ज्ञान काज दै छै ने बाबू! हमर बेटा की करत? कतहु धराइये ने देत! बाँकी तँ अपने हाथ मे छै!

जहिया सँ बुढ़ी केँ ई खबरि भेलनि अछि जे पूजा-पाठ करै लेल गोपालपुर जाना छै, एक आरो बात हुनका हृदय मे रहि-रहि कए हूक मारै छनि। गोपालपुर हुनकर नैहर छियनि। नैहर मे नेनपन बितलनि। नैहर मे बाप-सन के बाप रहथिन, से सब गप तँ अपना ठाम! बुढ़ी केँ ई सब गप नै मोन पड़ै छनि। अपन नेनपन नहि। गोबर आ जारनि बिछनाइ नहि। गाछी-गाछी घुमनाइ नहि। बुढ़ी केँ एक्केटा बात एखन मोन पड़ै छनि जे हिनकर बाप अपन बुढ़ारी मे बबाजी भए गेल रहथिन। चुट्टा-कमंडल धए लेने रहथिन। घर-दुआरि त्यागि देने रहथिन। से किऐ तँ अपन बेटा-पुतहुक कारण। तते सरापनि ओ मौगिया हुनका आ तते बलगोमना-सन लूलू-थूथू करनि बेटा जे बेचारे बाप-पुरखाक डीह त्यागि रन-बन बौअएलाह। ओम्हरे कतहु मरि-खपि गेलाह। तकर कारण के? तकर कारण हुनकर एकमात्र बेटा, बुढ़ीक सहोदरा।

से सहोदरा, खुशीलाल मंडल, तीन साल भेल, एक बेर एहिठाम एलाह। ओना किए अबितथि? ओना कहिया एलाह? बहीन के मुँह देखना तँ हुनका बारह बरस कहू की चैबीस बरस, तते दिन भए गेल रहनि। ओना ओ आबै बला जीव नहि जा किछु लस्टम-पस्टम नहि होइक। अशोक गाम आएल अछि, से कोना ने कोना हुनका मालूम भए गेलनि। बस, चलि एलाह। से जे एलाह तँ ओम्हर सँ कानिते एलाह,

हाथ पसारनहि। बहीन, बड़ हम पापी छी। बड़ हम अत्याचारी छी। लेकिन, सात घर दुश्मनो केँ लोक माफ करैए, हम तँ तोहर सहोदरा छियौ। किऐ हौ बाबू? किऐ एते घौना? तँ बेटा पंजाब-हरियाणा कमाइए, एक पैसा नै दैए। अन्न बेत्रोक मरै छी। देह मे आब पैरुख नहि रहल। हर-फार मे सकै ने छियै। एकटा महीस कीनि दे। साल भरिक अन्दर मे तोहर पैसा-पैसा हम चुकता कए देबौ।

अशोक एहि बात पर की बाजितए? ओ बुढ़ी केँ पुछलकनि—माय! की कहै छें?

बुढ़ी कहलखिन—बौआ, कतबो किछु छियौ तँ तोहर ममा छियौ।

अशोक पाँच हजार टका बहार कए अपन माम केँ दए देलक। एक साल के कहए, तीन साल बीति गेलै। कते बेर बुढ़ी समाद पठेलक। कते बेर आदमी भेजलक। कते बेर चिट्ठी लिखौलक। कोनो जवाब नहि। टाका घुरेबाक तँ प्रश्ने नहि।

बुढ़ी केँ रहि-रहि क' करेज मे हूक मारै छै। हमरा एकटा बेटा तँ एते करैए, तोरा तँ तिन-तिनटा बेटा छौ। तैयो दलिदरा सँ निस्तार नहि? ... आ सहोदरा छें तँ छें, हमरा ले' की करै छें? जे हमरा ले एक करत तकरा ले हम दू करबै। लेकिन तोरा ले हम किऐ करबौ? तोहर की जानै छियौ? तूँ तँ डकूबा, हमरा बाप केँ मारलैं। तूँ तँ रे बइमनमा ओइ साधु केँ सतेलैं। तोहर कोनो निस्तार नै छौ!

एहि हूक सँ छटपटाइत बुढ़ी निर्णय करै छथि—अइ बेर हम तोरा नै छोड़बौ। टका ला नै तँ दुआरि परहक महीस खोलबौ। अइ बेर नै छोड़बौ रे धरकटबा!

निर्णय ई होइए जे पूजा-पाठक बाद जखन बुढ़ी घुरए लागतीह तँ महीस खोलबौने एतीह। की घूरन, की चुनचुन! महीस हाँकि कए आनि हेतह ने?

हँ काकी, ई कोन भारी बात भेलै! —घूरन आ चुनचुन कहै छनि।

चारि दिनुका बाद अशोकक पठाओल ड्राफ्ट बुढ़ा केँ भेट गेलनि। फोन पर बेटा कहिये देने रहनि जे दस हजारक ड्राफ्ट पठेने छियह। रजिस्ट्री चिट्ठी लए कए छेदी झा डाकपीन एलाह। ओ गमि गेल रहथि जे एहि चिट्ठी मे ड्राफ्टे छै। अपना हुनका किछु खगता रहनि। बुढ़ा हुनका समय-समय पर थोड़-बहुत मदति केने रहनि। आइ ओ किछु बेसी खगता मे रहथि आ कि की बात, जानथि भगवान।

रजिस्ट्री दैत काल ओ बुढ़ा केँ कहलखिन—हमरा एकटा अरजी करै के रहै।

बुढ़ा गमि गेलाह। ओ बुढ़ियो केँ बजा लेलखिन।

—की? की यौ बाबू!

—हमर घर-दुआरि तँ देखिते छियै। कुकुर-बिलाड़िक खोभार बनल छै।

घरहट जँ नै कए लेबै तँ ई भदबारि कोना खेपबै?

—से हमरा की कहै छी बाबू?

—कहैत रही जे दू हजार टका दियऽ। बेटा हमर राजस्थान मे कमाइए। जहिना ओ पैसा पठाएत हम बेमाक कए देब।

आब बुढ़ी आगू एलीह। कहलखिन—बाबू, अहाँ केँ तँ हम एक बेर डेढ़ सय, एक बेर पौने तीन सय आ एक बेर पचपन गो टका देने रही। से अहाँ घुरेलहुँ?

छेदी झा हँसए लगलाह—एह, अहाँ-सन लोकक लेल ओतबा पैसा की छियै!

बुढ़ी कहलखिन—हँ ठीके कहै छी बाबू! हमरा बेटा ले एतबा पैसा किछो नै छियै। लेकिन, ई पैसा एलै कोना? हमर बेटा चोरी-डकैती कए कए तँ नहि आनलकै। हमरा बेटा लग एलै आ अहाँ लग किए नै आएल?

छेदी झा अपन ढंग थोड़े बदलि लेलनि। ओ बजलाह—देखियौ अशोक के माय, हम तँ अहीं सब के मदति कए कए गुजर करै छी। आइ जँ हमर दिल बैमान भए जाए तँ ई ड्राफ्ट अहाँ केँ भेटत?

बात आब बदलि गेल रहए। छेदी झा अपन दवाब काएम करबाक लेल ब्रह्मास्त्र छोड़ि देने रहथि। हुनक अनुमान रहनि जे आब बुढ़ी केँ भागने बाट नै भेटतनि। बुढ़ा थोड़े थकमकाइयो गेल छलाह। ई सब ब्राह्मण थिका! हिनका सब सँ अराड़ि केने दिकते दिक्कत। कोन काज छै एते झंझटि के। दू हजार माँगै छथि तँ पाँच सए दइए दै मे की हरजा? बुढ़ा शान्तिक बाट ताकए लागल रहथि।

मुदा, बुढ़ी पर एहि ब्रह्मास्त्र के कोनो टा असर नहि। ओ साफ-साफ कहलखिन—यौ बाबू, टाका हम अहाँ केँ नै देब। अहाँ संग लेनी-देनी हमरा चलैबला नै यै। आब अहाँ कहै छी जे डिराफे राखि लेब तँ राखि लियऽ। हमर की करमो अहाँ राखि लेब? हम कहै छियै बेटा केँ जे हौ बाबू, आब जे डिराफ पठेबह से डाकपीन साहेब राखि लेथुन। कहि दहक सरकार केँ जे दू हजार माँगै छथि तब जाए कए डिराफ देथुन।

से कहलहुँ जे बुढ़ी के पराजित कएनाइ बड़ कठिन छै। हुनका भीतर जे शक्ति छनि से सीधे धरती सँ एलनि अछि। थाल सँ, कादो सँ। माटि सँ, धूरा सँ। माथ परहक भारी बोझ सँ, बाबू-बबुआनक गारि-फज्झति सँ। बुढ़ी केँ परास्त कएनाइ महाग कठिन छै।

गोपालपुर गाम के पछिमबरिया सिमान पर खुशीलाल मण्डल के खोपड़ि छलनि। जेहन मिथिलाक कोनो गाम भ' सकैए, तेहने गाम रहै गोपालपुर। जेना कोनहु गामक बहरबरिया सिमान सब पर शूद्रक टोल होइए, तहिना ओहू गाम मे रहै। अन्तर रहै

तँ एतबे रहै जे अशोकक गाम जँ बाभनक गाम छल तँ खुशीलालक गाम भुमिहारक गाम रहै। अन्तर रहै एतबे जतबा अन्तर चुप्पी आ हल्ला मे होइ छै। खुशीलाल कहियो काल कहितो अछि—लाला के लटपट, बाभन के हाला। भुइँहार के चुप्पी, बाद मे बुझाला। मुदा, अहाँ जँ कहियो ओहि गाम जैतहुँ तँ खाली एतबे टा अन्तर नहि बुझाइत। अन्तर आरो रहै। गोपालपुर गाम मे कोनो शूद्रक खोपड़ि पर खढ़ नहि रहै, जकरा मोहाबरा मे घर पर खढ़ हएब कहल जाइ छै। एहन एक्को टा खोपड़ि नहि रहए, जकरा घर कहल जा सकैक। बीसम शताब्दी बेचैनी सँ बीति रहल छल, मुदा ओहि गामक एको टा शूद्र एखन धरि मैट्रिक पास नहि क' सकल रहय। पाँच सए घरक गाम रहै। दू सएक करीब भुमिहार रहथि, आ तीन सएक करीब शूद्र हुनक सेवार्थ। भने तँ कहै जाइ छियै अहाँ सब—ग्लोबल भिलेज। ठीके ओ सब ग्लोबल भिलेज के बशिन्दा छल। गोपालपुर मौजाक खतियान मे, जमाबंदी बही मे कोनो शूद्रक खाता नहि चलै छलै, ओ सब पृथ्वी-ग्राम के बासी रहए आ ठाकुर लोकनिक खरीदल खबास। आब ई बात भिन्न जे ओहो गाम मिथिले मे रहै आ किछु अति उत्साही बन्धु लोकनि मंच सब पर, भाषण सब मे, कविता सब मे ओहू शूद्र सब केँ मैथिल कहल करथि।

खुशीलाल केँ तीन टा बेटा रहनि। तीनू बाहरे रहै छल। ठाकुर लोकनिक परदेशी कमौआ बेटा सब लग, जमाय सब लग ओ सब घरेलू नौकर छल। जेठका बेटा विद्रोही बहराएल तँ चन्द्रानन ठाकुरक बहिनोइ ओतए सँ पड़ा क' हरियाणा चलि गेल। मुदा गेल तँ चलिये गेल। ओकर गाम छुटि गेलै। खुशीलाल केँ भरल पंचैती मे गछए पड़लै जे ओहि बेटा सँ हमरा आब कोनो लेना-देना नहि अछि।

समय बदलि रहल छल। एहू गाम मे समय बदलि रहल छल। मुदा, खुशीलालक लेल समय तते आस्ते-आस्ते बदलि रहल छल जे ई भरोस करब कठिन छल जे समय बदलि रहल अछि। ओ महीस जरूर किनलक। मुदा, भाभंस ने हेबाक छलै, ने भेलै। ठाकुर लोकनि उठौना लेथि। पाइ नहि देथि, गहूम-मकइ-चाउर देथि। कहियो काल जँ टाका देथि तँ से कपड़ा-लत्ता मे, दबाइ-दारू मे सधि जाए। ओकरा लेल कोनो फरक नहि पड़ल रहै। ओकरा लेल समय ठहरल रहै। ओकरा लेल ने कोनो शताब्दी आबि रहल छल, ने जा रहल छल।

अहूँ केँ बूझल हएत जे तेरह टा समस्याक समाधान एकटा लचारी होइ छै। बहीन के बैरन आबए। खुशीलाल सोचए—बहीने ने छियै। चाम तँ नहिमो ने छीलि लेतै! बहीन के आदमी आबए। खुशीलाल कहए—हमर तँ हालति देखते छह। बहीन केँ कहिहक धैरज धरै ले। जीलहुँ-बचलहुँ तँ बेमाक कइए देबै। आ जँ से नहि तँ लै जाह महीस खोलि कए। आ बहीन केँ कहि दिहक जे खुशी मण्डल आब बालें-

बच्चें गेलाह! हमरा की कोनो दोसर असरा यै?

आ, एहि बेर जखन समदिया कहै ले आएल जे बृहस्पति दिन बुढ़ी अपन बेटा-पुतोहु संगे कबुला-पाती करै ले आबि रहल छथि तँ संगे संग खुशीलाल केँ इहो कहि देल गेलनि जे बुढ़ी के पाइ-पाइ पहिनहि चुकता कए दहक आ जँ से नै तँ बुढ़ी जँ एलह तँ अइ बेर महीस खोलनहि जेतह।

ई समाद सुनि कए खुशीलाल के घर मे तेना कन्नारोहट मचि गेलै जेना स्वयं खुशीलाले मरि गेल होथि। हुनकर कनिमा अपन भाग-करम केँ सरापए लगलीह। दुनू टा बेटी आफन तोड़ि-तोड़ि कानए लागल। समाज केँ भेलै जे भाइ की बात छियै तँ ओहो सब आबि कए खुशिये लाल केँ पाँच टा बात कहलकै। ठाकुर लोकनि मुस्कियाबए लगलाह।

अशोक के अबैया दस तारीख केँ रहै, मंगल दिन। नौ तारीख अबैत-अबैत कबुला पाती के भारी तैयारी पूरा भ' गेल रहै। एकदम्म सँ सब फिट्ट। छागर-पाठी सँ ल' क' चानीक आँखि आ धरमराज के झोड़ाछाप बटुआ धरि बनि क' तैयार छल। मंगल दिन भोरे सँ अँगना चमाचम करए लागल। कोठा झाड़ल जाए चुकल छल तँ अँगना तिन-तिन निपान खा चुकल छल। अशोक के अबैया छलै दस-एगारह बजे राति कें। से बुझू जे ओ राति छुतहरू मररक आँगन मे दीयाबातीक राति बनि क' उतरल। साँझे-राति जाहि घर-आँगन मे बुढ़ाबुढ़ी खा कए सूति रहथि आ सगर राति अन्हरिया कान गुजू कान गुजू खेलाबए, ताही घर-आँगन मे एहि अधरतिया मे चारि-चारि टा लामटेम जरैत देखि सौंसे गामक कुकूर अगल-बगल सँ टोह लेबए लागल छल जे भाइ, आइ बात की छियै! गामक कुकूर सब परदेसिया अशोक केँ नहि चिन्है छल आ स्वाभाविके जे ओकर गाम एबाक सूचनो ओकरा सब केँ नहि रहै। ओहू गाम मे कुकूर कुकूर होइ छल आ मनुक्ख मनुक्ख। एगारह बजेक करीब अचानक फोनक घंटी टनटनाबए लागल। सौंसे घर-आँगन मे हदबदी पैसि गेलै। एँ? अइ अधरतिया मे फोन? ककर फोन हेतै? कतए सँ? के केने हएत? एकटा समाजी कहलकै जे अशोकक फोन हेतह। सहरसा सँ केने हएत। गाड़ी सँ उतरल तँ सोचलक जे पहिने फोने क' दियै। बुढ़ी चिन्ता करए लागलीह जे गोपला पहुँचलै की नै पहुँचलै? जीप-गाड़ी रिजभ केलकै की नै केलकै? टीसन पर ओकरा सँ भेंट भेलै की नै भेलै?

बुढ़ा फोन उठेलनि। ठीके, अशोकेक फोन रहै। मुदा, फोन ओ सहरसा सँ नहि, दिल्ली सँ क' रहल छल। एँ? एलहक नै? किऐ? आहि रे बा! एम्हर तँ सब

तैयारी भेल छै हौ! एह, एहन कतौ होइ? जकर कबुला छियै, सैह नै रहतै तँ कतहु पूजा होइ? आइ तक तँ एना नै भेलैए। जहिया तूँ एबह तहिये हेतै, से नै? अच्छा तँ बेस। हँ, सब भए जेतै। कनिमा केँ कहिहक बृहस्पति केँ उपास कए लेथिन।

सौंसे आँगन के उत्साह एक पल मे फीका पड़ि गेलै। अशोक नहि आबि रहल छल। ओकरा जरूरी पड़ि गेल रहै। दिल्ली मे ओकर दोकान रहै सरकारी जमीन पर। तकरा हँटाबै के आदेश भेल रहै। दोसर दोकान ओकरा भेटियो गेल रहै। मुदा, ओ सोचै छल जे जाधरि चलतम्, ताधरि चलतम्। एहि जगह पर पुरान जमल दोकान रहै। एकर बिकरी के परतर नबका जगह एखन थोड़े करितिऐक? मुदा, प्रशासन के औडर रहै—दस तारीख धरि जँ नहि हँटल तँ पुलिस हँटा देत। पुलिसक हँटेने बेरबादी होइतै। ओ अपनहि हँटा लेबए चाहै छल। ओकरा लेल दोकान केँ व्यवस्थित करब बेसी जरूरी रहै। कबुला चढ़ेबाक दोसरो विकल्प रहै, दोकान हँटेबाक कोनो विकल्प नहि रहै।

आब समस्या छल जे ई कोना हेतै? अशोक नहि आएत आ बुढ़ा-बुढ़ी जा क' कबुला चढ़ा एताह? एहन कतौ भेलैए? एहन कतहु भेल होइ कि नहि, एतए ई भ' कए रहल। तकर दू टा कारण छल। एक तँ ई जे सीधे अशोक के हुकुम रहै आ दोसर ई जे बुढ़ी केँ अपन भाए सँ पाँच हजार ओसुलबाक रहनि। बुढ़ी मानि गेलीह। आ भारी हनहन-पटपट पार्टी बुढ़िए जखन मानि गेलीह तँ आब एहि चीज केँ हेबा सँ के रोकि सकै छल?

खुशीलाल मोनेमोन मनाबए जे हौ बाबा धरमराज, कहुना किरपा करह, एहन जोगाड़ धराबह जे ई सब नहि आबि पाबय। सौंसे टोल मे अशोक-सन लक्ष्मीवान के एबाक हर्ष रहै। मासु-भात के भोज के उछाह रहै। एक खुशीलाले छल जे कोनहुना एहि जाचना मे पड़ै सँ बचए चाहै छल।

मुदा, जाचना जाचने बनि क' एबाक छलै। आखरी समाद आबि गेल जे अशोक तँ गाम नहि आएल मुदा बुढ़ा-बुढ़ी एताह आ कबुला चढ़ाएले जेतै। खुशीलाल के बचलो खुचल उमेद जाइत रहलै। जँ अशोक आबितए तँ रछिया के कोनो बाटो रहै। आब?

खुशीलाल दू टा काज केलक। सब सँ पहिने तँ ओ अपन दरबज्जा पर सँ महीस खोललक आ सकुन ठाकुरक थरि पर जा कए बान्हि एलै। सकुन ठाकुर केँ मामला के अंदाज रहनि। तैयो पुछलखिन—की रौ खुशिया, की बात छियै रे?

खुशीलाल कलपए लागल—रछिया करह मालिक। हमर बहीन डकिनिमा

आबि रहल छै। ओ हमर सम्पति नै छोड़तै। सकुन ठाकुर हँसए लागल रहथि।

दोसर काज ओ ई केलक जे गाम सँ निपत्ता भ' गेल।

नियत समय पर बुढ़ी एलीह। ओ सीधे जीपे रिजर्व क' क' आएल छलीह। सौंसे टोल मे हर्ष पसरि गेलै। बूढ़-पुरान सब जुमि कए नाना पुराण निगमागम करए लगलाह। धियापुता खुशी मे थपड़ी पिटैत, झगड़ा-दन करैत, अनघोल मचबैत जमा भ' गेल। सौंसे टोलक लोक, सौंसे घर-परिवारक लोक अपन घर-समाजक एहि समर्थि बेटीक स्वागत मे फगुआक अबीर जकाँ बिखरि-पसरि जाइत रहलाह।

भगता-भगतिया सब जुमले रहथि। खूब भेलै। मृदंगक मतंगिया थाप पर पान भेलै, परिच्छा भेलै, धरमराज एलाह, काली-कमला-ब्रह्म सब अबै गेलाह, बलि पड़लै, भोज-भातक तैयारी हुअए लागलै। तखन बुढ़ी एलान केलनि जे तीन टा जे छागर-पाठी पड़लैए तै मे सँ दू टा तूँ सब राखह, चाउर-दालि-तेल-मसल्ला लेने आएल छियह से अपन राखह, भोज-भात करै जाह, हम सब बूढ़-सूढ़ छी, घर-दुआरि क्यो देखनिहारो नै, हम सब आब घुरबह।

दोसर एलान बुढ़ी ई केलनि जे खुशिया महा धरकट अछि। बैमान अछि। डाकू अछि। बापक जनमारा अछि। ओ बैमनमा हमर टाका धारैए। करार पर देलक नै। से हम ओकर महीस खोलने जेबै।

एते टा गाम, एतेटा समाज! ई कोनो मश्किल बात तँ रहै नहि जे बुढ़ी केँ पता नै लागितनि जे खुशिया कतए महीस बान्हने अछि। हुनका पता लागि गेलनि।

बुढ़ी सकुन ठाकुरक थरि पर गेलीह। संग-संग चुनचुन आ घुरन रहनि।

सकुन ठाकुर कहलखिन—एना किऐ करै छिही अनरिया? खुशिया तँ तोहर भाइये छियौ!

बुढ़ी कहए लागलीह—करबै नै मालिक! भाए छी तँ छी। ई एना ऊ ओना। सबटा खिस्सा। करबै नहि? आ, दस हज्जार गप्प। बुढ़ी तँ फौज केँ हराबैबला करेज राखै छली, सकुन ठाकुर केँ हराएब हुनका लेल कोन भारी छल? आ एहू बातक की गारंटी जे सकुन ठाकुर खुशिया दिस सँ लड़िये रहल छलाह, एहि घटनाक्रम सँ अपन मनोरंजन नहि क' रहल छलाह?

सौंसे गाम हल्ला मचि गेलै जे बुढ़ी खुशीलालक महीस खोलने जा रहल छथि। आब हौ खुशीलाल? मालिकक थरि पर महीस बान्हने की भेलह? पड़ेने-नुकेने की भेलह?

खुशीलाल पछिमबरिये टोलक दच्छिन सिमान पर एकटा पासवानक घर मे नुकाएल रहए। ओकर सी? आई? डी? चैचंक रहै। सबटा खबरि ओकरा तुरंत भेटि गेलै।

मथा हाथ देने, परम व्याकुल ओ माँझ घर मे बैसल रहए जखन सी? आई? डी? ओकरा आखरी खबरि देलकै। टप... ओकरा आँखि सँ एक भरपूर बुन्न नोर धरतीक छाती पर खसि पड़लै।

ओ अपन मूड़ी उठेलक। दुनू आँखि नोर सँ डबडब रहै। ओ सी?आई?डी? दिस ताकलक। ओकर ताकब मे ताकब-सन के कोनो चीज नै रहै। ओ शून्य केँ चीड़ब रहै। खुशीलाल बाजल—'धुः! आब की? आब चलै छियह...'

भरिये दिनका भूखल रहए खुशीलाल, मुदा जनम-भरि के भूखल-सन लागए। प्यास भरिए दिनका रहै, मुदा जनम भरिक प्यास-सन लागय। कमजोरी भरिये दिनका रहै, मुदा जनम के कमजोरी-सन के लागए। नहुँ-नहुँ डेग उठबैत, हरेक डेग पर काँपैत, मुदा हरेक डेग पर अपना केँ मजगूत बनबैत खुशीलाल बहीनक आगू मे जा कए ठाढ़ भेल। बहीन महीस ल' कए सकुन ठाकुरक थरि सँ विदा भ' रहल छलीह।

उघार देह। गमछा पहिरने। गरदनि मे करिया बद्धी। सबटा केश, माथोक केश, छातियोक केश, मोछोक केश उज्जर धपधप। हौले-हौले अपन देह केँ जबर्दस्ती घिचैत, बाट पर बढ़ैत ई नरकंकाल? खुशिया? हँ, खुशिये! बुढ़ी अवाक। टुकुर-टुकुर ताकैत रहि गेलीह। टुकुर-टुकुर। हतवाक।

खुशीलाल हिललाह। बहीनक आगू जा कए झुकलाह। कहलखिन—थम्ह, कनी गोड़ लागए दे...

खुशीलाल बुढ़ीक पएर दिस निचाँ लबला। हुनका आँखि सँ एक आरो भरपूर बुन्न नोर धरतीक छाती पर खसलै—टप...

अकस्मात् बुढ़ी केँ जेना बकार फुटलनि—खुशिया रे! तूँ एते बूढ़ भए गेलही रे? तीने साल मे तोहर ई दशा भए गेलौ रे? तू हमरो सँ बूढ़ रे?

बुढ़ी भरि पाँज कए खुशीलाल केँ पकड़ि लेलखिन।

ओर-छोर

एहन कानब नहि देखल रहए। मिनट बितैत-बितैत प्राण अवग्रह मे पड़ि गेल। अस्सी बरखक बूढ़, रोगाह तेहन जे आइ मरथि काल्हि मरथि—आ तिनकर कानब!

कण्ठ बाझि गेल मुदा व्याकुलता तेहन जेना करेजा निकलि क' खसतनि। कानथि आ नेहोरा करथि—बाबू, एहि छौंड़ा के माथ मौर चढ़ा दै जाहक कहुना। हमर उद्धार करै जाह बाबू! पएर पड़ै छियह।

हम गुम्म भ' गेलहुँ। की बात? की अड़चन छै नुनुआँ के बियाह मे? के ओकरा माथ मौर चढ़ै मे बाधक अछि? काकी कहलनि—दुलारचन देखि एलैहें कते ठाम लड़की। लेकिन कतौ ठीके नै करै छै। लड़कीबला सब आब कहै जाइ छै जे देखै छियै के जातिबला अपन लड़की दै छै। तें कानै छह!

बुढ़ा केँ कहलियनि— ठीक छै कका, सब ठीक भए जेतै। हेतै नुनुआँ के बियाह। हमरा तँ तूँ नै कहियो किछु कहलह...

हम दुलारचन केँ पुछलिऐक। ओ कहए लागल—हम देवीनगर गेलियै। ओइ ठाम लड़की जे हम देखलियै से हमरा बकलेल बुझि पड़ल। बलबा गेलियै तँ ओइ ठामक लोकक बेबहारे बड़ मोट, ओइ घरक लड़की नुनुआँ केँ ठीक नै हेतिहै। गोपालपुर बला सब पहिनहि गछित करबाबए लागल जे कुटमैती करना हो तब तँ हमर लड़की देखू, नै तँ खुदा बना छी। ओकर हम लड़कियेे नै देखलियै। बस, एतने बात छै...

हम दुलारचन के माय केँ पुछलियै—'की यै काकी! ई ठीक कहि रहल हें?'

ओ झझकारि क' बाजि उठलि—'धौर! ई की ठीक कहतह बाबू! हम बाजब तँ ई पुतखौका हमरा ओधबा-बेधबा कए कए मारत। लेकिन मारत तँ मारत! एकर नेंत बैमान छै बाबू! ई अपने फेर मे छै। एकर कहनाइ की तँ जे लड़कीबला एकरा अलग सँ मोटरी बान्हि कए देतै तैठाँ ई कुटमैती करत। के लड़कीबला से एकरा देतै बाबू? अही दुआरे नुनुआँ के कथा ई नै हुअए दै छै...

दुलारचन तरङिउठल मुदा हम ओकरा रोकलियै। पुछलियै—'अक्खन कतहु

सँ क्यो लड़कीबला एलहहें?

काकी जबाब देलक—'एलैहें ने? यैह तँ शिवपरसाद के कनिमा लागल छै! पुरन्दाहा बाली लड़की पर। आइयो आबि कए घुरलैहें।'

शिवप्रसाद मण्डल गामक नम्बर एक तिकड़मी लोक छलाह। समझ-बूझ मे अव्वल बुड़बक मुदा हाइस्कूल मे मास्टर छलाह। हुनकर कनिमा केँ धनिक आ गुणमन्ती दुनूक घमंड भरि पोख रहनि। सौंसे गाम-समाज मे क्यो शिवप्रसादक परिवार केँ नीक लोक क' क' नहि बुझैत छल। तेहन लोक नुनुआँक कथा मे भिड़ल अछि, से बात हमरा नीक नहि लागल।

काकी कहलक जे लड़की शिवप्रसाद के सरबेटी छियै। सार मरि गेलै। धनसम्पति के मालिक मसोमात। मसोमात केँ बेटा नहि, तीन टा बेटिये। ई छोटकी छियै। शिवप्रसाद के गछित छै जे छोटकीक बियाह ई अपना पूँजी सँ कराओत। तें भिड़ल अछि। बियाहो कराएत अपने ओहिठाम सँ।

मोन मुदा मानलक नहि जे शिवप्रसाद सन लोक एते सोझ कारण सँ कोनो बात मे लागत। देवकी इशारा केलक जे भैया, हो न हो, बेटीक बियाह करा क' खरखाही लैत मसोमात लग मे भोचर बढ़ाए देतै, एक के तीन खरचा बतेतै आ कहतै जे टका अहाँ कतए सँ देब, जमीने हमरा लिखि दिय'—हमरा तँ सैह बूझि पड़ैए।

हम दुलारचन केँ कहलियै—'हौ बाबू, आब जे ओम्हर सँ कोनो गप-सरक्का हेतह तँ कनी हमरो खबरि दिहह।'

नूनूलाल सात बरख सँ दिल्ली मे रहैत रहए। चिक्कन पाइ कमेलक। गामक लोक केँ कोनो चमत्कार तँ देखबा मे नहि एलै मुदा ओकर बोली-बानी आ रहन-सहन मे आएल परिवर्त्तन सँ साफ रहै जे पाइ ओकरा जथगर जमा छै। तकरा ओ बैंक मे राखए। चरफर रहए जरूर, मैट्रिक पास केँ जते होना चाही, ताहि सँ थोड़े बेसिये, लेकिन से मुदा दिल्लिए धरि। गाम-घर मे शिष्ट-शालीन धिया-पुता बला ओकर बाना रहै। तें अपनो बियाह लेल ओ भाइये पर आश्रित छल। दुलारचन ओकरा सँ पाइक उमेद करए। गाम-घर धेने छी तँ अपने टा लेल नहि, तोरो लेल। माय-बाप तोरो छियौ। तुहूँ किछु तँ मदद करबें ने भाइ, से दुलारचन के कहब। नूनूलाल के मुदा दोसर सोचब रहै। सब के अपन-अपन हिसाब-किताब छै, अइ जुग मे जे मेहनत करत से आगाँ बढ़त, तों गाम मे पड़ल रहबह आ चाहबह जे हमरे सन सुख-सुविधा तोरो चाही, से कोना हेतह? ठीक छै, समय-समय पर कपड़ा-लत्ता, ताय-गुड़िया हमरे दिस सँ हेतै—मुदा मासे-मास जे मनिआर्डर चाहबह से तँ चलैबला नहि छह। अइ सब दुआरे दुनूभाँइ मे पटै नहि।

हमर अनुमान छल जे दुलारचन जानि-बूझि क' कुटमैती भँगठाबैत अछि।

भाइ पर ओ आशा लगेने अछि। आइ ने काल्हि किछु मदति करबे करत। से आशा बियाह भेने टुटि जैतए। बियाह भेलाक बाद के अपन भाइ-बेरादर लेल सोचैए?

एही सब कारण सँ ओ कुटमैती भँगठाबैत हो, से भ' सकैत छल। मुदा हमरा बुढ़ाक नोर मोन रहल—हुनकर कलपब। जरूरी बुझना गेल जे नुनुआँक बियाह हुअए।

दोसर दिन हम दुलारचन केँ अलग ल' जा क' पुछलियै—'की दुलार, की करबहक?'

दुलारचन बाजल—'भैया, हमरा अबजस के बड़ डर होइए।'

हम कहलियै—'बेकार। ई डर मानी तँ दुनिमा मे ककरो बुते किछु होबैया नहि।'

—नुनुआँ हमरा कहत।

—आहि रे बा! किए हौ? अधलाह करबहक तखने ने!

—आ जँ अधलाहे भए जाय! के भबतब देखलकहें!

हमरा हँसी लागि गेल। कहलियै—'से तँ कहलकै जे गठबंधन बिधे- विधाता कए क' पठबै छथिन। नै?'

ओहो हँस' लागल। हम पुछलियै—'ई कथा केहन छै हो? देखनहि हेबहक।'

ओ बाजल—'हँ, ई कथा ठीक छै भैया। हमरो ई कथा पसिन्न अछि।'

हम हँसी केलियै—'अच्छा! तोरो पसिन्न! ई तँ बड़ भारी बात! एकदम पसिन्न हौ? पक्का?'

—हँ भैया पक्का!

—तखन?

—नुनुआँ मानय तब ने!

—की मतलब? नुनुआँ ने किए मानतह? ओ तँ तोरे पर आश्रित छह।

—हँ, से तँ ठीके। लेकिन तैयो कहलियह!

ओही दिन सँझुकी पहर दुलारचन शिवप्रसाद आ पुरन्दाहावाली केँ हमरा ओतए बजा अनलक। गपसप भेल। ओ सबटा गप कहलनि, हमहूँ सबटा सन्देह राखलियनि। निराकरण भेल। हमरा तँ आर कथू सँ नै लेना-देना, नुनुआँक बियाह टा होइ। शिवप्रसाद बजलाह—'पच्चीस हजार हम नगद देबै। घड़ी-साइकिल-रेडियो देबै। पाँच टूक कपड़ा, बरतन-बासन—जे होइ छै। आब की कहै छहक?' शिवप्रसाद केँ आब कहलो किछु नहि जा सकै छल। आ से कहतिहैक के? दुलारचन तँ हुनका संगहि छथि।

बड़ बेस, बड़ बेस। कथा आब तय बुझी। पुछलियै—'की हौ दुलार, लड़की देखलहक?'

—हँ भैया देखलियै।

—ठीक छै?

—ठीक छै।

—तखन तँ आब छेका-पनचढ़िया! खबरि करह नूनूलाल केँ। लगीचे के तारीख तय करह।

ओही दिन साँझ मे हम बुढ़ा लग गेलहुँ। कहलियनि—'कका, आब सब तय अछि! भेले बुझह।' ओ तते गद्गद् भेलाह जे ओहो दिन नोर चूलनि। हमहूँ निचिन्त भेलहुँ जे हुनकर कौल रहल।

मास दिनक करीब बितल हेतै कि फेर गलगुल सुनलियै। बात की तँ नुनूलाल कहैए जे हम ओहि लड़की सँ बियाह नहि करब। मुदा किए भाइ? तँ, गोंसाइ हमरा सपना देलकहें जे ओइ लड़की सँ बियाह केलह तँ अपनो मरबह आ वंश तँ नाश हेबे करतह!

आहि तोरी! ई कोन समस्या आबि गेलह हौ! —हम दुलारचन केँ पुछलियै।

दुलार बाजल—अही बात केँ ने शिवप्रसाद पकड़ि रहल छै! ओ कहै छै जे बियाह नहि करबह तँ लड़की किए देखलह, छेका किए केलह, पनचढ़िया-तिलक सँ पहिनहि किए ने ई बात किलयर केलह?

हँ, बात तँ ओ कोनो बेजाय नै कहै छह—हम कहलियै।

गाम जे आएल रही तँ इच्छा रहय जे बुढ़ा सँ भेंट करए जेबनि। ओ हमरा पिताक मित्र। पिताक मुइलाक बाद हुनका बारे मे कहल जाइत खिस्सा सब बेस प्रेरक लागैत रहल अछि। प्रेरक आ उत्साहवर्द्धक। से खिस्सा सब बुढ़ा सँ सुनै लेल भेटैए। मुदा हिम्मत नै भेल। जाएब तँ फेर ओ कानए लगताह। की हुनका जबाब हम देबनि!

हमरा मोन मे खोध-बेद लागल छल। हम पत्नी केँ कहलियनि जे बातक जड़ि मे जा क' कने पता लगाउ तँ!

दोसर दिन पत्नी हमरा कहलनि—बात तँ अइ मे बड़ भारी छै।

—से की? —हम चैंकलहुँ।

—लड़की ठीक नै छै।

—ठीक नै छै, माने की? लड़की केँ तँ ई सब देखै गेलैए।

—लड़की केँ कहाँदन दाँत नै छै। आब तँ जे देखै गेलाहें, सैह कहताह।

बात केँ हम किछु बुझलहुँ, किछु नहि बुझलहुँ। कहलियनि—दाँत नै छै माने की? एकाध टा दाँत टुटि गेल हेतै, सैह ने!

—नै, से नै। कहै छै जे दाँत छैहे नहि। जन्मे सँ नै छै। निदन्त नै क्यो-क्यो जन्मैए, सैह!

हम चकित भेलहुँ। जँ सैह बात छै तँ लड़की देखनिहार सब किए नै अइ बात केँ पकड़लकै!

दोसर दिन हम बुढ़ाक भेंट करए गेलहुँ। बुढ़ा फेर कानए लगलाह। की हुनका हम कहियनि, हमरा जबाब नहि फुरल। बुढ़ी के मुदा दोसरे ताल। ओ अगिया बेताल छली। ककरा पर तँ पुरन्दाहावाली पर। ओजह जे छलै से आरो अजूबा। ओ कहए लागलि—'ओ निसोखी हमरा बेटा केँ खाधि मे खसेलक बाबू। नीक नै हेतै ओकरा। समाङ नै काज देतै बाबू। ओ पुतखौकी हमरा बेटाक जिनगी गार्त केलक।

—ककरा कहै छियै काकी? के की केलक? —हम पुछलिऐक।

बुढ़ी बजलीह—'वैह निसोखी पुरन्दाहावाली। ओकरा नीक नै हेतै बाबू।'

—बात की भेलै से कनी बुझिऐ!

—बात की हम कहब बाबू। बड़ लज्याक बात। नुनुआँ जे हमर आएल रहै गाम, से ओ पुतखौकी ओकरा अपना आँगन बजेलकै। लड़की देखै ले' घर लए गेलै आ केबाड़ बन्द कए क' जिज्जिर ठोकि देलकै। आब कहै छै जे लड़का हमरा लड़कीक संग सुत्तलहें। बियाह नै करतै तँ केस करबै। जनउधारी सँ मारि खुएबै। एको दशा नै छोड़बै। से सब कहैए बाबू। ठीके ओ भैयाडाही एको दशा नै छोड़लक।

बुढ़ी कानए लगलीह। हमहूँ गुम भ' गेलहुँ।

बुढ़ा बजलाह—'कते कथा-पुरान सुनबहक? यैह तँ झंझटि छै। हम कहै छियै जे नुनुआँ केँ गोसाँइ सपना देलकैहें तँ एक दिन घर मे डाली राखि कए गोसाँइयो के पूजा कए लेतै। बाक लए लेतै गोसाँइ के। नै?'

हम कहलियनि—हँ। ठीके तँ कहै छहक। सैह करह दुलार! गोसाँइक पूजा कए लैह आ जे भगता कहौ तही अनुसार नुनुआँ केँ खबरि कए दहक।

गोसाँइक पूजा के तैयारी हुअए लागलै तँ शिवप्रसाद आबि क' कहलकै जे एकटा पाठी हमरा दिस सँ भगवती केँ चढ़तनि। हमरो तँ मनकामना अछि ने! दुनू घर आबाद रहै—सैह ने चाही। ऊपर सँ शिवप्रसाद ई गप खोंसि देलकै जे बैजनाथपुरबला भगता बड़ एकबाली अछि, ओकरे मँगाएल जाय। मँगाबैक भार हमरा पर।

पूजा भेलै। भगताक देह मे गोसाँइ एलै। भगवती कहलखिन जे हौ बाबू, वंशनाश के डर तँ ठीके रहह, लेकिन जाह, हम सम्हारि देलियह। जाह, कुसक कलेप नहि लागतह। करह गए बियाह-सादी। अही लगन मे करह।

नुनूलाल केँ खबर गेल। अही लगन मे बियाह-सादी भैयो गेलै। कनिमा बियाहि क' घर आएल।

घर-आँगन के लोक देखलक जे जे नुनूलाल वंशनाश सँ डेराएल छल, से सगरो दिन, सगरो राति घरे मे घुसियाएल रहैए। दुलारचन केँ से दृश्य अकच्छ लागै। ओ मोका ताकै छल। एक दिन टोकि देलकै—'रौ, दोकान-दौरी सब के जे उधारी-पुधारी छौ से जाए कए दए देबही से नै?

नुनुआँ कहलकै—'हिसाब लै ने आबह सब सँ!'

दुलार बिगड़ि गेल—'किए? हम तोरा बाप के नोकर रे?'

नुनूलाल गुम्म रहि गेल। फेर दुलारे बाजल—'ढौहरी भाइ! थोथी कनिमा पर तँ ई गुमान छौ। आ जँ हमरा सब-सन रहितिहौ तब की करितही रे!'

नुनूलाल गुम्मे रहल। ओ सोचए लागल जे अइ ठाम मूर्खक समाज छै, अइ बेर जँ नहिमोा तँ अगिला बेर तँ कनिमा केँ दिल्ली लइये जाए पड़त।

उमंग

कुदकल-फुदकल उमाशंकर साँझ होहत-होइत गाम पहुँचिये गेल। एहन फुरती नहि ककरो कहियो देखने हेबै! ओकरा अपनो आश्चर्य होइ जे एहन फुरफुड़ी ओकरा अंग मे पैदा कोना भ' रहल छै! फुरफुड़ी पैदा क' रहल छलै टका। एह, एही ठाँ ने कहै छै जे तोरा मे दम कि तोरा अंटी मे दम! —उमाशंकर मोने-मोन सोचलक।

गामक चैके पर मैक्सी रुकि गेलै। 'किऐ हौ? एत्तहि तक किऐ? भगवती थान दए कए नै जेबहक की? —उमाशंकर ड्राइवर केँ पुछलक।

—नै, गाड़ी तँ आब एत्तहि तक रहै छै। किऐ, तोरा नै बूझल छह जे आगू पुल टुटल छै। गाड़ी एत्तहि तक रहै छै। —ड्राइवर बाजल।

उमाशंकर हँसए लागल। ठीठी बला कठहस्सी—'हौ, हमरा कोना बूझल रहत। हम भेलियह परदेसी लोक। गाम-घर तँ भेलह तोरे सबहक। पुल तोड़ह कि धार बान्हह!'

ड्राइवरो हँसए लागल। पुछलकै—'बहुत दिन पर गाम एलहकहें की?'

—नै, से तते दिन पर नहि। तखन चारि-पाँच मास तँ भइये गेल।

ड्राइवर केँ एखन बहुतो रास खगता रहै। ओ अपन राजपाट सम्हारै मे लागि गेल।

उमाशंकर झोरा उठेलक आ अपन घर दिस विदा भेल।

ओकर मोन मे विचित्र तरहक उमंग पैसल रहै। उमंग तेहन जकर व्याख्या नहि हो। नबजुबक रहए तँ कतेको बेर प्रेमी-प्रेमिका बला लाट-घाट मे पड़ल। तकरो उमंग चिखलक। थोड़े दिन मे बियाह-शादी भेलै, नव कनियाँ एलै तँ तकरो उमंग चिखलक। एहि अकाल-खण्ड मे नोकरी लागलै, देखहक जे कतेको बाबू-भैया एम.ए-एम.एस-सी कए कए चप्पल रगड़ैए, आ ओकरा नोकरी भए गेलै तँ तकरो उमंग चिखलक। कहियो भांग के उमंग चिखलक तँ कहियो इनाम के। मुदा वाह जी वाह, ई स्वाद नहि देखल रही कहियो। सुआइत लोक कहै छै जे टका मे जे गरमी होइ छै से कथी ले भट्ठी मे पघिलैत लोहा मे हेतै!

उमाशंकरक झोरा मे एखन पचास हजार टका छै। टका छै तँ तकर गरमी सेहो छै आ उमंग सेहो छै। आब, ई बात अलग जे निज टके नै छै, जकरा 'कैश' कहल जाइ छै। छै की तँ कागतक पांच टा टुकड़ा।

सैह, अएँ हौ! —उमाशंकर अपने के अपना कहलक—गरमी आ उमंगक लेल ई कोनो जरूरी थोड़े छै जे रिजर्व बैंकक छापल टके हो निज। भैल्यू हेबाक चाही। सैह देखहक, एहि दुनियाँ मे वस्तुक कोनो कीमत नै छै, कीमत छै भैल्यू के। से जँ नै तँ स्टेट बैंकक एहि टुकड़ी के कोन मोल? ढौहरी भाइ, पाभरि नूनो एहि मे अँटतै? लेकिन भैल्यू देखहक!

उमाशंकर अपने-अपने हँसल आ सतरहम बेर झोरा केँ टोइ कए देखलक। भीतर मे राखल हैन्डबैग यथास्थान छलै।

कागतक एहि पाँच टा टुकड़ीक दुआरे उमाशंकर काल्हि सगरो राति सूति नहि सकल। सगर राति दीप जरए बुझू। काल्हि वेतन भेटबाक दिन रहै। वेतन भेटै छै बैंक सँ। स्कूल एडभाइस पठा दै छै आ बैंक शिक्षक सभक खाता मे टाका जमा क' दै छै। दिन रहै तँ साधारणे सन जेना कि हरेक मास मे एक बेर आबै छै मुदा मौका रहै अविस्मरणीय। ई दिन ओकरा जिनगी मे पहिल बेर आएल रहै। आइ ओकरा धनीक बनि जेबाक दिन रहै। ओकरा खाता मे आइ पचास हजार टका पूरि जेबाक दिन रहै।

अहाँ पुछबै जे सूति किऐ ने सकल सगरो राति? की एही टा कारणें जे आइ ओकरा गेंठ मे मनबांछित रकम पूरि गेल रहै? की ततबे टा बात? धनीक भ' जेबाक उछाह रहि-रहि क' ओकरा नस मे सिहकी मारै आ मारिते उद्रेक के ओकर निन्न बिला जाइक। मुदा, एतबे टा बात रहै, सेहो नहि। एतबा झंझटि तँ हरेक पैसावला केँ होइ छनि, फेर ओ लोकनि सुतै जाइ छथि की नहि? ठीक छै जे गरिबताइ के निन्नक स्वाद दोसर, धनिकहा के निन्नक स्वाद दोसर, मुदा निन्न तँ होइ छै ने आखिर? मुदा उमाशंकर केँ तँ साफे नहि भेलै! कहबी छै जे नबका मीयां किछु बेसिये पियाजु खाइए। मुदा तते बेसियो तँ नहि ने खेतै जे यार केँ नाद के मसल्ला चुआ दैनि।

उमाशंकर केँ सगरो राति निन्न नै भेलै, तकरा पाछाँ एकटा खिस्सा अछि।

तीन-साढ़े तीन साल भेलै। उमाशंकर गाम आएल रहए। गाम मे माता-पिता रहथिन। हुनका सभक सेवाक बास्ते कनियाँ रहथिन। उमाशंकर के नियम रहै जे मासेमास पाँच सय टका ओ बाप केँ पठाबए। आ, दुइ चारि मास पर जखन गाम आबए तँ हजार-पाँच सए ऊपर सँ दैनि। कनियाँक रख-सेहन्ताक बास्ते जे होइ छै, से अलग। ई ओकर नियम रहै। से ओइ बेर जे ओ गाम आएल रहए तँ एक दिन

सँझुकी पहर पिता दरबज्जा पर बैसल रहथिन आ अपन मित्र महराज जी सँ गप करैत रहथिन। ई महराज जी अपूर्व लोक। पेशा सँ पुरहित मुदा चालि-प्रकृति सँ सोलह अना खाँटी आदमी। अहाँ पुरहितो होइ आ आदमियो होइ, ई दुनू बात कोना भ' सकैए? मुदा, से असम्भव लोक महराज जी छलाह। उमाशंकर कहियो काल सोचबो करए जे पिता महोदय केँ दू टा बहुमूल्य सम्पत्ति छनि, एकटा तँ कमासुत बेटा आ दोसर ई महाराज जी।

महाराज जी के हिस्सक रहनि जे ओ जँ कोनो बात बजताह तँ एक तँ से बात कनिमाो ने कनिमाो विद्रोही जरूर हेतै, जकरा कि शिष्ट-भाषा मे अनटेटल कहल जाइ छै आ दोसर विशेषता ई जे ओहि गपक संग ओ संस्कृत श्लोकक कोनो टुकड़ीक दृष्टान्त जरूर देताह। से भने ठट्ठे करबाक लेल किऐ ने हो। मानि लिय' जे जँ हुनका कहबाक छनि जे बुद्धिजीवी लोकनिक बेसी समय परनिन्दा-खिधांस मे बितै छनि आ से बड़ अधलाह बात तँ ओ कहताह—सैह देखियौ मित्र! रौ बहिं, यैह भेलौ कालो गच्छति धीमताम्?

से ओ महराज जी ओहि दिन सँझुकी पहर मित्र सँ गप-सप करै छलाह। गपेसप मे महाराज जी कहलखिन—मित्र, अहाँक बेटा खूब बहराएल। देखियौ, मोंछबला सभ टिटकारिये मारि रहल छथि आ ई बहादुर लेलक नोकरी! वाह रे वीर! आब अहाँक मौज करैक बेर आएलहें। एको चन्द: तमो हन्ति न च तारा शतैरपि। नै?

उमाशंकरक पिता, कैलू मरर, की जानए गेलखिन जे तमो हन्ति आ की नै हन्ति! पढ़ल-लिखल लोक नै छलाह। तखन संस्कार जरूर रहनि! संस्कार रहनि तें ने महाराज जी-सन मित्र रहनि। महराज जी पुछथिन—नै? —मरर उतारा देथिन—एह, जरूरे कि नै? हेबाके चाही की!

मुदा ओहि दिन पिता व्यथित रहथि। कोन कारणें रहथि से जानता भगवान। महराज जी पुछलखिन—'नै?' तँ ओ जवाब देलखिन—धु:, की कहै छी महराज जी। हम तँ अपनो जिनगी मे नहिमो किछु अरजि सकलहुँ। मोन मे रहए जे बेटा बहराएल तँ आब अरजब। से यौ बाबू! अरजब की? ई कमासुत तँ नूने-रोटी केँ कहैए जे नोकरी के प्रसाद छियै! अहीं तँ कहै छियै महाराज जी, की कहै छियै—अग्रे अग्रे विप्राना...।

महाराज जी थोड़े झूस भ' गेल रहथि। मित्रक मुँहें सन्तानक प्रति ई गप हुनका नीक नहि लागल रहनि। मूड़ी हिला क' नहूँ-नहूँ कहलखिन—हँ हँ... अग्रे अग्रे विप्राणां...

'सैह कहलहुँ'—पिता बजलाह—विप्र भेलहुँ आब तँ आगुए आगू बढ़ब ने यौ? आ कि जत लब्धम्?...

राजा दैवक प्रसंग कहियौ जे ई समुच्चा गप-सप उमाशंकर साफ-साफ सुनि गेल। मरर भने नहिमाो बुझने हेताह मर्म जे एक्के टा चन्द्र: तमो कोना हन्ति, मुदा उमाशंकर बुझि गेल। ओ इहो बुझि गेल जे नूने-रोटी केँ नोकरीक प्रसाद मानब कतहु ने कतहु जा क' तँ जरूरे थोड़े हीन पुरुखारथ भेलै। गृहस्थी धर्म अगर धर्म छी तँ से जमि क' ने हेबाक चाही भाइ!

ओही दिन सँझुकी पहर उमाशंकर प्रतिज्ञा केने रहए जे आइ तँ किछु कहना-सुनना बेकार! जेना जे चलै छै से चलैत रहए आ एक दिन हम पच्चास हज्जार टका लाबि कए ककाक हाथ मे धए देबनि—लैह, अरजह!

से दिन आइ आबि गेलै। उमाशंकर झोरा मे 'पच्चास हज्जार' टका राखल छै आ ओ कका केँ अरजै बास्ते दियए जा रहल अछि।

मुदा, उमाशंकर केँ सगरो राति निन्न नै भेलै, ताहि लेल एतबे टा गप पूरा नहि अछि। ई तँ आधे रातिक बराबर भेल! बिपतियो जखन आबै छै तँ कहबी छै जे एसकर नहि आबै छै आ उमाशंकर केँ तँ सम्पति आएल रहनि।

स्कूल मास्टर छलाह। परदेस मे रहै छलाह। शहर के खर्चक अपन अलग हिसाब-किताब होइ छै, तेना रहए पड़ैत रहनि। जेना आर सब मास्टर रहै छलाह, तेना उमाशंकर ने कोना रहताह? जीवन-स्तरक अपन दवाब होइ छै कि ने? से उमाशंकर लेल ई बड़ भारी बात भेलै जे घर-परिवारक लोक केँ पतो नहि चलल आ ओकरा पचास हजार जमा भ' गेलै। उमाशंकरे टा जनैत रहय जे एहि रोटी लेल ओकरा कोना-कोना बेलना बेलए पड़लैक अछि। से मुदा दोसर गप। टका आएल तँ अपना संग सुरक्षाक चिन्ता तँ लेनहि आएत। उमाशंकर एही गुनधुन मे सगरो राति पड़ल रहलाह जे मुंगेर सँ जे टका गाम ल' जेबाक अछि, से कोना ल' जेबाक अछि—एहन तरीका कोन, जाहि मे सुरक्षित पहुँचि जेबाक अधिक सँ अधिक गारण्टी हो।

पहिल निर्णय तँ ओ ई केलक जे आन बेर जेना गाम जाइ छी, तेना एहि बेर नहि जाएब। आन बेर ओ स्कूल केलाक बाद अपराह्न मे विदा होथि आ देर राति मे सहरसा पहुँचथि। सहरसा मे कोनो आङ-समाङक ओहि ठाम बिलमथि आ कि प्लेटफार्मे पर राति काटि लेथि। भोरे-भोर अपन गाम जुमथि। से एहि बेर नहि करताह। टकाबला बात छै। ओ भोरे अन्हारे निकलताह आ साँझ होइत-होइत सोझे गाम पहुँचि जेताह। ठीके सैह भेल रहै। साँझ होइत-होइत ओ गाम पहुँचिये गेलाह। ई तँ संजोग कहल जाय जे गाड़ी हुनका चैके पर उतारि देलकनि, नहि तँ अपना घरे पर उतरितथि। मुनहारि बीतए जा रहल छलैक। चारूकात अन्हार पसरए लागल रहै। बाधबोन दिस सँ महीसक हुजूम गाम घुरि रहल छल। जन-जनी सब माथ पर एत-एत टा बोझ लादने दुलकी मारने पड़ा रहल छल। सड़कक कात मे ठामठीम

घूर लागल रहै। घूरक चैबगली लोक सब लुधकल। एक सँ एक खिस्सा-पिहानी चलैत।

घूर लग बैसि क' आगि के आ आलाप-विलाप के आनन्द लेब ओकरा बहुत प्रिय छलै। ओकर मोन कसमसा उठलैक। 'अच्छा ऽ ऽ ऽ... काल्हि!' —उमाशंकर सोचलक।

की तखने टॉर्च के भरपूर इजोत उमाशंकरक मुँह पर पड़लै। तिनसेलिया रहै कि पचसेलिया—कहि नहि। उमाशंकरक आँखि चोन्हरा गेलै। टॉर्चबला पुछलकै—'के छियह हौ ?'

अचानक इजोत सँ ओ अप्रतिभ भ' गेल छल। अपना केँ सम्हारैत कहलक—'हम छी उमाशंकर। कैलू मररक बेटा!...

ताधरि घूर मे धधरा उठलै तँ उमाशंकर टॉर्चो बलाक मुँह देखि लेलक। छरपू पाठक छलाह। पुछलखिन—'कतए सँ रौ बाबू ?'

—नोकरी पर सँ आबै छी बाबा!

—साँझ पड़ि गेलौ ?

—हँ आइये भोर मे चलल रहियै। मुंगेर मे छियै ने हम!

—ओ ऽ ऽ! पाठक जी पिहानी के अवकाश मे छला। बजलाह—मुंगेर सँ तँ जहाज पर पार हुअए पड़ैत हेतौ ?

—हँ बबा, भग्गू सिंह के जहाज चलै छै। भरि दिन मे चारि टीप!

छरपू पाठक केँ प्रसंग भेटि गेल रहनि। ओ भग्गू सिंहक खिस्सा शुरू क' देने रहथि। भग्गू सिंह आ ओकर जहाज। कोना एक बेर अंगरेज बहादुर भग्गू सिंह केँ पकड़ि लेलकै। कोना एक बेर जहाज डूबल। कोना एकबेर भग्गू सिंह राजिन्दर बाबू केँ नुका क' पार करेलक।

उमाशंकर मिनट भरि ओतए ठाढ़ रहल आ विदा भ' गेल। अपन टोल रहितए तँ ओकरा ई घुरबैया लोकनि एना विदा नहि हुअए दीतथिन। दुइयो मिनट ओकरा जरूरे घूर लग बैसए पड़ितिहैक। ई बात दोसर जे एखन ओ बैसि नहि सकैत रहए।

ओ बढ़ि गेल। आँखिक चोन्ही एखन धरि खतम नहि भेल रहै। ओ सोचलक—इह... भुच्च सब नहितन! टॉर्च देताह तँ आँखिये पर देताह! की तँ बूझै जाउ जे हमरा तिनसेलिया अछि आ तै मे नबका बैटरी अछि।

आगाँक सड़क सुन्न एकान्त मे पड़ै छलै। कातेकात कोसिक छारनि आ बीच मे सरकारी सड़कक विस्तार। सड़क पर अन्हार रहै आ सड़कक दुनू बगली जनीजातिक पतियानी बैसकी लागल। दुर्गन्ध तते रहै जे नाक नहि देल जाय। अपन नौजबानी मे उमाशंकर जुबक-समिति बना क' कतेको बेर एहि सड़कक विष्ठाशोधन केने

अछि। मुदा जनीजाति जेबो करतै तँ कतए जेतै ? लोक पक्का मकान बनबै जाइए मुदा एकटा लैट्रिन नहि बनबैए! कुथैत रहथु बिन्देसर पाठक। जाथु आस्ट्रेलिया।

आदतिवश उमाशंकर अपन मूड़ी गोंति लेलक। से मुदा आवश्यक छलै नहि। एखन अन्हार रहै। ओ आगू बढ़ल तँ मानू ओकर सम्मान मे जनीजाति उठि-उठि क' ठाढ़ हुअए लगलै। धरफड़ाइत ओ आगू बढ़ि गेल। बढ़ि गेल तखन जा क' थोड़े प्रकृतस्थ भेल।

उमाशंकर आब अपन दोसर निर्णय पर विचार करए लागल। निर्णय ओकर ई रहै जे कैश ल' क' गाम नहि गेल जाय, चेक-ड्राफ्ट बनबा लेल जाय। ओकरा लागलै जे ई निर्णय 'बेफालतू' रहै। बेकारे ओ एहि फेरा मे पड़ल। केहन बढ़ियाँ तँ गाम पहुँचिये गेलहुँ।

—आ बाबू, अगर किछु भइए जेतिहै तखन ? उमाशंकर अपने केँ अपना पुछलक।

—हेतियहै की ? लए लेतिहए तँ लए लेतिहए! हमर की करमो लए लेतिहए ?

ह: ह: ह: ह:। अपने-अपने ओ हँसय लागल। मन्द स्वर मे, जकरा कि स्वयं अपने टा सुनि सकैत रहए—बाबू, ई बैरागी बार्त्ता गामे टा पहुँचलाक बाद सोचल जाए सकैए। नहि ?

कल्हुकी राति जे उमाशंकर केँ निन्न नहि भेलै तकर असली कारण यैह छल। ई बात तँ ओ तय क' लेलक जे कैश ल' क' गाम नहि जाइ मुदा तखन जाइ कथी ल' क' ? ड्राफ्ट जँ बनबै छी तँ भजबै काल मे महाग झंझटि। कहत जे पहचानकर्त्ता केँ लाउ। पहचानकर्त्ता के हुअए तँ जकर खाता अइ बैंक मे होइ। आ सैह टा नहि ने ? ईहो जरूरी छै जे ओकरा खाता मे पचास हजार सँ बेसी रकम होइ। रौ बहिं, हम ड्राफ्ट बनबेलौंहें कि कोनो पाप केलौंहें जकर सजाइ हमरा दै जाइ छें!

एहि सँ बढ़िमा उमाशंकर केँ ट्रेवलर्स चेक बुझेलै। जतए गेलौं अपन भजा लेलौं। ने कोनो पुच्छा ने कोनो ताछी। हँ, तखन एकटा बात तँ छै! ड्राफ्ट जँ डकैत छिनलक तँ ओकरा लेल बेकार छै। मुदा ट्रेवलर्स चेक जँ छिनलक तँ ओ गेल! ओकरा कैशे बूझू।

हँ बाबू, ई खतरा तँ छै! —ओ अपने केँ अपना कहलक।

मुदा ओकर 'अपने' तनि गेलै—'है ऽ ऽ ऽट.... ओहो जीवन कोनो जीवन छै, जै मे कोनो रिस्क नहि, कोनो खतरा नै। खतरा सँ तँ खाली मुइले देह टा बचल रहैए—घोर दार्शनिकक अंदाज मे अपना केँ संबोधित केने रहए आ फैसला ल' लेने रहए जे मनुख केँ दुनू चीज चाही—सुरक्षो चाही आ खतरो चाही। से, हम टेऊब्रलर्स चेक लेब। ड्राफ्ट नहि लेब। सैह ओ अन्तत: करबो केलक।

खतरा अपना जगह पर रहै मुदा सुरक्षाक पोख्ता सँ पोख्ता इन्तिजाम ओ क' लेबए चाहै छल। से ओ एकटा काज आर केलक। स्कूलक बड़ा बाबू सँ एकटा लिफाफ माँगि लेलक। लिफाफ पर स्कूलक नामपता छपल रहै। 'भारत सरकारक सेवार्थ' लिखल रहै। बैंक मे पाँच टा चेक ओकरा देने रहै—दस-दस हजारक। ओ की केलक जे पाँचो चेक केँ लिफाफ मे द' क' बन्द क' देलक। पहिने गोंद सँ साटलक। तकर बाद चपरा सँ सील क' देलक। सरकारी चिट्ठी छियै ने भाइ! — सील करैकाल उमाशंकर सोचलक आ अपने-अपने हँसबो कएल।

आब सबाल एलै जे भाइ ठीक छै। सरकारी चिट्ठी जा रहल छै। प्रेषक प्रिंसिपल। विशेष दूत उमाशंकर कामती, टी. जी. टी, हिन्दी। परम आवश्यक छै, तें, डाक मे नहि पठा क' दूत सँ पठाएल जा रहल छै। क्यो जँ पुछलक जे कथीक बारे मे चिट्ठी छै, तखन? तखन की? हम तँ भाइ दूत छी। पोस्टमैन केँ की पता जे चिट्ठी मे की लिखल छै। सब बात तँ भाइ, ठीक छै! लेकिन चिट्ठी जा ककरा रहलैए? 'सेवा मे' के? ककर सेवा मे?

उमाशंकर केँ एक मोन भेलै जे एस. पी.क नाम लिखि दै छियै। सेवा मे—आरक्षी अधीक्षक, सहरसा। मुदा, नहि। एहि मे अनेरोक झंझट के गुंजाइश रहै। डकैत डेराएत एस. पी. नाम सँ, तकर की गारण्टी छै? यैह बात किऐ ने सोचि लेत जे सार के चिट्ठिये छीनि लै छियनि! आ मानि लैह जे सिपाहिये जँ देखलक तँ अनेरो पच्चास तरहक खोज-पुछारि। से ओ कतेको काल धरि उपाय तकैत रहल आ अन्त मे अपने सँ अपने बाजल—से हौ बाबू फाइनल ई होइए जे चिट्ठी डी. ई. ओ.क नाम सँ रहतै। सेवा मे—जिला शिक्षा पदाधिकारी, सहरसा। की हरजा? स्कूलक चिट्ठी छियै, शिक्षा विभागक हाकिमक नाम सँ रहतै। ने कोनो शंका, ने कोनो खोज-पुछारि। की?

—हँ, सैह कएल जाए।

एही निर्णयक संग ओकर ओ 'सगर राति' बीतल रहै। चिट्ठी केँ हैन्ड बैग मे राखलक। ओहि मे स्कूल सम्बन्धी दू-चारि टा कागज-पत्तर आरो राखि लेलक आ चलि देलक।

उमाशंकर केँ हैन्ड बैग मोन पड़लै। हैन्ड बैग अपना जगह पर सलामत रहै। हैन्ड बैग मे लिफाफ रहै। लिफाफ मे चेक रहै। आ चेक मे रहै उमंग। चेके मे रहै फुरफुड़ी। ओही मे रहै गरमी। उमाशंकर अठारहम बेर झोरा मे राखल हैन्डबैग केँ टोइ क' देखलक।

उमाशंकर प्रोग्राम बनबए लागल—काल्हि भोरे सहरसा जा कए चेक भजबाना छै। आ हे! ओम्हर सँ आबि कए जहन पचासो हजारक नोट ककाक हाथ केँ देबै, ओइ काल मे केहन लागतै ककाक मुँह! इस्स!!

सभ्यताक अन्त

डॉ? विजय तँ फोन एकदम सही समय पर क' देने छलाह, मुदा पहुँचैत-पहुँचैत हमरे बहुत देरी भ' गेल। लहास पोस्टमार्टम हाउस सँ जा चुकल रहैक। पुलिस अपन कर्त्तव्य पूरा क' क' निचैन भ' चुकल रहय। डॉक्टर लोकनि पोस्टमार्टम रिपोर्ट सौंपि क' भारमुक्त भ' चुकल रहथि। पूरा मामले साफ छल। पुलिस आब दोसर-दोसर घटनाक इन्तजारी मे लागि गेल आ डाक्टर लोकनि दोसर-दोसर मरीजक झंझटि मे।

हम डॉ? विजय केँ कहलियनि—'भाइ, हमरा आबै मे देरी भए गेलह। किछु घरेलू मामला मे लागल रही।'

विजय बजलाह—'हँ बाट हम ताकलियह तोहर। बड़ जटिल मामला छलै। हमरा तँ लागैए जे पुलिस धरतै किछु गोटे केँ आ टानतै।' आ तखन ओ मामलाक सारांश बतबए लगलाह। भेल ई रहै जे शान्तिनगर मोहल्ला मे एकटा चोर पकड़ल गेल। एकदम भोरहरबा मे। चोर नथुनी सिंह नामक व्यक्तिक घर मे पैसल छल। बाहर कुकूर भूकि रहल छल। नथुनी सिंह पर-पैखाना गेल छलाह। घुरि क' एलाह कि चोर केँ देखलनि जे कुकुर कटबाक डरें पड़ा नहि रहल छल। ओ हल्ला करए लगलाह। जे जहीं सुनलक, दौगल। एहि मोहल्ला मे चोरी बहुत होइत रहै से सभक मोन मे चोर पकड़बाक उत्साह जागि गेलै। चोरबा केँ घेरि क' पूछताछ हुअए लागल। चोर गछबे नहि करय जे हम चोरी करय आएल रही। तखन लोक ओकरा मारए लागल आ मारिये देलकै।

सभ्यताक असलियत हत्या सँ खुलैत छैक। हत्या होइत रहल अछि सब जुग सँ आ सब जुग मे होइत रहत मुदा जुगक पहचान एहि बात सँ होइत छैक जे हत्या कोन मुद्दा पर कएल गेल आ कोन तरीका अपना क' कएल गेल। समय, समाज आ सभ्यताक नब्ज एही सँ पकड़ल जाइ छै। —बहुत दिन पहिने एकबेर डॉ? विजय केँ हम यैह सब बात कहने रहियनि आ हम दुनू गोटे गपे-सप मे ई निर्णय क' लेने रही जे आब जँ शहर मे हत्या हुअए तँ तकर विश्लेषण हमरा लोकनि सभ्यताक सन्दर्भ

मे कएल करी। डॉ? विजय आरो उत्साहित बजरल रहथि। कोनो लहास आबय सदर अस्पताल मे कि हमरा फट द' समाद आबि जाय।

हम कहलियनि—देखहक! एकटा बात तँ एकदम्म स्पष्ट अछि। लोक चोर केँ पकड़लक आ ओकरा मारि देलकै। की मतलब? चोर केँ पुलिस नहि पकड़लक, जनता पकड़लक। चोरी करैत चोर केँ पुलिस नहि पकड़ि सकैत अछि! हम तँ कहबह जे ई समय साबित क' रहल अछि चोर पकड़क होइ तँ जनता अपने पकड़ौ, ई काज पुलिस सँ पार लाग' बला नहि अछि!

'आ दोसर बात'—डॉ? विजय तुरन्त बात केँ आगाँ बढ़ौलनि—'जनता जे चोर केँ पकड़लक तँ पकड़ि क' की केलक? पुलिस केँ देलकै? न्यायालय के फैसला पर भरोस केलक? नहि। ओ अपने फैसला केलक। आब प्रश्न अछि जे चोरि करै के कते दण्ड? आइ? पी? सी? कहैए सात साल! मुदा नहि, एतबा सँ काज नहि चलत! जनता अपस्याँत अछि। त्राहि-त्राहि क' क' हारि गेल। आक्रोश सँ भरल अछि। तें, मृत्युदण्ड सँ कम किछुओ नहि। पकड़ू आ मारि दियौ! जानै छहक—पोस्टमार्टमक रिपार्ट अछि जे सात ठाम हड्डी टुटलै। माथ मे पाँच ठाम ग्रिवियस इन्जुरी। आ मृत्यु के असली कारण जे पेट के नस तेज चोट सँ फाटि गेलै। आ, आन्तरिक रक्तस्राव सँ मृत्यु भेलै।' अपन बातक निष्कर्ष देखबैत ओ अन्त कएलनि—देखहक, सभ्यता साफ देखार पड़ि रहल अछि। नै?

से सभ्यता ककर? निहत्था जनता के। सभ्यता एकटा आर छै जकरा लग मे सब किछु छैक। ओ एना थोड़बे मारत? ओकर मुद्दा अलग हेतै आ तरीको! एहि सभ्यता मे 'चोर' केँ मारल थोड़े जाइ छै? —आ एहि तरहें बात खतम भेल।

शान्तिनगर शहरक सब सँ पुरान मोहल्ला छल। हरेक शहर मे कोनो दुइए-एकटा मोहल्ला ओकर अपन होइ छै, जकर अपन संस्कृति, अपन समाज होइ छै, बाँकी सब तँ भेड़ियाधसाने बुझू। लोक अबैत गेल, बसैत गेल। सभक अपन-अपन टापू। ककरो सँ कोनो मतलब नहि। मुदा, से बात शान्तिनगर मे नहि छलै। ततमा, जादब आ दुसाध जातिक लोक ओतय रहैत छलाह। हमरा ओतय जे दूध देबए आबथि से जादबो जी ओही मोहल्लाक रहथि।

हम जादब जी केँ पुछलियनि—'की हौ, सुनलियह जे तोरा मोहल्ला मे कोनो चोर पकड़ल गेलह!'

'हँ ऽ ऽ... हम तँ तै काल मे महीस मे लागल रही। सौंसे मोहल्ला ओतए जुटल रहै। राममोहन जादबक बेटा रहय सब सँ आगू। वैह पहिला फैट मारलकै। तहन तँ बुझू जे ओध-बाध भए गेलै। हमरे मोहल्ला मे ब्लौक ऑफिस छै। ओइठाम सिपाही सब रहैए। चोर जखन मारि खाइत-खाइत बेहोस भए गेलै तँ लोक ओकरा

टाँगि कए सिपाही लग दए एलै। ओत्तहि जा कए ओ मुइल।'

जादब जी एकटा नव सूचना देने रहथि। एखन धरि यैह बात आएल रहय जे चोर मोहल्ले मे मुइल। मुदा से बात नहि रहैक। चोरक प्राण अंचल गार्ड मे आबि क' बहरायल रहैक।

हम थाना प्रभारी सँ सम्पर्क कयलहुँ। ओ कहलनि जे बात सही छै। शान्तिनगर मोहल्लाक लोक सब जखन चोर केँ बड़ी मारि मारलक तँ बेहोश भ' गेल। लोक सब केँ डर भेलै जे कहीं ई मरि गेल तँ झंझटि मे पड़ब। बूढ़-पुरान सब विचार करै गेलाह जे आब मारा-पिटी नहि कयल जाय। पानिक छिटका द' द' क' चोरबा केँ होश मे आनल गेल। तखन ओकरा अंचल गार्ड दिस ल' क' विदा भेल। मुदा, चोर केँ चलिये नै होइ। चोट तते रहै जे ओकरा बुते ठाढ़ो हएब कठिन छल। लोक सब हाथेहाथ चोर केँ टाँगि लेलक आ घीचातीरी करैत अंचल गार्ड पहुँचा देलकै।

थाना प्रभारी आगाँ बजलाह—'आब देखियौ। साला सिपाही सब केहन बुड़बक जे मोटका डोरी सँ चोरबाक हाथ-पएर बान्हि देलकै। चोर कहै जे हौ बाप, कथी ले बान्है छह, हम नै भागबह। मुदा, सिपाही जवाब दै—'नहीं न रे साला, चोरबा आ मोटरी बन्हले ठीक रहता है।'

—'अहाँ केँ पता कोना चलल?' हम पुछलियनि।

दरोगा जी बजलाह—'हमरा तँ बी? डी? ओ? साहेब फोन केलनि। धुर, इहो मरदे बी? डी? ओ? खतम आदमी अछि! भिनसरबे मे अंचल गार्ड के सिपाही हुनका जा क' कहने रहनि जे एना-एना परिस्थिति मे मोहल्ला बला सब एकटा चोर केँ द' गेल अछि। हुनका कहबाक चाही कि ने जे एतय किऐ राखने छहक, सदर अस्पताल पठा दहक। अनेरे झंझटि बढ़ि गेल। घंटा भरिक बाद जखन डोरी मे बान्हले चोरबा मरि गेल तँ बी? डी? ओ? साहेब खेखनिमा करय लगला जे एहि ठाम सँ एकरा हँटबाउ। ब्लॉक कालोनी केँ बेदाग राखियौ। से अन्त मे भेलै ई जे सिपाही सब फेर ओकरा नथुनी सिंहक घर लग जा क' राखि एलै। इनक्वेस्ट रिपोर्ट मे ओही मोहल्लाक चर्चा भेलैए। की कएल जाय? उपाय की रहै?'

ओहि दिन फेर डॉ? विजय सँ भेंट भेल। गप-सप करैत काल, चाह-बिस्कुट खाइत काल, पान चिबबैत काल हमरा लोकनि चिन्ता करैत रहलहुँ जे सैह, संवेदनाक लोप कोन तरहें भेल जाइ छै! डॉ? विजय कहैत रहलाह जे सरकारी कर्मचारी सभक समुच्चा संवेदना तँ ओहि लोकक प्रति होइ छै, जकरा सँ ओ घूस खेने रहैत अछि! समुच्चा राजपाठ एही सूत्र पर चलि रहल छै जे जकर खाउ तकर गुण गाउ।

डाक्टरक एक कम्पाउन्डर शान्तिनगर मोहल्लाक निवासी छल। ओकरा बजाओल गेल। डाक्टर पुछलखिन—'ओहि दिन जे चोर पकड़ल गेल, तों ओहिठाम रहह?'

कम्पाउन्डर बजलाह—'हम तँ सुतले रहियै। जखन बड़ भारी हल्ला भेल तँ हमर निन्न टूटल। ओतय पहुँचलहुँ तँ मारा-पिटी शुरू रहै।'

हम कहलिऐक—सब बात कने विस्तार सँ बताबह।

कम्पाउन्डर बजलाह—'कांड शुरू एना भेलै सर, जे नथुनी सिंह बहार मैदान मे पैखाना गेल रहथि। तखन साढ़े चारि के करीब बजैत हेतै। बुझियौ जे कनी-मनी अन्हार रहबे करै। पैखाना सँ घुरि क' जखन नथुनी सिंह अयलाह तँ देखलनि जे विदेशी नस्लक एकटा कुकूर हुनका घरक सामने ताबड़तोड़ भुकि रहल अछि। ओ डराइयो गेलाह, मुदा कुकूर हुनका किछु नहि कहलकनि। जहिना कि ओ अपन घर ढुकलाह, देखै छथि जे एकटा जुबक हुनका कोठली मे नुकायल अछि। कुकूर ओकरे पर भुकि रहल छलै। बस, ओ हल्ला करब शुरू कयलनि—चोर, चोर! पाँच मिनट बितैत-बितैत ओहिठाम बीस-पचीस आदमी हाजिर छल। हमहूँ तखने पहुँचलियै।'

चोर केँ घीचि क' लोक बहार कयलक। ओकर जेबी चेक कयल गेल। जेबी सँ चारि सै अनठाबन टाका आ रेलवे टिकट बहरेलै।

चोर कहलक—'हमरा पर अहाँ सब बेकार शंका करै छी। हम चोर नै छी। हमर घर मधेपुरा जिला अछि। एहिठाम हम टाइपिस्ट के इन्टरव्यू दै ले आएल छी।'

'चोरबाक बात पर लोक सब केँ हँसी लागए लागलै। लोक कहए लागल जे बाह, बड़ी शानदार बहन्ना बनबै ले' ई जानैए।

चोर बाजल—भाइसाहेब, हम एम? ए? पास छी। हम चोरी किऐ करब? आन ठामक बसिन्दा छी। कुकूर दबारलक तँ एम्हर भागलहुँ। घर खुलल देखलिऐ तें जान बचबै ले' चलि एलहुँ।

एक गोटे कहलकै—ई सार ओना नै मानतौ। लात के भूत कतहु बात सँ मानय? सोलहम विद्या शुरू करै जाह।

ओकर एतबा कहब रहै कि लोकक गोस्सा फूटि पड़लै। मुक्का आ फाइट सँ ओकरा मारए लागलै। चोर कहैत रहलै—भाइसाहेब, अहाँ सब गलतफहमी मे हमरा मारि रहल छी। नै मारू।

एक गोटे पुछलकै—तों एम? ए? पास छें तँ बता तँ जे भारतक परमाणु विस्फोट के क्षमता कते किलोवाट के रहै?

चोर कहलक—हँ भाइसाहेब, कहै छी। पहिने मारनाइ छोड़ू। कहै छी।

मुदा, ओकरा मारनाइ के छोड़ितय? सब केँ गोस्सा बहार करना रहै।

चोर कलहन्त करय लागल—'भाइसाहेब, हमरा पर शंका अछि तँ अहाँ हमरा पुलिस मे दए दिय'। लेकिन मारू नहि।

एक गोटे बजलाह—बस बस, पक्की बात पता चलि गेलौ। ई सार जाबिर चोर छौ। चोर-पुलिस मौसेरे भाइ!

आ अपन खिस्साक अन्त करैत कम्पाउन्डर बाजल—मारि खाइत-खाइत चोर जखन बेहोश भए गेलै सर तँ लोक ओकरा घीचि कए अंचल गार्ड पहुँचाए देलकै।'

हम चुपचाप खिस्सा सुनि रहल छलहुँ। सुनि क' डॉ? विजय केँ कहलियनि—बुझलह भाइ की! सभ्यता के अन्तकाल जखन आबै छै तँ लोकक ज्ञानेन्द्रिय यथार्थ ग्रहण करब छोड़ि दै छै। आ तै मे सब सँ पहिनें अपन काज छोड़ैए कान। अहाँ लाख चिकरैत रहू, क्यो अहाँक बाते नै सुनत!

डॉ? विजय टिपलनि—हँ। किऐक तँ सुननाइ दुखदायी लागै छै। दोसरक बात सुनबै तँ सत्ता हमर टुटि जाएत। वर्चस्व हमर चोट खाएत। क्यो अपन विश्वास अपन मान्यता केँ टुटैत नहि देखय चाहैए।

कम्पाउन्डर आओर उत्साहित भ' गेल। ओ कहए लागल—'अंचलगार्ड मे चोर केँ राखल गेलै तँ सिपाही बी? डी? ओ? साहेब केँ पुछए गेल। ओ की कहलखिन की नहि, सिपाही ओम्हर सँ घुरल तँ चोर केँ डोरी मे बान्हि देलकै। चोर जखन पानि मांगलक तँ सिपाही केँ से दै मे आधा घंटा लागलै।'

हम कम्पाउन्डर केँ पुछलिऐ—ओ जे कहलकै जे मधेपुरा जिला घर अछि, से किछु प्रूफ नै देलकै?

कम्पाउन्डर बाजल—'हँ सर, ओ कहै जे स्टेशन पर एकटा चाहक दोकान मे बैग राखने छी। ओही मे इन्टरव्यू कार्ड अछि। कलेक्ट्रेट मे इन्टरव्यू हएत। अहाँ सब पता लगाए लिय'। लेकिन ओकर बात के सुनैए?'

—ओ कुकूर ककर रहै हौ? —हम पुछलिऐ।

ओ बाजल—'से तँ हमरा नै बूझल अछि।'

—'ओ कुकूर अनिरुद्ध प्रसाद सिन्हा के रहनि। हमरा बूझल अछि'—रहस्यमय परत जकाँ डॉ? विजय बात केँ तोड़लनि आ बजलाह—'चलह। आइ साँझ मे हम सब हुनको सँ भेंट कइए ली।'

साँझ मे हमरा लोकनि अनिरुद्ध बाबूक ओहिठाम गेलहुँ। शिवपुरी मोहल्ला मे ओ अपन पैघ मकान बनबौने छथि आ अन्दर मे रमनगर फुलवारी सेहो छनि।

ए? डी? एम? भ' क' रिटायर्ड कयलनि अछि। दू टा बेटा छनि से दुनू डाक्टर-इंजीनियर अछि।

डॉ? विजय अनिरुद्ध बाबू केँ पुछलखिन—'अंकल, ओइ दिन अहाँक कुकूर'

अनिरुद्ध बाबूक कान ठाढ़ भ' गेलनि। अथाह पीड़ा आ घटाटोप भय हुनका चेहरा पर उतरि एलनि। बजलाह—'विजय, कहना मत किसी से ये बात!'

विजय बजलाह—नहि अंकल, निश्चिन्त रहू।

आ तखन ओ खिस्सा कहए लगलाह—'आने दिनका जकाँ ओहू दिन मॉर्निंग वाक लेल बहराएल छलहुँ। धारक कतबाहि धयने रोडे-रोड चलल जा रहल रही कि हमर कुकूर हाथ सँ कड़ी छोड़ाए भूकय लागल आ दौड़ि पड़ल। आगाँ-आगाँ एक ललका शर्ट बला जुबक जाइत रहै तकरा दबारए लागल। जुबक डेरा गेल। ओ पड़ाएल। हमरो किछु नहि फुरय जे की करी। हम तँ बूढ़ लोक। दौड़ि कए कुकूर केँ पकड़ि लेब, से संभव नहि। कुकूरक डरें पड़ाएल-पड़ाएल जुबक मोहल्ला मे पैसि गेल। हमहूँ कुकूरक पछोर धएने मोहल्ला ढुकलहुँ। ओतए देखै की छी जे मोहल्लाक लोक चोर-चोर कहि कए जुबक केँ पीटि रहल अछि। हम की करितिऐक—कुकूरक कड़ी धएलहुँ आ घुरि अएलहुँ।

'ई अहाँ ठीक नहि कयलहुँ अंकल'—हम मोने-मोन कहलियनि।

अनिरुद्ध बाबू चुप भ' गेलाह। तखन उदास भ' गेलाह। तखन कानए लगलाह। नोर पोछैत बजलाह—'जानै छहक विजय, बड़ भारी गलती हम कयलहुँ! हमरा जखन ओ बेचारा जुबक देखलक तँ चीन्हि गेल हमहीं कुकूरबला छी। ओ करुण आँखि सँ रक्षाक गोहार करैत हमरा कहलक—'चचा जी, अहाँ हिनका सब केँ कहियौन-हम चोर नहि छी। लेकिन हम चुपचाप घुरि एलियै। हम बहुत भारी गलती कयलहुँ।'

'गलती तँ अहाँ ओहू सँ भारी कएलहुँ जे ओहि बेचारा जानबर केँ मारि देलिऐ। देखियौ ने विजय बाबू, हम हिनका कहियनि जे कुत्ता जाति छिऐ, ओ की जानए गेलै जे ओकरा खेहारने एते पैघ घटना भए जेतै। लेकिन, ई नहि मानलखिन। दोसरे दिन भोरे जहर खुआ कए मारि देलखिन। से किऐ तँ फँसबाक डर सँ। केहन ई ए? डी? एम? रहथिन से बुझियौ'— अनिरुद्ध बाबूक पत्नी भीतर सँ आबि क' कहलखिन।

दोसर दिन हम विजय केँ कहलियनि—भाइ, मामला एकदम साफ छह। सभ्यताक अन्त एहिना होइ छै।

रखबार

हजूर, हम बड़ छोट लोक छी। अनपढ़, गमार छी। हमरा भाषण करए नै आबैए। हम की बोलू? मुदा, कलक्टर साहेब के हुकुम छनि जे हमरा भाषण दियए पड़त। जिनगी मे हम पहिला बेर भाषण दए रहल छियै सरकार। हमरा बड़ी लाज लागि रहल-ए। हाकिम-हुकुम सब बैठल छथिन। हिनका सब लग हम की बोलू?

हम अपना गाम के चैकीदार छिऐ हजूर। चैकीदार के काज छियै जे कोनो परकार के कांड के खबर थाना केँ देना छै। हम तँ बस एतने काम केलिऐ। हँ, लोक हमरा रोकै के कोसिस केलकै। लेकिन हमर मोन नै मानलक। हम तँ अपन करतब केलिऐ। अइ ले' सरकार हमरा इलाम देखखिनहें आ हमर नोकरी परमामिन्ट भए गेलै। हमर बाल-बच्चा सब सरकार के गुण गेतै। मुदा, एहन इंतजाम लगाबियौ जे सब करमचारी अपन-अपन करतब करए, अइ ले' तँ दरमाहा भेटिते छै। इलाम के कोन काज? मुदा, बढ़ियाँ-बढ़ियाँ काजुल करमचारी सब केँ परमामिन्ट कए लियौ।

कलक्टर साहेब के हुकुम भेलनिहें जे कांड के पूरा खिस्सा हम अपना मुँह सँ सुनाबियै। हमरा सरकार बोलै-बाजै ले' नै आबैए, तैयो कहै छी।

हमर जे गाम छै हजूर, ओइ मे नव आना मुसलमान बसै छै, सात आना हिन्दू मे धानुक आ दुसाध। हम अपने सरकार धुनियाँ मुसलमान छी। हमरा गाम के शेख-पैठान बड़ मातबर सब छै। बड़ जमीन-जायदाद छै आ ऊ सब पढ़लो-लिखलो छै। कुजरा, धुनियाँ, धानुक, दुसाध सब ओकरे सभक खेतमे मजूरी करै जाइए आ गुजर करैए।

जकरा पाइ रहै छै आ परभुता रहै छै वैह गुंडागर्दियो कए सकै छै हजूर। गरीब आदमी बुते से केना पार लागतै? मातबर सब के खरचरपनी सँ सौंसे गाम परेशान रहै छै सरकार। मुदा, आब ऊ जुग थोड़े रहलै? आब तँ गरीबो-गुरबा के मुँह मे बोल हुअए लागल छै।

हँ, तँ भेलै सरकार की जे फगुआ के दिन रहै। हिन्दू सब बड़ा मस्ती सँ ई परब मनबै जाइए। खूब ताड़ी पिबै जाइए। फगुआ के गाना आ जोगीड़ा गाबै जाइए।

मुसलमान सँ चैल करै जाइए, खेरहा पढ़ै जाइए आ से ककरो खराबो नै लागै छै। से ई सब ओहू दिन चलैत रहए। धनुकटोलीमे सब जुटल रहए। धनुकटोली जे छै से गामक मेनरोड पर छै। बिच्चे रोड पर सब कोइ बैठल रहए आ जोगीड़ा चलैत रहै।

की अही बीच मे की भेलै सरकार जे गामक तीनटा लफुआ मोटर साइकिल पर कतौ सँ आबैत रहए। रस्ता रहै छेकाएल। ओ गाड़ी ठाढ़ केलक आ चिकरि कए कहलकै—'रे रस्ता छोड़ै जो।

ओकर बात कोइ नै सुनलकै। गाना चलिते रहलै। ओ फेर चिकरल। मुदा सब ले धनि सन।

हँ, एकटा बात भूलि गेलौं सरकार। ऊ रमजान के महीना रहै। मुसलमान सब रोजा राखैत रहए। मुदा लफुआ सब दारू पिबैत रहए। ओहो लफुआ सब पीने रहए। से पक्का पीने रहए हजूर। ऊ सब बिगड़ि कए आगि भए गेल। बाजल—'रे, किसके औडर से होली गाता है? मालूम नै है जो ई पाकिस्तान है, पाकिस्तान। सब हमरे हुकुम से होगा।'

तैपर की भेल जे होलबैया सब गाबि-गाबि कए खेरहा पढ़ब शुरू केलक—

दिन केँ मीयाँ रोजा रखिहन
राति केँ मीयाँ गैया खैहन
से मीयाँ की पाक बनैहन
सा रा रा रा रा...

आ तब सरकार की भेलै जे लफुआ सब अपन गाड़ी एसटाट केलक आ होलबैया सब पर चढ़ाए देलकै। तीन गोटे केँ बड़ चोट लागलै। गाड़ी घोलटि गेल। होलबैया सब सेहो निशाँ मे रहबे करए। गाड़ी पकड़ि लेलक। एक गोटे कहलकै—'गाड़ी जराय दही।' एक गोटे कहलकै—'अइ सार केँ मार।'

लफुआ सब जी-जान लए कए पड़ाएल। गाम पर जा कए सब लफुआ सब एकजुट भेल। धनुकटोली केँ घेरि लेलक। सबहक हाथ मे हथियार रहै। किछ गोटे मटियातेल आ सलाइ संग केँ राखने रहए। एम्हर धानुक सब से मानै ले' तैयार नै। घोल-फचक्का मचलै। गारि-गरौज भेलै। तेकरा बाद हजूर मारि-पीटि हुअए लागलै।

ई समेचार देखि कए हमरा अपन फर्ज मोन पड़ि गेल सरकार। हम दौड़ि क' अपन अँगना गेलौं। साइकिल उठेलियै आ दौगलौं। थाना हजूर हमरा गाम सँ तीन कोस पर छै।

हम निकलल आबैत रही कि एकटा लफुआ के नजरि हमरा पर पड़ि गेलै। ऊ बूझि गेलै जे हम थाना जाए रहल छियै। ऊ हमर साइकिल छीनि लेलक। हमरा तीन-चारि धौल मारबो केलक। पकड़ने आएल आ ओही ठाम ठाढ़ कए देलक। कहलक—'सार, थाना गेलहक तँ तोरो मैयत आइए उठतऽऽ...।

हमर साइकिल लए जा कए ऊ कतौ राखि देलकै। हम छटपट करए लागलौं। हम मुसलमान छी सरकार। खुदा के बन्दा छी। जकर रोटी खेबै तेकर खिदमत मे जान देबै। हम नजरि बचा कए भागि पड़ेलियै। गाम सँ बाहर आबि कए दोस भाइ केँ सब हाल सुनेलियै। हमर दोस भाइ दुसाध छियै। दुनू गोटे मे बड़ा परेम अछि। दोस भाइ हमरा अपन साइकिल देलक। हम बाप-बाप केँ थाना पड़ैलौं। बड़ा बाबू केँ सब हाल कहलियनि। कनी कालक बाद बड़ा बाबू गाड़ी एसटाट केलखिन। साइकिल हम ओत्तै छोड़ि देलियै आ ओही गाड़ी पर बैठि रहलियै।

लेकिन एतने मे जुलुम भए गेल रहै सरकार। लफुआ सब धनुकटोली मे आगि लगा देलकै रहए। गोर पचासेक घर जड़ि चुकल रहै। तीन आदमी केँ मारि देलकै हुजूर। आगि मे झोंकि देलकै। बड़ा जुलुम भए गेलै। हमरा गाम केँ बड़का कलंक लागि गेलै। खुदा नै माफ करथिन अइ राछस सब केँ। हजूर एकरा सब केँ फाँसी पड़ना चाही। बड़ा जुल्मी अछि। अल्ला हो अल्ला...।

....हमरा लोक सब कहलकहें जे ई कांड अखबार मे छपि गेलै जे हिन्दू-मुसलमान मे दंगा भेल। जी नै सरकार। गलत बात छियै। ई तँ लफुआ आ शराबी के झगड़ा रहै। मालिक आ बोनिहार के झगड़ा रहै। जन-मजूर भए कए धानुक सब लब-लब केलकै तें ने कत्तल कए देलकै। शेख-पैठान मे हेतिहै तब ने बुझितियै। अइ बात मे की हिन्दू आ की मुसलमान? आर हम की बोलू? हजूर सरकार हमरा इलाम देलखिन। हमर नोकरी परमामिन्ट केलखिन। लेकिन सरकार, हमर गौआँ मुँहपुरुख सब हमरा जाति सँ बारि देलकै। हमरा कहै जाइए जे तूँ मुसलमान के नाम पर कलंक छें।

हम कहलियै जे हौ भैया, हौ चचा, हौ बबा, ओइ लफुआ-गुंडा सब सँ तँ समुच्चा गाम परेशान रहह। केकरो धन-सम्पत्ति सलामत नै रहह। केकरो बहु-बेटी के इज्जत सलामत नै रहह। सब दिन गाम मे हरहर-खटखट लागले रहह। ऊ सब जेल गेलह तँ नीके ने भेलह। लेकिन हजूर, माइनजन सब हमरा कहै जाइए जे ऊ सब केतनो खराब रहै, अपन मजहब, अपन जाति रहै। अपन जाति सँ सब केँ परेम रहै छै। माइनजन हमरा कहलक जे देखही, मंतरी छियै जादब। नेता छियै मिसर। सब जानै छै जे ई दुनू सार भारी भरष्ट अछि, अपकरमी अछि, दगाबाज आ बेशरम अछि। सब ई बात जानै छै। लेकिन, सौंसे मुलुकक जादब सब जादब मंतरी के पछाँ-पछाँ छै कि नै? आ बिरहामन सब मिसर नेता के पछां-पछां?

अइ बात के हमरा कोनो जवाब नै फुरल हजूर। अहाँ सब ग्यानी आदमी छियै। हमर गौआँ सब केँ ई बात समझाबियौ।

गलती भेल हेतै तँ माँफ करबै सरकार। परनाम।

कतए रसी कतए बसी

कहबी छैक जे जतय भेटय रोजी ओतहि बास खोजी। से, मदनपुर गामक गोपालदास दिल्ली मे अपन बास ताकि लेने छला।

पच्चीस बरख पहिनहि ओ दिल्ली गेल छला। हुनरबला दिमाग छलनि। जाहि समय मे गेल छला तखन राजमिस्त्री छला। आइ राजमिस्त्री सब केँ हुनर सिखबै छथि, ट्रेनिंग दै छथि। एकटा सीमेंट कम्पनी पाठशाला खोलने छै। ओहि मे मकान बनेबाक लेल नव-नव भाँज सिखाएल जाइ छै। ओहि पाठशाला मे एकटा गुरु छथि गोपालदास।

गोपालदास केँ कम्पनी सब सुविधा देने छनि। कोलनी मे क्वाटर छै। मासे-मास दरमाहा भेटै छै। खूब शान सँ रहै छथि। घर मे टी ? वी ? छनि। फ्रीज छनि, वाशिंग मशीन छनि। ओ शान सँ रहै छथि।

गोपालदास पढ़ल-लिखल नामेक। बस पचमाँ पास छथि। जे छनि से हुनकर हुनर! हुनरेक बल पर मौज करै छथि।

बच्चा मे बड़ नटखट रहथि। कहियो मोन लगा क' नहि पढ़लथि। बहसल छौंड़ा सब सँ दोस्ती रहनि। घर पर बहुत उपराग आबनि। बाप रहथिन गरीब, कमजोर लोक। ककरा-ककरा सँ झंझटि करितथि ? बात बात पर बेटा केँ सात चोरिक मारि मारथिन। गामक लोक सेहो मारनि। लेकिन तकर कोनो असरि नहि। एहिना मारि खाइत-खाइत गोपाल दास जवान भेला। बाप बिआहो करा देलखिन जे सुधरत, मुदा ओ नहि सुधरला। एहिना एकबेर झंझटि-फसाद क' गाम सँ भागि गेला। सीधे दिल्ली पहुँचलाह।

जे बच्चा नटखट बड़ से तेजो बड़। से गुण गोपालदास मे देखार पड़ै छल। जहिया दिल्ली गेल छला, दिमाग छोड़ि क' हुनका लग मे किछु नहि छलनि। आइ सब किछु छनि। हजार-बजार के मालिक छथि।

गोपालदास केँ चारिटा धियापुता। तीन बेटी एक बेटा। चारूक लालन-पालन खूब स'ख सँ करै छथि।

गोपालदासक कोलनी मे सौंसे भारत बसल छल। किओ बंगालक छला तँ किओ पंजाबक। किओ उड़िया रहथि तँ किओ मद्रासी। सभक अपन अलग-अलग रहन-सहन रहनि। अलग-अलग भाषा रहनि। सब केँ मिला क' दिल्ली बनल छल। मुदा दिल्लीक अपन अलगे रंग रहै। झटपट आबू झटपट पाबू। गोपालदास दिल्लीक रंग मे रंगि गेला।

धियापुताक पढ़ौनीक ठीकम-ठीक व्यवस्था केने रहथि। मुदा, कनियाँ रहथिन मुरुख-चपाट। सदतिकाल टी ? भी ? खोलि क' बैसल रहथि। तखन बच्चे सब किएक पढ़ितय ? टी ? भी ? मे चमकदार दुनियाँ रहै। तरह-तरह के फैशन रहै। लटका-झटका रहै। से सब गोपालदासक घर मे नहुँ-नहुँ ढुकैत गेल।

गोपालदास सब सँ पहिने छोड़लनि अपन भाषा। मैथिली केँ ओ ओछ बुझथि। गामक लोक केँ देहाती भुच्च बुझथि। ओ कहथि जे अपना देस-कोसक लोक तँ नढ़िया-खढ़िया होइए।

एकबेर हुनकर दोस दिल्ली एलखिन। हुनका घरक ई हिसाब-किताब देखि क' ओ गोपाल केँ कहलखिन—यौ दोस, एना मे तँ अहाँ कतहु के नहि रहब। अपना देसक रीत-रेबाज किओ एना क' कए छोड़ए ? मद्रासी केँ देखियौ, बंगाली केँ देखियौ...

मुदा, गोपालदास ई बात नहि मानै छला। ओ बजला—जमाना आइ कतय सँ कतय चलि गेलै दोस, आ, अहाँ ठामक ठामे छी। कतहु के नहि रहब तँ दिल्ली के तँ रहबे करब ने!

गाम पर गोपालदासक बाप रहथिन। छोट भाइ रहथिन। ओ सब खेती करै छला। बचल समय मे मजदूरी करै छला। कहियो-काल गोपालदास हुनका सभक मदति करथिन। मुदा, गाम ओ नहि जाथि। गाम सँ हुनका कोनो अपनैयत नहि रहि गेल रहनि। गाम घर केँ ओ पिछड़ल बुझथि।

गाम मे, हुनका घर मे धरमराजक सेवा रहनि। ओम्हर दिल्ली मे ओ एकटा नबका गुरुदेवक चेला भ' गेल रहथि। हुनके मंतर पर चलथि। गाम मे भगैत छलै, बिदापत नाच छलै, होरी गीत आ चैतावर छलै। दिल्ली मे तँ बारहो मास, हो-हो, हू-हू छलै। धूम धड़ाका छलै। गाम मे लोक अपना बोली मे झगड़ो करय तँ लागय जेना विचार करैए। आ दिल्ली मे बेकसूरो लोक कतय फँसि जायत कोनो ठीक नहि छल। आ सैह दिल्ली गोपालदासक मोन केँ मोहित क' लेने रहै।

गोपालदासक चारू बच्चाक जन्म दिल्लीए मे भेल रहनि। ओकरा सभक खून मे दिल्ली मिलि गेल रहै। ओ सब ने अपन देस-कोस चिन्है छल, ने अपन बोली-बानी बुझै छल। गाम आबय तँ दिल्ली घुरै लेल आफन तोड़य। कनियाँ सेहो

दिल्लिएवाली बनि गेल छली।

गोपालदास केँ तँ कोनो कमी छलनि नै। सौखीनदार सेहो रहथि। जे चाहथि से खाइत-पीबथि। घी-मलीदा रे, मुर्गा मसल्लम रे। धियापुता सभक खाएल-पीअल देह जल्दिए फूटि क' जवान भ' गेलै।

थोड़बे दिन मे गोपालदासक दू दू टा बेटी बियाह करै जोग भ' गेलै। जेठकी बेटी रानी के बियाह तँ बहुत जरूरी भ' गेलै। एखन धरि गोपाल केँ एहि बारे मे सोचबाक फुरसतिये नहि छलनि। आब ई समस्या आएल तँ ओ अकबका गेला। हीत-मीत लग ई समस्या राखलनि। सब केँ कहलखिन जे भाइ, नीक लड़का ताकि दैह।

एखन धरि गोपाल सोचै छला जे दोसर के देस-कोस नीक, अप्पन देस-कोस खराब। आब हुनका बुझेलनि जे रे भाइ पंजाब दिस बेटी केँ देबै तँ सेट नहि करतै। मद्रास देबै, सेहो नहि हेतै। लोक सब अपना-अपनी मे रिश्ता जोड़ए चाहैए। बिना आगू-पाछू सोचने जँ कोनो दिल्लीबला सँ सम्बन्ध करै छी तँ सेहो नहि ठीक। एक सँ एक फकैत-दलाल दुनियाँ मे भरल छै। बेटी चैन सँ रहत की नहि तकरो ठेकान नहि रहतै। हीत-मीत सेहो ओकरा सलाह दै जे बियाह-शादी तँ अपने देस-कोस मे ठीक। जेठकी बेटी रानी पढ़लो-लिखल खूब नहि रहै। सुन्दरो तेहेन नहि रहै। प्यार-मोहब्बत सेहो ककरो सँ नहि रहै। अछता-पछता क' गोपालदास गाम खबरि केलनि। हुनकर बाप, दोस आ सर-कुटुम लड़का ताकै मे लगला। एम्हर गोपालदास दिल्ली मे सेहो लड़काक खोज करैत रहला। समस्या ई रहै जे ठीक-ठाक लड़का जँ भेटय तँ कहै जे हमरा बाबू सँ गप्प करू। जे लड़का अपना पर रहय से गोपालदास केँ ठीके नहि लागै।

पूरा परिवारक संग गोपालदास गाम एलाह। घर-दुआरिक मरम्मति हुअए लागल। साफ-सफाइ हुअए लागल। घर-आंगन के चुहचुही बढ़ि गेलै। लड़काबला सब केँ समाद देल गेल। चारू गामक कुटुम बेरा-बेरी घरदेखिया लेल आएल।

सब सँ पहिने आएल छल जगतपुरक कुटुम। पाँच गोटे सँ छल। खान-पीन भेलै। गप-सप भेलै। राति मे ओ सब टिकलाह। भोर मे घरदेखियाक बीध भेलै।

एक गोटे रानी केँ पुछलखिन—की नाम छी?

रानी कहलकै—रानी कुमारी।

घरदेखिया पुछलक—पिताजीक की नाम छी?

रानी बाजल—श्री गोपाल दास।

एक गोटे पुछलखिन—'दाइ, अहाँ केँ कोन-कोन लूरि अछि?'

रानी बाजल—ये लूरि क्या होता है? जवाब पेबाक लेल ओ पुछैबलाक आँखि

मे आँखि भिड़ा देलकै।

पुछनिहार अकबका गेल! दोसर गोटे पुछलकै—दाइ अहाँ केँ मैथिली बाजए नहि आबैए? रानी जवाब देलकै—नहीं।

सब कियो गुम्म भ' गेल। अछता-पछता क' फेर एक गोटे पुछलखिन—दाइ, कहियो अपना हाथ सँ गोसाँइ निपलियैए?

रानी फेर नहि बुझलकै। ओ पुछलक—ये गोसाँइ क्या होता है?

घरदेखिया सब कोनो जवाब नहि देलक। ओ सब गोपाल दास के कहलकनि—हम सब जाइ छी। काल्हि सँ परसू धरि अहाँ केँ खबरि भेट जाएत।

दोसरे दिन जगतपुर सँ समाद एलै जे अहाँक ओतए कुटमैती नहि करब। हमरा सब केँ गाम-घर अछि। रीत-रेबाज अछि। बोली-बानी अछि। देवता-पितर अछि। अहाँक बेटी बुते हमर घर चलैबला नहि अछि।

गोपाल दास केँ बड़ तामस उठलनि। अपने-अपने ओ बजला—इह देहाती भुच्च सभ नहितन!

एकर बाद परसौनीक कुटुम एलै। ओहो कुटमैती कबूल नहि केलक। तकर बाद सोहा गामक कुटुम एलै। ओहो कथा करब नहि गछलक। पिपराबला कुटुम सेहो सैह केलक।

गाम-गाम मे बात पसरि गेलै। आब, आर कतहु के कुटुम आएब गछबे नहि करय।

गोपाल केँ दिल्ली सँ एना मास दिन सँ ऊपर भ' गेल रहै। कतहु कुटमैती ठीक नहि भ' सकल। ओकर मोन मे बहुत चिन्ता रहै। दिमागे नहि काज करै जे आब की करबै? गोपालक घरवाली सेहो चिन्तित रहय। दिल्ली घुरब सेहो आब जरूरी छलै।

गामक लोक केँ दुख तँ जरूर रहै जे गोपालक बेटीक बियाह भडठि गेलै, मुदा, एकर दोखी लोक गोपाले केँ बुझैत छल।

एकदिन बुढ़ा, गोपालक बाप, दुआरि पर अपन अड़ोसिया-पड़ोसिया बुढ़ा सब संग गप करैत रहथि। ओहिठाम गोपालक दोस सेहो रहै। एही समस्या पर गप होइत रहै।

पड़ोसिया बुढ़ा कहलखिन—हौ जुगो भाइ, अपना घर केँ तँ तूँ अपने चैपट केलहें। अइ मे ककरा की कहबहक? ककरा दोख देबहक?

गोपालक बाप बजला—हम की केलियैहें हौ? हमर तँ वंश नाश केलक ई अभगला बेटा! ई बुझितियै तँ सोइरी-घर मे नोन चटा क' मारि दितियै। सब दिन कहियै जे रौ बहिं, गाम-घर केँ पकड़ि क' रह। लेकिन हाय रे मौज की हाय रे मौज!

हम आब कतेक दिन जीयब? लेकिन एहि करमनाशी केँ जे दशा हेतनि से देखत नगरक लोक!

संजोगक बात! आंगन सँ गोपाल दास सबटा बात सुनैत रहथि। ओ तँ अपने चिन्तित आ दुखी रहथि। हुनका तँ बोल-भरोस के खगता रहनि। बापक ई बात हुनका सहाज नहि भेलनि। तामस सँ अगिया-बेताल भेल ओ बाप पर छुटला। बाप केँ गरियाबैत दुआरि पर एला आ बापक गट्टा पकड़ि लेलनि। सौंसे घर-दुआरि मे हाहाकार मचि गेल।

गोपालक दोस भरि पाँज क' गोपाल केँ पकड़लक। बड़ी जोर सँ झमारलक। गट्टा छोड़ेलक आ आँखि मे आँखि मिलबैत बाजल—दोस!!! होश करू होश!! गलती अपन आ सजाय देबाल कें? जहिया ई सब बात कहैत रही तहिया कतेक खराब लागैत रहय!!

आंगनक सब लोक दुआरि पर आबि गेल रहय। ओही मे रानी सेहो छल। ओकरा नहि रहल गेलै। ओ सहटि क' बाप लग गेल आ बाजल—बाबा ठीक कह रहे हैं डैडी! और सुन लीजिए, अब मैं गाँव में ही रहूँगी। अब मैं कहीं नहीं जानेवाली!!

अपन अपन ठाम

दशमीक छुट्टी मे मनोज गाम आएल रहए। राति मे तँ ओ पहुँचले रहय। भोरे सूति क' उठल तँ घर-दुआरि बाड़ी-झाड़ीक मुऐना करए बहराएल। बाड़ी मे कका गेन्दा आ तिरा-मिराक फूल लगेने रहथिन। तकरा जड़ि मे मारिते रास गंदगी जमा रहै। सूखल-तूबल डारि-पात फूलक गाछ मे लटकल रहै। खराब लागै। ओ खुरपी निकालि आनलक आ फूलक गाछ के चैबगली सफाइ करए लागल कि तखनहि हहाएल-फुहाएल कका आबि क' ठाढ़ भए गेलखिन।

'चलहक चलहक, कनी दुआरि पर चलहक'—कका बजलाह। कका बहुत घबराएल रहथिन। कोनो अनहोनी घटित भ' गेल हो, तेहना सन। मनोज अंदाज नहि पाबि सकल जे बात की भ' सकै छै। कका सँ पुछलक—की? ककरो किछु भेलै की? ओकरो अबाज मे घबराहटि भरि गेल रहै।

कका ओही घबराहटि मे बजलाह—'नै नै। ककरो किछु नै भेलै। वकील साहब आएल छथिन।'

मनोज बुझलक नै जे के वकील साहेब आएल छथिन, जकरा दुआरे कका एते घबराएल छथि। गाम मे चारि टा वकील रहथि। एक गोटे सँ तँ मनोजक दोस्तियो रहनि। मुदा हुनका एने सँ कका घबराइतथि किए? तैयो मनोज पुछलक—'सन्तू जी आएल छथि की?'

'नै नै। सन्तू जी नहि। पलिवार बला वकील साहेब आएल छथि।' कका बजलाह।

'ओ ऽ ऽ ऽ...' लम्बा घिचैत मनोज 'ओ' बाजल।

तखन, ओकरा हँसी लागि गेलै। तुरन्ते ओकरा चेत भेलै जे एहि हँसी सँ कका केँ दुख भ' सकै छनि। ओ मात्र मुस्किया क' रहि गेल।

पलिवार बला वकील साहेब गामक नामी बूड़ि रहथि। लोक हुनका कबदा क' आनन्द पाबए। मुदा सब लोक नहि, मात्र गामक बेहूदा नौजवान सब। वकील साहेब बाट ध' क' जाइत रहितथि आ जँ गामक लोफर सभक ध्यान हुनका पर चलि

गेलनि तँ पराभव बुझू। छौंड़ा सब हुनका ध' लैनि—'यौ वकील साहेब, आब तँ अहाँ मरि जायब। लक्षण देखार पड़ए लागल अछि। जखन अहाँ चलै छी तँ टाँग आगू-पाछू होइए। आब अहाँक रच्छ नहि।' वकील साहेब केँ जमराजोक ओतेक डर नहि होइत हेतनि जते लोफर सभक होइनि। हारल कुकूर जकाँ ओ अपन दाँत निपोड़ि देथि—'हँ अओ! अहाँ उचित कहैत छी। देखल ने जाओ, भोजन कएलाक पछाति हमर भूखो मरि जाइत अछि। लक्षण तँ हमरो गंभीरे बुझना जा रहल अछि। हें हें हें...'

मुदा, छौंड़ा सब हुनकर एहि दाँत निपोड़ी सँ नहि पघिलय। एक गोटे हुनका आँखि सँ चश्मा घीचि लैनि। ओ बड़ मोट पावरबला चश्मा पहिरै छलाह। बिनु चश्माक हुनका सूझनि नहि। ओ बाट पर टपर-टोइया देथि। छौंड़ा सब हुनकर ढेका खोलि क' पड़ा जाय। बहुतो लोक जमा भ' जाथि आ हुनकर हालति देखि क' मुस्कियाबथि।

से वकील साहेब केँ लुच्चा-लोफरक बड़ डर होइत रहनि। मुदा, भला आदमी पर हुकूमत करबाक सतासी लाख भांज हुनका आबैत रहनि। गामक दलित लोक तँ हुनका डरें पड़ाएल घुरए। ओ एहि गामक मूल बशिंदाक वंशधर छला। हरसिंहदेवक समय सँ आइ धरि हुनकर खन्दान एही गाम मे जमल रहि गेलनि, एकरा ओ बड़ भारी बात मानै छलाह। जे ब्राह्मण लोकनि बाद मे उपटि जाइ गेलखिन, तिनका ओ बहुत गरियाबथि। मूल वासी हेबाक कारणें एहि गाम केँ ओ अपन जागीर बूझथि। पहिने जमींदारो कहाँदन यैह लोकनि छलाह। मुगल बादशाह 'चैधरी'क खिताब देने रहनि। विद्या, धन आ लाठी—तीनू मे ओ अपना खन्दान केँ विश्वविजयी करार देथि। मुदा, हुनकर विश्व गामे एते टाक छलनि, से बुझले बात छल।

मनोज कका सँ पुछलक—'कोम्हर एलाहें वकील साहब?'

कका कहलखिन—'बेहरी ओसूलए।'

—कथी के बेहरी?

—भगवती पूजा के।

मनोज केँ बहुत आश्चर्य भेलै। ओ बाजल—भगवती-पूजा के बेहरी? अपना सब सँ? अपना सब सँ तँ नै कहियो लेल जाइत रहै?'

—'नै। पहिने तँ नै कहियो लेल जाइत रहै। लेकिन, अइ बेर एलाहें।' कका कहलखिन।

बहुत पुरान समय सँ ई परम्परा रहै जे प्रत्येक वर्ष महाष्टमीक राति भगवतीक मंदिर मे निशा-पूजा होइक। लोक एकरा निशां पूजा कहै। भगवती केँ बोतलक बोतल दारू चढ़नि। दारूक चखना सब चढ़नि। छागर, पाठी, भेंड़ी, मुरगा, कबूतर, माछ,

अण्डा—जतेक जे सामिष भोज्य अछि, सभक तीमन चढ़नि। तांत्रिक विधि सँ भगवतीक पूजा होइ, से लोक कहै छल। दोसर दिन, महानवमीक भोर मे, भगवतीक समक्ष छागर, भेड़ी, आ पाड़ाक बलिदान होइ। ओइ दिन हजारक संख्या मे छागर कटै आ दू-दू दर्जन पाड़ा कटै। दूर-दूर के लोक छागर आ पाड़ाक कबुला करै छल। नवमी दिन घमसान पड़ि जाइ। नम्बर लगाबै लेल मारा-मारी होइ। मुदा, सनातन नियम छल जे सब सँ पहिने पलिबार दिस सँ पूजा हेतै। पहिने पलिबारेक छागर आ पाड़ा कटतै। लोक एकरा गमैया पाड़ा कहै छल।

एहि सम्पूर्ण आयोजन मे बहुत खर्च पड़ै छल आ तकरा पलिबारक बाबू लोकनि मिलि क' वहन करै छलाह। बाद मे, गामक किछु आनो आन ब्राह्मण सब सँ बेहरी लेल जाय लागल। मुदा, एहि बेर तँ अचम्भा भेल। वकील साहेब दलितक ओतए बेहरी माँगए जुमि गेल छथि।

'समय परिवर्त्तनशील होइ छै'—मोनेमोन मनोज बाजल आ बस, चुटकी भरि मुस्कियाएल। ओ दुआरि पर आएल। दुआरि परहक चैकी पर वकील साहेब ओलड़ि क' बैसल छलाह। हुनका सँगें पलिबारक दू टा नवजुबक सेहो रहए। वकील साहब ओहि दुनू नवजुबक कें, जे कि हुनकर भातिजे लागैत रहल हेतनि, सामाजिक पाठ पढ़ेबा मे व्यस्त छलाह। वकील साहेब-सन लोक अपन एहि कुलशीलवान जीवन मे कुल्लम तिनिये टा काज क' सकैत छला—भोजन, विश्राम आ गप। एखन ओ गप करै छलाह। गपक विषय ई जे कोना एक बेर एकटा अनठीया लोक एहि गामक सम्बन्ध मे अनचित बात बाजै छल। वकील साहेब सुनि लेलनि आ ओहि अनठीया केँ बहुत बेइज्जत केलखिन।

मनोज कहलकै—'परनाम वकील साहेब।' से कहैत काल मनोज 'पर' कहि क' 'नाम' मे खूब लम्बा रेघान देलकै। तकर मतलब ई भ' सकै छल जे शब्द पर नहि जाउ, भाव केँ पकड़ू, आब अहाँक आदर नहि कएल जाएत, आब अहाँ केँ लोक प्रणाम नहि करत।

मुदा वकील साहेब बहुत निसां मे छलाह। कथी ले' ओ परनामक उतारा मे आशीर्वाद देबाक लेल आ कि किछु सोचबाके लेल तैयार हेताह? ओ 'ही ही' क' क' हँसए लगलाह।

हुनक एहि पलिबारवादी हँसी केँ सुनि क' मनोज सोचए लागल जे लोक हिनका वकील साहेब किए कहै छनि? वकालत तँ कहियो केलनि नहि। एल-एल? बी? की ई केने हेताह?

वकील साहेब बजलाह—'की अओ विद्वान! बेहरी दियौ।'

जाहि टोन मे ओ बाजल रहथि, 'की अओ विद्वान' तकर स्पष्ट ध्वनि रहै—

'की रे राड़!' लोक अनेरे कहैए जे मैथिली बहुत मधुर भाषा छिऐक! एहि मे तँ जते काट आ जहर छै, कथी ले कतहु आन ठाम हेतै। मुदा, मनोज दोसर बात सोचलक। ई वकील साहेब कखनो मनुक्खक भाखा नहि बजै छथि। भ' जेतै', द' जेतै बजता। सौंसे गाम मे हिनकर भाखा बेछप।'यौ विद्वान' नहि बजताह, 'अओ विद्वान' बजताह। पैघ लोक मनुक्खक भाखा किए ने बाजि पाबैए? के ओकरा रोकै छै?

मनोज प्रश्न केलकनि—'कथीक बेहरी देब?'

वकील साहेब तरंगि उठलाह—'एना किऐक गप करैत छी अओ! हम तँ पहिनहि बालदेव कें कहि देने छिऐक जे बेहरी लागतह।'

मनोज जँ एहि ठाम नहि रहितए तँ वकील साहेब ओकर सत्तर बर्खक बाप कें 'बलदेबा' कहितथि। मनोज कें मोने-मोन हँसी लागलै—एही ठाँ ने कहल जाइ छै जे जोग बेटा अपन बापक प्रतिष्ठा बढ़बैत अछि। मुदा ओ सोचलक—देखू, हिनकर गर्व!

ओ बाजल—'एकटा बात पूछी वकील साहेब?'

वकील साहेब चुप रहलाह। मनोज दिस ताकलखिन।

मनोज प्रश्न केलक—'अहाँ वकील साहेब छी आ कि खुद आई? पी? सी? छी?'

—'अहाँक कहबाक की तात्पर्य अछि? हम बुझलहुँ नहि।' —वकील साहेब बजलाह।

—'बुझबै नै किए? अहाँ खूब बुझबै। आ जँ बुझैए नै चाहबै तँ से अहाँ जानी।'

मनोजक स्वर मे थोड़े उद्दण्डताक भान वकील साहेब कें भेलनि। ओ साकांक्ष भ' गेलाह। अपन चश्मा सम्हारए लगलाह।

मनोज बाजल—हम पुछै छी जे कथीक बेहरी तँ अहाँ कहै छी जे पहिनहि कहि देने रहियह, आब तँ देबहि पड़तह। से नहि, हम पुछै छी जे जे सब बात अहाँ पहिनहि कहि देलिऐक से सब कानून भए गेलै की? आब लोक कें ओकरे हिसाबें चलए पड़तै?

वकील साहेब चुप भ' गेलाह। हुनका संगक एकटा नौजवान मनोज कें पुछलकै—'अहाँ मास्सैब, चन्दा नै दै ले' चाहै छिऐ की?'

मनोज बाजल—चन्दा हम देबै कि नै देबै, से तँ आगूक बात भेलै। अहाँ हमरा पहिने बताएब ने यौ जे कथीक चन्दा छिऐ, की बात छै आ कि सीधे फरमान जारी कए देबै?

नौजवानो चुप भ' गेल।

फेर मनोजे बाजल—'बेहरी माँगनाइ कतहु पलिबारक लोक बुते हुअए वकील साहेब? ई सामाजिक काज छिए ने! एहि लेल तँ पहिने व्यक्ति कें समाज बनए पड़तै। खैर कहू, की कहैत रहिऐ?'

वकील साहेब फेरो ताल ठोकि क' ठाढ़ भ' गेलाह—'हम अहाँक दरबज्जा पर आएल छी, तकर अहाँ कें लाज नहि? पलिबार कें अहाँ नहि चिन्हैत छिऐक?'

मनोज अपन कपार पीटि लेलक। वकील साहेब पर ओकरा दया भेलै। मुदा एहि दयोक कोन बेगरता? —ओ सोचलक। बाजल—'हम किऐ ने पलिबार कें चिन्हबै वकील साहेब? मुदा, जहाँधरि लाज लागैक सबाल छै, लाज तँ अहीं कें लागना चाही ने यौ जे अहाँ कें हमरा दरबज्जा पर आबए पड़ल। हम तँ अहाँ कें बजेलौं नै! पहिने अहाँ सब पलिवार दिस सँ पूजाक इन्तिजाम करै जाइत रही। तै सँ नहि भेल तँ आनोआन ब्राह्मण सब सँ बेहरी लेलियै। आब अहाँ कें राड़-रोहियाक दरबज्जा चढ़ए पड़ल—ई तँ अहींक लेल लाजक बात भेल।'

पलिवारक एक बुझनुक नौजवान बाजल—'नै। से बात नै छै मास्सैब। हमरा सभक सिद्धान्त अछि जे सब जातिक लोक समान अछि। सब क्यो हमर गौंए थिक। तें, सभक सहयोग लेल जाय।' मनोज बाजल—'वाह! ई बात जे अहाँ बाजलौं से एकदम ठीक बाजलौं बौआ! लेकिन एकटा बात कहू। अहाँक तँ ई सिद्धान्त अछि, ठीक छै। मुदा, हमरो कोनो सिद्धान्त हुअए, से अहाँ मानब की नहि?'

नौजबान मूड़ी हिलबए लागल—'हँ। हँ। किए नहि? सभक अपन-अपन सिद्धान्त होइ छै।'

मनोज कहलकै—'अहाँ कें बूझल अछि बाबू? आठ-दस साल पहिने हम सब भगवती स्थान मे धरना पर बैसल रही जे बलिप्रथा बन्द होना चाही। हमरा सभक नायक रहथि—विवेकानन्द झा। बूझल अछि जे अहाँक पलिवार की केने रहए? हमरे सब कें पकड़ि क' महिखा मे बान्हए लागल जे एकरे सभक बलि देबै। मोश्किल सँ हमरा सभक जान बचल छल। मोन अछि?'

नौजवान चुप भ' गेल।

'अहाँ सभक कोनो सिद्धान्त अछि तँ हमरो कोनो सिद्धान्त अछि'—मनोज बाजल—'देखियौ! एकटा दोसरो देवता छथि—कारू बाबा। नवमिये दिन हुनको पूजा होइ छनि। जै दिन कारू-थान मे दूधक नदी बहैत रहै छै, तही दिन अहाँक मन्दिर मे खूनक धार बहैए। सिद्धान्तक जँ बात करै छी तँ ईहो ने सोचबै जे एना किऐ भए रहल छै? के एना करेलक आ के आइ करा रहल अछि? एहि मंदिर मे तँ भगवान बुद्धोक मूर्त्ति छनि ने यौ? बुद्धक आगू मे खूनक धार? छि: छि:...

मनोज उठि क' ठाढ़ भ' गेल आ अपन आँखि मे पूरा कठोरता भरि क' बाजल—'बेहरी तँ हम नै देब वकील साहेब!'

वकीलो साहेब उठि क' ठाढ़ भ' गेलाह। बजलाह—'अहाँ केँ भगवतियोक डर नहि?'

मनोज आरो कठोर भ' गेल। बाजल—'नहि। हमरा ककरो डर नहि।'

वकील साहेब एहि बात पर की बाजितथि? ओ चुपचाप विदा भ' गेलाह।

मनोज घुरि क' आंगन गेल। ओकरा हाथ मे माटि लागल रहैक—थोड़ेक गील माटि, थोड़ेक सुखल माटि। ओ अपन हाथ केँ निहारलक। —यैह माटि हमरा आ वकील साहेब केँ अलग-अलग करैत अछि—ओ सोचलक। एही माटिक बनल छथि मुदा विवेका बाबू—ओ फेर सोचलक।

विवेका बाबू मोन पड़लखिन तँ मनोजक दिमाग मे एक आर चिक्कन विचार नाचि गेलै। एक समय छल जखन ओ एहि रक्तबीज-संस्कृतिक विरुद्ध घाड़ तानने छलाह। तहिया मुदा, रक्तबीज लोकनि बहुत मजगूत रहथि। मनोज केँ मोन पड़लै—ई पलिवारबला सब विवेका बाबू केँ हाथें-पाथें पकड़ि क' लए गेलै आ महिखा मे बान्हि देलकै! बाप रे बाप! जुलुम बात! मुदा,—मनोज सोचलक—एहि आठ-दस बरख मे बहुत किछु बदलि गेलैए। रक्तबीज लोकनि आब पतरा गेल छथि। आब हुअए संघर्ष तँ मजा एतै! आब तँ बुझू, जीत पक्का! नै?

मनोज अपना केँ असीम जोश सँ भरल अनुभव केलक। ओ कल पर आबि क' हाथ-पएर धोलक आ कान्ह पर गमछा ल' क' सोझे पुबारि टोल दिस विदा भ' गेल। ओ विवेका बाबूक ओतए जाएत। हुनका जा क' कहतनि जे सर, आब शुरू करू संघर्ष। सही समय आब आएल अछि सर!'

मुदा, विवेका बाबूक ओतए पहुँचला पर ओकरा पता चललै जे ओ आंगन मे नहि छथि।

—सर कतए गेल छथि? —विवेका बाबूक कनिमा केँ ओ पुछलक।

—चमरटोली दिस गेल छथि!

—'कखन गेलाह?' मनोज जानए चाहलक जे ओ कोन काज सँ गेल छथि आ कखन धरि घुरताह!

विवेका बाबूक कनिमा कहलखिन—'देखियौ ने, नवमी दिन छागर कबुला

बलर्ब

संख्या मे कम कथा लिखलाक बादो मैथिली कथासाहित्य मे तारानंद वियोगीक पैघ आ जरूरी स्थान मानल गेल अछि। प्रतिष्ठित कथा-संकलन सब मे हुनकर कथा संकलित भेल छनि आ आन-आन भाषा मे अनूदित सेहो।

समाजक हाशिया परक लोक के कथा, ओकर संपूर्ण मानवीय गरिमाक संग, मैथिली मे कम लिखल गेल अछि। वियोगी जीक प्रायः सबटा कथा एही निम्नवर्ग, छोट जाति छोट वर्णक विषय मे लिखल गेल अछि। दोसर अछि जे सब दिन ओ निर्माणाधीन सामाजिक यथार्थ केँ अपन कथाक विषय बनौलनि। एहि गुणक कारण हुनकर कथाक बेस मान अछि, मुदा एही कारणें विवादो अक्सरहां होइत रहल अछि। हुनकर सदा मान्यता रहलनि जे केवल मैथिली भाषा मे लिखल रहबाक कारण कोनो कथा मैथिली कथा नहि भ' सकैत अछि। तें, हुनकर कथा सब मे मिथिलाक जनजीवन के धकधक करैत महसूस कयल जा सकैए। तहिना, हुनकर कथा सब मे कथादेश आ कथासमय केँ साफ-साफ चित्रित भेल देखल जा सकैत अछि। ओ अपना समयक हरेक हलचल केँ नोटिस करैत चलैत छथि। तहिना, हुनकर कथाभाषा सेहो बेछप आ विलक्षण छनि। अपन देस-समाज केँ देखबाक आलोचनात्मक विवेक सब दिन वियोगी जी मे जाग्रत रहलनि, तें हुनकर कथाकला अपन उत्कर्ष धरि पहुंचल, जाहि लेल हुनकर कथा सब केँ बेस महत्व देल जाइत रहल अछि।

हुनक कथालेखनक मादे पं. गोविन्द झा लिखने छथि— 'ललित-राजकमलक समय आ तारानंद वियोगीक समय मे महान अंतर अछि। पहिल विद्रूपता आ विसंगतिक समय छल तं दोसर विकट संकटक समय। एहि संकटकाल मे मुख्य प्रश्न भ' गेल अछि अस्तित्व-रक्षाक।ललितक कालक जे स्थिति-रेखा छल, वियोगी जीक कथा-यात्रा तकर अतिक्रमण क' गेल अछि। मैथिली कथाक एक जीवन्त परंपरा हिनका एहि कथा-यात्रा मे संग द% रहल छनि आ तकर बोध सं उद्भासित छथि।परंपरा-बोध आ अपन जीवन-अनुभव दुनू मिलि हिनका आबि तुलाएल संकट सं लड़बाक ऊर्जा दैत अछि। हमरा लेल ई बड़ प्रसन्नताक बात थिक जे एहि विकट कालक गंदगी केँ अपन कथा सभ मे गीजैत-मथैत रहितहु वियोगी जी ओहि गंदगी सं कतहु लिप्त नहि भेलाह अछि, ठीक ओहिना जेना पानि मे रहितहु पुरैनिक पात भीजैत नहि अछि। विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीरा...। विकृत परिवेशहु मे जकर चित्त विकृत नहि हो, से धीर(स्थिर धी) थिक।'

मैथिली मे तारानंद वियोगीक पहिल कथा 1979 मे 'मिथिलामिहिर' मे प्रकाशित भेलनि आ तहिये सं आन विधाक संग-संग कथा-लेखन मे सेहो रुचि रहलनि अछि। दूटा कथा/लघुकथासंग्रह 'अतिक्रमण' तथा 'शिलालेख' प्रकाशित छनि जे बहुचर्चित, बहुप्रशंसित रहल अछि।

कविता-पुस्तक 'अपन युद्धक साक्ष्य', 'हस्तक्षेप', 'प्रलय रहस्य', 'दुनियां घर मेहमान' आ 'साखी'क अतिरिक्त अनूदित भ' क' हिन्दी आ अंग्रेजी मे तीनटा संग्रह आएल छनि—'बुद्ध का दुख और मेरा', 'जैसे अंधेरे मे चांद' आ 'बिटवीन द टू डैम्स'।

आलोचनाक पुस्तक 'कर्मधारय' आ 'बहुवचन'क अतिरिक्त आनो अनेक पुस्तक प्रकाशित छनि जे अपन दृष्टि आ तेवर मे खास मानल गेल अछि। कथालेखन आ बालसाहित्यक क्षेत्र मे कयल हुनकर काज सब उल्लेखनीय मानल गेल अछि। यात्री नागार्जुनक वृहदाकार जीवनी 'युगों का यात्री'क लेल ओ देश भरि मे चर्चित आ प्रशंसित भेला अछि। एहने एक पुस्तक राजकमल चौधरी पर 'जीवन क्या जिया' आ यात्री नागार्जुन पर 'तुमि चिर सारथि' छनि।

महिषी(सहरसा) मे जन्म। पिता बद्री महतो, माता बदामी देवी। शिक्षा एम. ए., पी-एच.डी। आरंभ मे बहुत वर्ष केन्द्रीय विद्यालय संगठन मे अध्यापक रहला, बाद मे बिहार प्रशासनिक सेवा मे आबि गेला। सांस्कृतिक संगठन आ क्रियाकलाप मे सब दिन रुचि रहलनि, तहिना क्षेत्रीय इतिहासक अन्वेषण आ अभिलेखन मे। एखन मैथिली कविताक इतिहास पर सर्वथा नव ढंग सं चिंतन-मनन आ लेखन क' रहल छथि।

संपर्क— tara.viyogi@gmail.com